PRAISED FOREVER BE JESUS & MARY

ESTD. 1848

Vol. 16/22

JIJIVISHA

2021-22

ST. JOSEPH'S GIRLS DEGREE COLLEGE, SARDHANA

Feast of Claudine

प्राचार्या का संदेश

प्रिय छात्राओं,

सत्र 2021–2022 की गतिविधियों तथा छात्राओं की लेखन क्षमता को प्रदर्शित करने वाली कॉलेज पत्रिका ''जिजीविषा'' एक सशक्त माध्यम है जो छात्राओं में एक आत्मविश्वास जगाती है ताकि वे अपने विचार तथा अपने भावों को मूर्त रूप प्रदान कर सकें। सत्र 2021–2022 में कॉलेज में अनेक गतिविधियाँ सम्पन्न हुईं। छात्राओं में कौशल क्षमता के विकास को भी पत्रिका में देखा जा सकता है। सर्वांगीण विकास हेतू जो प्रयास किए जा रहे हैं उनका भी वास्तविक चित्र कॉलेज पत्रिका में उपलब्ध है। समय के साथ–साथ छात्राओं में गुणों का विकास भी हुआ है तथा नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पठन–पाठन की प्रक्रिया तथा व्यावसायिक शिक्षा को भी यह पत्रिका अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से दर्शाती है।

जीवन निरन्तरता का दूसरा नाम है। निरन्तरता हमेशा बनी रहनी चाहिए। रूकने का नाम ही जीवन को संकट की स्थिति पर ला सकता है। अतः जीवन में प्रयास लगातार करते रहना चाहिए, सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

जीवन में सुख–दुःख सब कुछ साथ–साथ चलता है। अतः समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहिए। छात्राओं से मैं अपेक्षा करती हूँ कि वे अपने जीवन में हमेशा सकारात्मक सोच को बनाये रखेंगी तथा निरन्तरता से जीवन में आगे बढ़ती रहेंगी। ईश्वर सदा आपके प्रयासों को सफल बनाते रहें, यही मेरी कामना व प्रार्थना है।

डॉ. सिस्टर क्रिस्टीना

B.A. Staff

B.Ed. Staff

B.Com. Staff

M.A. Staff

Administrative Staff

Non-Teaching Staff

B.A. - I

B.A. - II

B.A. - III

B.Com. - I

B.Com. - II

B.Com. - III

B.Ed.- I

B.Ed.- II

M.A. - I

M.A. - II

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	हमारा संरक्षक सन्त जोजफ	1
2.	सम्पादक की कलम से	2
3.	''महिला सशक्तिकरण पर डॉ. भीम राव अम्बेडकर का अतुल्य योगदान''	3
4.	कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता	4
5.	मेरा भाई	5
6.	कोरोना की तीसरी लहर विषय पर लेख	6
7.	73 वाँ गणतंत्र दिवस लेख	7
8.	आजादी भारत का गौरवःआजादी का अमृत महोत्सव	8
9.	(मेरा सफर) विद्यालय से महाविद्यालय	10
10.	साइबर अपराध और सोशल मीडिया की भूमिका	11
11.	हेमलेट दुखद नाटकाँश	12
12.	भ्रष्टाचार	13
13.	भारतीय दर्शन एवं शिक्षा के उद्देश्य	14
14.	हिन्दुस्तान जिन्दाबाद / ''सुविचार''	16
15.	आज का हिंसात्मक दौर	17
16.	चन्द्रशेखर आजाद	18
17.	भावनाओं का महत्व समझें	19
18.	वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता	20
19.	कविता / सड़क सुरक्षा	21
20.	शिक्षा क्या है ?	22
21.	अनमोल वचन	23
22.	गर्मी	24
23.	बेटी अभिशाप नहीं	25
24.	समय की कीमत	26
25.	अतिथि देवो भव :	27
26.	अजी गौर फरमाइये साहब	28
27.	हिन्दी भाषा	29
28.	पापा का अनोखा प्यार	30
29.	पर्यावरण	31
30.	समय तुम्हारे साथ–साथ	32
31.	गणगीत	33
32.	आज की नारी	34

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
33.	दो दोस्तों की जोड़ी	35
34.	मम्मी–पापा	36
35.	बेटियों का महत्व	37
36.	कार्टून (ढोलकपुर – कविता (कहानी)	38
37.	संत जोसेफ धैर्य का दर्पण	39
38.	बहन	40
39.	बेटियाँ	41
40.	नारी	42
41.	पहेलियाँ : बूझो तो जानूँ	43
42.	अनमोल वचन	44
43.	अनमोल जीवन : विद्यार्थी जीवन	45
44.	तीसरी लहर स्वरचित कविता	46
45.	मनों की ख्वाहिशें	47
46.	देश – राजधानी	48
47.	हास्य कविता	49
48.	आई.टी.बी.पी. में पहली बार महिला अधिकारियों की लड़ाकू भूमिका	50
49.	दहेज प्रथा	51
50.	बेटी को कमजोर न समझा जाए	52
51.	NEP 2020-A NEW ERA OF EDUCATION IN INDIA	53
52.	Women Empowerment	57
53.	Rosie and Clytemnestra : Struggle against Patriarchy	59
54.	Life After Pandemic and its Impact on Education	60
55.	Woman	61
56.	Struggle in life will make you stronger	62
57.	LIFE IS NOT THE WAY...	63
58.	WHY?	64
59.	FIND YOUR PASSION	65
60.	The impact of Social Media on Student Life	66
61.	Books And Reading	67
62.	महाविद्यालय कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ ''प्रगति रिपोर्ट'' 2021–2022	68

हमारा संरक्षक सन्त जोजफ

सन्त जोसफ हमारे महाविद्यालय संरक्षक सन्त है। जो बहुत ही सीधे-सादे व्यवहार के व्यक्ति थे। बाइबिल के अनुसार सन्त जोसफ एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे दाऊद वंश के थे। नाजरते नगर के रहने वाले थे। उनकी मंगनी मरिया नाम की एक साधारण सी कन्या के साथ हुई थी। ईश्वर की विशेष कृपा से मरिया गर्भवती हुई तथा उन्होंने, अपने पुत्र का नाम येसु रखा। जोसफ को स्वर्गदूत ने स्वप्न में आकर कहा कि मरिया को अपनी पत्नी स्वीकार करने से मत घबरा क्योंकि जो मरियम से पुत्र उत्पन्न होगा वह सर्वोच्च ईश्वर का पुत्र कहलाएगा जो लोगों को मुक्ति दिलाएगा। जोसफ ने स्वर्गदूत की बात मानकर मारिया से विवाह किया और पुत्र का नाम येसु रखा। जोसफ येसु के पालक पिता थे। इन्होंने मारिया और येसु की बड़े प्रेम से देखभाल की। घर का मुखिया होने के नाते उन्होंने अपने परिवार का पालन पोषण करने के लिए एक बढ़ई का कार्य किया। वे दिन भर कड़ी मेहनत करके, अपने परिवार का पेट पालते थे। बालक येसु मसीह ने भी अपने पिता से बढ़ई का कार्य सीखा। ईश्वर पुत्र होते हुए भी येसु मसीह ने एक साधारण मनुष्य की भाँति अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन किया। सन्त जोसफ सभी सन्तों में माता मरियम के पश्चात् प्रमुख स्थान पर है क्योंकि उन्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि येसु मसीह के पिता की भूमिका निभा सके। उन्होंने अपने पिता व पति दोनों ही भूमिका को अच्छे ढंग से निभाया। इसलिए उन्हें आज भी एक आदर्श पिता व आदर्श पति के रूप में मान-सम्मान प्राप्त है। सन्त जोसफ महाविद्यालय के संरक्षक सन्त के रूप में वे आज भी सभी शिक्षक वर्ग, शिक्षणेत्तर वर्ग तथा छात्राओं की देख भाल कर रहे हैं। स्वर्ग से वे हमारे लिए प्रार्थना करते हैं और हमारी रक्षा में सदा तत्पर हैं। अत: हमें भी गर्व है कि हमारे इस छोटे से महाविद्यालय परिवार का मुखिया भी संत जोसफ है जो येसु और मारिया की देखरेख करते थे।

सम्पादक की कलम से

वर्ष 2021–22 सत्र की वार्षिक पत्रिका ''जिजीविषा'' के प्रकाशन में प्राचार्या जी, स्टाफ और छात्राओं ने कविता, लेख, महाविद्यालय की गतिविधियाँ और उपलब्धियों में निरन्तर प्रगति करते हुए सहयोग किया है। मैं आप सभी का आभार व्यक्त करता हूँ।

कोरोना की तीनों लहरों के उपरान्त जीवन शैली पूर्ववत हो गई है। उसका प्रमाण प्रस्तुत अंक की उपलब्ध सामग्री है। देश और समाज में प्रचलित परम्पराओं, प्रथाओं पर बेबाक स्वतंत्र लेखन छात्राओं की मौलिक प्रतिभा का द्योतक है। आज की छात्राएँ सजग हैं – प्रत्येक क्षेत्र में खेल, पर्व, शिक्षा, भाषण, वाद–विवाद, स्काउट गाइड, एन०एस०एस०, पुस्तकालय, पर्यावरण, नेचर क्लब और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों में बढ़–चढ़कर सहभागिता कर रही हैं। प्रस्तुत अंक में किये गये प्रकल्पों को भी स्थान दिया गया है।

मैं अपनी प्रबंध समिति सचिव डॉ. सिस्टर मैल्बा, प्राचार्या प्रोफेसर सिस्टर क्रिस्टीना को धन्यवाद देता हूँ कि ''जिजीविषा'' का प्रकाशन आपके सान्निध्य में छात्राओं द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्यों को इसमें सम्मान स्थान मिल रहा है। आपके सहयोग से ही यह सब सम्भव हो सका है।

(डॉ. महेश पालीवाल)

हिन्दी विभाग

"महिला सशक्तिकरण पर डॉ. भीम राव अम्बेडकर का अतुल्य योगदान"

डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने महिलाओं को सशक्त बनाने में अपना बहुत योगदान दिया है। ये काफी लोगों को पता नहीं है। महिला सशक्तिकरण के इन प्रयासों में उनके कई विचार, भाव और कार्य सम्मिलित है। यदि हम महिला सशक्तिकरण पर डॉ. अम्बेडकर के विचारों की बात न करें तो ये बेईमानी होगी।

डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए दो मुख्य उपकारों की स्थापना की थी। मूकनायक और वहिष्कृत भारत नाम ये अखबार महिला सशक्तिकरण का मुख्य केन्द्र थे।

आजादी से पहले महिलाओं को पुरुष जैसे अधिकार नहीं थे। उसे केवल मनोरंजन की ही वस्तु समझा जाता था। डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने उन्हें मनुष्य के बराबर समझने के लिए इन अखबारों के माध्यम से समाज को जागरुक करने का प्रयास किया।

बाबा साहेब अम्बेडकर हमेशा से ही समाज में महिलाओं के अधिकारों के प्रति समर्थक थे।

न्यूयॉर्क में पढ़ाई के दौरान अपने पिता के एक करीबी दोस्त को पत्र लिखकर उन्होंने कहा था कि बहुत जल्द भारत प्रगति की दिशा स्वयं तय करेगा लेकिन इस चुनौती को पूरा करने से पहले हमें भारतीय स्त्रियों की शिक्षा की दिशा में सकारात्मक कदम उठाने होंगे।

18 जुलाई 1927 को करीब तीन हजार महिलाओं की एक संगोष्ठि में उन्होंने कहा था कि आप अपने बच्चों को स्कूल भेजिए। शिक्षा महिलाओं के लिए भी उतनी ही जरुरी है जितना कि पुरुषों के लिए। यदि आपको लिखना–पढ़ना आता है तो समाज में आपका उद्धार सम्भव है।

डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने महिलाओं से कहा था कि एक पिता का सबसे पहला काम अपने घर में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित न रखने के सम्बन्ध में होना चाहिए।

शादी के बाद महिलाएँ खुद को गुलाम की तरह महसूस करती हैं, इसका सबसे बड़ा कारण अशिक्षा है या निरक्षरता है। यदि स्त्रियाँ भी शिक्षित हो जायें तो उन्हें यह कभी महसूस नहीं होगा।

इतना ही नहीं 10 नवम्बर 1938 को बाबा साहेब अम्बेडकर ने बॉम्बे लेजिसलेटिव असेम्बली में महिलाओं की समस्या से जुड़े मुद्दों को जोरदार तरीके से उठाया था।

इस दौरान उन्होंने प्रसव के दौरान महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़ी चिन्ताओं पर अपने विचार रखे। उन्हीं के कारण आज मातृत्व अवकाश का प्रावधान सम्भव हो सका।

1942 में सर्वप्रथम मातृत्व विधेयक डॉ. भीम राव अम्बेडकर के द्वारा ही उठाया गया था।

भारतीय संविधान के निर्माण के समय भी बाबा साहेब अम्बेडकर ने महिलाओं के कल्याण से जुड़े कई प्रस्ताव रखे थे।

इतना ही नहीं आर्टिकल 14, 15, 16 में महिलाओं को समाज में समान अधिकार देने का प्रस्ताव भी किया गया। संविधान के भाग में महिलाओं के शोषण व उनको खरीदने व बेचने पर भी सख्त कानून का लिखित उल्लेख है।

बाबा साहेब अम्बेडकर ने दुखी–हारी महिलाओं को उठकर लड़ने की प्रेरणा देना, बाल विवाह, देव दासी प्रथा समाप्त करने के साथ समाज में कई कल्याणकारी व परिवर्तनकारी प्रयास किये। अन्त में यही कहा जा सकता है कि डॉ. भीम राम अम्बेडकर का महिलाओं के सशक्तिकरण में बहुमूल्य योगदान है जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

राजेन्द्र सिंह
प्रवक्ता (शिक्षा संकाय)
सन्त जोसेफ डिग्री कॉलिज, सरधना, मेरठ

कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता

विज्ञान और तकनीक की अद्‌भुत खोजों ने मनुष्य के जीवन में एक क्रान्ति ही ला दी है। आज का युग विज्ञान का युग है, कम्प्यूटर मनुष्य की इन्हीं अद्‌भुत खोजों में से एक है जिसने मानव जीवन को लगभग सभी क्षेत्रों में प्रभावित किया है।

कम्प्यूटर क्या है :– जैसा कि हम सभी जानते हैं कि यह 21वी सदी कम्प्यूटर के लिए जानी जाती है। कम्प्यूटर विज्ञान जगत की एक क्रान्तिकारी खोज है जिसने आज मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रखा है। आज जरुरत है कि हमें अति शीघ्र कम्प्यूटर की जानकारी प्राप्त हो अन्यथा हो सकता है कि आने वाले समय में हम निरक्षरों की श्रेणी में आ जाये।

जैसा कि कहा जाता है, ''आवश्यकता आविष्कार की जननी है,''

जब तक किसी वस्तु की आवश्यकता महसूस नहीं होती है तब तक उसका आविष्कार भी नहीं होता है। यदि कम्प्यूटर के आविष्कार के पीछे छिपे इतिहास को ढूँढा जाए तो हमें पता लगेगा कि मानव के सामने गणना (calculation) एक ऐसी जटिल समस्या थी जिसने मानव को प्रेरित किया, कुछ ऐसे उपकरणों को बनाने के लिए जिससे गणना की जा सके। आविष्कारों की यह श्रृंखला अंत में कम्प्यूटर के आविष्कार पर जाकर खत्म हुई।

आज के युग को यदि हम कम्प्यूटर का युग कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

शिक्षा, मनोरंजन, चिकित्सा, यातायात आदि सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर ने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है।

- आरंभिक काल में कम्पयूटर इतने सक्षम नहीं थे लेकिन इसके विकास क्रम के दूसरे चरण में जब कम्प्यूटर की आंतरिक संरचना में परिवर्तन आया तब वह पहले से कही–कही सक्षम और उपयोगी बन गया और आज के समय में कम्प्यूटरों ने कार्यालयों के काम–काज को नया रूप दिया है।
- फाइलें ओर रजिस्टर धीरे–धीरे दफ्तरों से विदा होते जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे कामों के लिए जहाँ बहुत अधिक आँकड़े जमा करने पड़ते हैं। जैसे कि रेलवे आरक्षण, जहाँ टिकट आरक्षण के साथ–साथ गाड़ियों के आने जाने से संबंधित सारी जानकारी भी तुरंत उपलब्ध करानी पड़ती है। वहाँ कम्प्यूटर सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

आज बाजार में ऐसे बहुत सारे सॉफ्टवेयर पैकेज मौजूद हैं जिनकी सहायता से आम व्यक्ति कम्प्यूटरों की थोड़ी–बहत जानकारी प्राप्त करके सरलतापूर्वक सूचनाओं को संसाधित कर घंटों के काम को मिनटों में कर सकता है।

❖ किसी भी कम्प्यूटर के 5 मुख्य हिस्से होते हैं

1. मैमोरी अथवा स्मृति :– इस भाग में कई प्रकार की सूचनाएँ भरी जाती हैं जिनके आधार पर कम्प्यूटर गणना करता है।
2. कंट्रोल अथवा नियंत्रण :– यह भाग बताता है कि अपेक्षित गणना में कम्प्यूटर सही काम कर रहा है या नहीं।
3. अंक गणित :– इस हिस्से में गणना संबंधी प्रक्रिया संपन्न होती है।
4. इनपुट :– इस हिस्से में तमाम तरह की जानकारी तथा उसे संबंधित निर्देश संकलित होते हैं।
5. आउटपुट :– यह भाग मिली सूचनाओं के आधार पर विश्लेषण कर संभाति परिणाम बताता है जो छपकर बाहर निकलता है।

निष्कर्ष :– भविष्य में कम्प्यूटर मानव–विकास में अप्रतिम साधन सिद्ध होगा। मनुष्य अनुभूति सोच, चेतना, निर्णय और रचनात्मक में कम्प्यूटर से आगे है लेकिन शुद्धता, गति और कार्य करने की क्षमता में कम्प्यूटर मनुष्य को पीछे छोड़ देता है। मनुष्य और कम्प्यूटर के सहयोग से वे

बातें साकार की जा सकती है जो आज अकल्पनीय लगती हैं।

इंसानों के लिए कम्प्यूटर के सैकड़ों फायदे भी हैं तो साइबर अपराध, अश्लील वेबसाइट जैसे नुकसान भी हैं जिसकी पहुँच हमारे बच्चों और विद्यार्थियों तक आसानी से हो जाती है। हालांकि कुछ उपायों को अपनाकर हम इसके कई नकारात्मक प्रभावों से बच भी सकते हैं।

क्या वास्तव में कम्प्यूटर छात्रों के लिए अच्छा है ?

- ❖ कम्प्यूटर छात्रों के लिए ही नहीं अपितु सभी के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। कम्प्यूटर एक आशीर्वाद के रुप में दिया विज्ञान और प्रौद्योगिकी की एक भेंट है।
- ❖ हर विषय या वस्तुओं इत्यादि की जानकारी हमें बस एक क्लिक द्वारा सामने आ जाती है। कम्प्यूटर से अब कोई कार्य बचा नहीं जिसको ना किया जा सके। कम्प्यूटर हर कार्य को चुटकियों में कर देता है।
- ❖ छात्रों के लिए पढ़ाई की सारी सामग्रियाँ ऑनलाइन ही उपलब्ध हो जाती है।
- ❖ इसके इस्तेमाल ने तकनीक के सहारे हमारे सभी कार्यों को आसान बना दिया है।
- ❖ इसके लगातार और ज्यादा इस्तेमाल से कई स्वास्थ्य समस्याएँ सामान्य रुप से देखी जा सकती है।
- ❖ सही तरीके से इसका उपयोग छात्रों के लिए वास्तव में उन्हें अच्छे और आधुनिक बनाएगा।
- ❖ इसका सही इस्तेमाल एक वरदान है। वहीं इसका दुरुपयोग विनाश का कारण भी बन सकता है।

आँचल

प्रवक्ता – कम्प्यूटर

मेरा भाई

दूर हो कितना, उतना ही पास लगता है
मेरा भाई ही है, जो दूर से भी मेरा
ख्याल रखता है। कौन कहता है कि
बच्चों में लड़ाई सिर्फ बचपन में होती
है, वो इतना बड़ा हो गया है, आज भी
मुझसे उतना ही लड़ता है। वो एक शब्द
जिससे वो सबसे ज्यादा डरता है। मेरे
पापा कहते ही उसका भी दिल
धड़कता है।
पापा के जाते ही
वो फिर लौट आता है, बस एक मेरा भाई
वो अपने पीछे पीछे घुमाता है,
चल तुझे कुछ दिखाऊँ
बोलकर मुझे पागल बनाता है, मुझे पूरा दिन
वो परेशान करता फिर भी यार उसके साथ
ही अच्छा लगता है।

सोनिया रामबीर

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

मातृ भूमि

मातृ भूमि की माटी चंदन
आओ तिलक लगायें।
इस माटी में जन्म मिला
यह सोच के हम इतरायें।

राम कृष्ण ने जन्म लिया
खेले गौतम गांधी।
वीर भगत सिंह यही थे जन्मे
चढ़ गये हँस कर फाँसी।

वीरों की पावन धरती को
आओ शीश झुकायें।
इस माटी में जन्म मिला
यह सोच के हम इतरायें।

आस्था सिंह

बी.ए. प्रथम वर्ष

कोरोना की तीसरी लहर विषय पर लेख

सितम्बर 2019 में चीन के वुहान शहर में कोराना नामक नई बीमारी (वायरस) के रुप में सामने आयी और अभी हाल ही में कोरोना की तीसरी लहर भी आ गई है। जिसका नाम है। Omicron (ओमिक्रॉन) यह वायरस पहली व दूसरी लहर से बिल्कुल अलग है। इसमें व्यक्ति को पहले गले में दुखन होती है फिर बुखार होता है। तथा बदन में दर्द भी होता है शरीर पर लाल दाने (चकत्ते) से उभर आते हैं।

ओमिक्रॉन के कुल मरीज अभी तक ज्यादा नहीं है। तीसरी लहर के विषय में अभी ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि यह अभी दिसम्बर 2021 में ही आया है, इसने दस्तक दे दी है। दुनिया भर में इस वायरस से केसों और मौतों के आँकड़े दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे हैं।

भारत में कोरोना वायरस :– देश में कोरोना की तीसरी लहर चरम सीमा पर है। तीसरी लहर में अब तक 50 लाख से ज्यादा केस सामने आ चुके हैं। हालांकि एक बात राहत की ये भी है कि मौतों की संख्या दूसरी व तीसरी लहर की अपेक्षा कम भी दिखाई दे रही है। यह ओमिक्रॉन 15 साल से कम बच्चों को भी अपनी चपेट में ले रहा है। तथापित कोरोना की दूसरी व तीसरी लहर में मौतों के आँकड़े ज्यादा थे जबकि इस लहर में पॉजिटीव केस ज्यादा गम्भीर नहीं है। किन्तु इसमें केस ज्यादातर हॉम क्वारंटीन भी है।

हमें इस वायरस से है तीसरी बार खतरा .....
पर हमारे लिये यह इम्तिहान की घड़ी है .....

हमें इस वायरस से बचाव के लिये अपने खाद्य पदार्थों के सेवन में ताजे, रसीले, खट्टे Vitamin 'C' पदार्थ अधिक लेने चाहिये। इससे हमारी शरीर की इम्युनिटी स्ट्राँग होगी तथा कुछ ऐसे भी पदार्थों का सेवन करना चाहिये जो कि हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाये रखे।

जैसे :– गुड़, शर्करा की मात्रा, घी आदि। जिससे हम यह खाद्य पदार्थ ग्रहण करेंगे और हमारे अन्दर सभी वायरस से लड़ने की क्षमता होगी।

- ❖ इस वायरस से बचने के लिये कम से कम 2 गज की दूरी बनाये रखें।
- ❖ मास्क अवश्य लगाएँ।
- ❖ खाँसते, छींकते समय अपने मुँह पर रुमाल अवश्य रखें।
- ❖ आस–पास में भीड़ न करें।
- ❖ थोड़ी–थोड़ी देर बाद सैनेटाइजर करते रहें।
- ❖ आया है ओमिक्रॉन का खतरा

आया है ओमिक्रॉन का वायरस
पर इससे हमें लड़ना है डटकर
और तब तक लड़ना जब तक जीत
न हो पक्की !!!

फरहीन
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

गुरू

गुरु ज्ञान दीप की ज्योति से गुरु मन आलोकित कर देता है। जल जाता है, वो दिए की तरह कई जीवन रोशन कर देता है। विद्या का धन देकर जीवन सुख से भर देता है, प्रणाम उस गुरु को जो ज्ञान की खुशबू से जीवन भर देता है।

आस्था सिंह
बी.ए. प्रथम वर्ष

73 वाँ गणतंत्र दिवस लेख

गणतंत्र दिवस यह भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है। जो प्रति वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इसी दिन सन् 1950 को सरकार ने अधिनियम (1935) को हटा दिया और भारत का संविधान लागू कर दिया गया था।

26 जनवरी सवाल यह उठता है कि इसी दिन को क्यों चुना गया तो इस दिन को इसलिये चुना गया क्योंकि 1930 में इसी दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई.एन.सी.) ने भारत को पूर्ण स्वराज्य घोषत किया था।

यह राष्ट्रीय पर्व एक स्वतंत्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज्य भी स्थापित करने के लिये संविधान को 26 जनवरी 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा अपनाया गया था। अतः 26 जनवरी 1950 को इसे एक लोकतन्त्र की प्रणाली के साथ सरकार द्वारा भी लागू किया गया।

यह पर्व सर्वाधिक धूमधाम से सबसे पहले दिल्ली में 26 जनवरी को दिल्ली के लाल किले पर भारतीय ध्वज राष्ट्रपति द्वारा फहराया गया था।

हर जगह, स्थान, स्कूल, कॉलिजों में भी यह पर्व बड़े धूमधाम से मनाया जाता है तथा देश की राजधानी दिल्ली को इस दिन किसी दुल्हन की तरह सजाया जाता है और परेड भी निकाली जाती है। इस परेड को देखने के लिये व्यक्ति दूर–दूर से आते हैं तथा इसमें अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग भी होता है।

इस राष्ट्रीय ध्वज को फहराते समय राष्ट्रगान भी गाया जाता है जो रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा रचित 52 सेकेण्ड का है।

यह पर्व केवल भारत द्वारा ही नहीं मनाया जाता है। बल्कि दुनिया भर में निवास कर रहे लोगों द्वारा भी यह पर्व मनाया जाता है।

स्कूलों व कॉलिजों में यह अधिकतर देखते हैं कि इनमें कार्यक्रम, उद्घाटन आयोजित होते जिससे बालक व बालिकाएँ इस दिन देशभक्ति के कपड़े पहनकर नृत्य, गाना, बजाना, ढोल आदि का प्रयोग भी करती हैं तथा दूसरों का भी उत्साहवर्द्धन व उन्हें समझाने के लिये प्रयत्न भी करती हैं। जिससे हमारे सामने बैठे छोटे बच्चों को भी यह राष्ट्रीय पर्व समझ में आ सके।

इस दिन हर भारतीय अपने देश के लिये प्राण देने वाले व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। गणतन्त्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम संदेश भी देते हैं तथा स्कूलों, कॉलिजों आदि में कई कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं।

आज के दिन यह गणतंत्र बना है। संविधान हमारा स्वतंत्र बना है। प्रजातंत्र से मिल कर यह गणतंत्र बना है। और सभी धर्म, भाषा, स्नेह से (एकजुट) होकर मिलकर यह हमारा भारत बना है।

वीर शहीदों (बलिदानों का सपना) जब सच हुआ,,

तभी यह देश आजाद हुआ,,

आज सलाम (सैल्यूट) करते हैं हम उन वीर शहीद जवानों को हम,,

जिनकी शहादत से ये भारत गणतन्त्र (स्वतंत्र) हुआ है।।

फरहीन

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

लिंग भेद

''आज के युग में वैसे तो सभी बड़े–बड़े नेता भाषण देते हैं लेकिन कहीं न कहीं आज भी हमारे देश में ''लिंग भेद'' बहुत ही बड़ी समस्या है। वैसे तो सभी चाहते हैं कि सभी एक ही समान रहें लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि कहीं न कहीं कुछ तो ऐसा होता है कि हमारे समाज में लिंग भेद डगमगा जाता है। चाहे वह किसी की भी गलती से हो। वैसे तो सब बड़े आराम से लड़कियों पर भाषण देते हैं और जब करने की बारी आये तो उन्हें ऐसी शर्तों में फँसाया जाता है कि वह सोचती है कि आगे बढ़ने से अच्छा है कि मैं अपने ही घर में सुरक्षित रहूँ। आज भी पुराने रीति–रिवाजों के कारण उन्हें इस समस्या से जूझना पड़ता है कि लड़की क्या करेगी लड़के ही युग में आगे बढ़ेंगे। आज भी कई जगह तो लड़की होने पर शर्म मानी जाती है।

खुशी

आजादी भारत का गौरवःआजादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने का महोत्सव है। ब्रिटिश शासन के 200 वर्षों की गुलामी से देश को मुक्त करवाने के लिए न जाने कितनी मां के बेटों ने अपनी जान गँवाई थी। देश की आजादी का यह दिन हमारे आजादी के नायकों के त्याग ,तपस्या और बलिदान को याद करने का दिन है। यह अमृत महोत्सव देश के उन लोगों को समर्पित है जिन्होंने भारत की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।इसका आरंभ गाँधीजी के नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात के साबरमती आश्रम से 12 मार्च 2021 को किया। आजादी का अमृत महोत्सव 15 अगस्त 2023 को समाप्त होगा।

आजादी के अमृत महोत्सव का अर्थ है :

आजादी की ऊर्जा का अमृत

स्वतंत्रता सेनानियों की स्वाधीनता का अमृत

नए विचारों का अमृत

आत्मनिर्भरता और नए संकल्पों का अमृत

आजादी के अमृत महोत्सव का मुख्य उद्देश्य है :

भारत देश के लोगों में देशभक्ति की भावना को जगाना। भारत के उन तमाम वीरों और वीरांगनाओं को याद करना जिन्होंने भारत को आजाद करवाया। देश की युवा पीढ़ी को आजादी का महत्व समझाना।

देश के सभी लोगों के बीच भारतीय राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगे)के बारे में जागरूकता पैदा करना और हर घर में तिरंगा लगाने को बढ़ावा देना।

आजादी के अमृत महोत्सव की थीम थी :

स्वतंत्रता संग्राम

विचार @ 75, संकल्प @ 75, एक्शन @ 75, उपलब्धियां @ 75

भारत सरकार के द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव की समाप्ति पर हर घर तिरंगा अभियान चलाया गया है ।हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत हर व्यक्ति को राष्ट्रीय ध्वज के साथ जोड़ा जा रहा है ।अभी तक यह केवल अधिकारिक या संस्थागत रूप से होता था ।हर घर तिरंगा अभियान के माध्यम से तिरंगे को व्यक्तिगत संबंध प्रदान किया गया। इसके पीछे यह विचार है कि लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जागृत हो और भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता बढे।

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में भारत सरकार ने हर घर तिरंगाअभियान चलाया । जो की बहुत ही अधिक सफल रहा।

भारत का राष्ट्रीय ध्वज एवं उसका इतिहासः

भारत का राष्ट्रीय ध्वज जिसे तिरंगा भी कहते हैं, तीन रंग की क्षैतिज पटिटयों के बीच नीले रंग के एक चक्र द्वारा सुशोभित ध्वज है।

इसकी अभिकल्पना पिंगली वेंकैया ने की थी। इसे 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से भारत की स्वतंत्रता के कुछ ही दिन पूर्व 22 जुलाई 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक में अपनाया गया था।

इसमें तीन क्षैतिज पटिटयां समान चौड़ाई की हैं, जिनमें सबसे ऊपर केसरिया रंग की पट्टी जो देश की ताकत और साहस को दर्शाती है ,बीच में श्वेत पट्टी धर्म चक्र के साथ शांति और सत्य का संकेत है और नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी देश के शुभ, विकास और उर्वरता को दर्शाती है।

ध्वज की लंबाई एवं चौड़ाई का अनुपात 3.2 है। सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है जिसमें 24 तिलियाँ है यह इस बात का प्रतीक है कि

भारत निरंतर प्रगतिशील है। इस चक्र का व्यास लगभग सफेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर होता है एवं इसका रूप सारनाथ में स्थित अशोक स्तंभ के शेर के शीर्ष फलक के चक्र में दिखने वाले की तरह होता है ।

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज अपने आप में ही भारत की एकता ,शांति ,समृद्धि और विकास को दर्शाता हुआ दिखाई देता है।

तिरंगे का इतिहास :

भारत का तिरंगा ध्वज भारत के स्वतंत्रता संग्राम काल में निर्मित किया गया था। वर्ष 1857 में स्वतंत्रता के पहले संग्राम के समय भारत राष्ट्र का ध्वज बनाने की योजना बनी थी लेकिन यह आंदोलन असमय ही समाप्त हो गया था और उसके साथ ही यह योजना भी बीच में ही अटक गई थी ।वर्तमान स्वरूप में पहुंचने से पूर्व भारतीय राष्ट्रीय ध्वज अनेक पड़ावों से गुजरा है। इस विकास में यह भारत में राजनीतिक विकास का परिचायक भी है। कुछ ऐतिहासिक पड़ाव इस प्रकार हैं :

प्रथम चित्रित ध्वज 1904 में स्वामी विवेकानंद की शिष्या भगिनी निवेदिता द्वारा बनाया गया था ।7 अगस्त 1986 को पारसी बागान चौक (ग्रीन पार्क) कोलकाता में इसे कांग्रेस के अधिवेशन में फहराया गया था। इस ध्वज को लाल ,पीले और हरे रंग की पत्तियों से बनाया गया था। ऊपर की ओर हरी पट्टी में 8 कमल थे और नीचे की लाल पट्टी में सूरज और चांद बनाए गए थे। बीच की पीली पट्टी पर वंदे मातरम लिखा गया था।

द्वितीय ध्वज को पेरिस में मैडम कामा 1907 में उनके साथ निर्वासित किए गए कुछ क्रांतिकारियों द्वारा फहराया गया था । कुछ लोगों की मान्यता के अनुसार यह 1905 में हुआ था ।यह भी पहले ध्वज के समान था, सिवाय इसके कि इसमें सबसे ऊपर की पट्टी पर केवल एक कमल था किंतु सात तारे सप्तर्षियों को दर्शाते थे । यह ध्वज बर्लिन में हुए समाजवादी सम्मेलन में भी प्रदर्शित किया गया था ।

1917 में भारतीय राजनीतिक संघर्ष ने एक निश्चित मोड़ लिया। डॉक्टर एनी बेसेंट, लोकमान्य तिलक ने घरेलू शासन आंदोलन के दौरान तृतीय चित्रित ध्वज को फहराया। इस ध्वज में 5 लाल और 4 हरी क्षैतिज पटटियाँ एक के बाद एक और सप्त ऋषि के अभिविन्यास में इस पर सात सितारे बने थे ।ऊपरी किनारे पर बाईं ओर(खंबे की ओर) यूनियन जैक था। एक कोने में सफेद अर्धचंद्र और सितारा भी था।

कांग्रेस के सत्र बेजवाड़ा वर्तमान में विजयवाड़ा में किया गया। आंध्र प्रदेश के एक युवक पिंगली वेंकैया ने एक झंडा बनाया और गाँधी जी को दिया। यह दो रंगों का बना था ।लाल और हरा रंग जो दो प्रमुख समुदायों अर्थात हिंदू और मुस्लिम का प्रतिनिधित्व करता था। गाँधीजी ने सुझाव दिया कि भारत के शेष समुदायों का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसमें एक सफेद पट्टी और राष्ट्र की प्रगति का संकेत देने के लिए एक चलता हुआ चरखा होना चाहिए।

वर्ष 1931 तिरंगे के इतिहास में एक स्मरणीय वर्ष है। तिरंगे ध्वज को भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया गया और इसे राष्ट्र ध्वज के रूप में मान्यता मिली। यह ध्वज जो वर्तमान स्वरूप का पूर्वज है ,केसरिया ,सफेद और बीच में गांधीजी के चलते हुए चरखे के साथ था ।यह भी स्पष्ट रूप से बताया गया था कि इसका कोई सांप्रदायिक महत्व नहीं था।

22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने वर्तमान ध्वज को भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया । स्वतंत्रता मिलने के बाद इसके रंग और उनका महत्व बना रहा। केवल ध्वज में चलते हुए चरखे के स्थान पर सम्राट अशोक के धर्म चक्र को स्थान दिया गया। इस प्रकार कांग्रेस पार्टी का तिरंगा ध्वज अंततः स्वतंत्र भारत का तिरंगा ध्वज बना।

डॉ अंजलि मित्तल

प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान विभाग

सेंट जोसेफ गर्ल्स डिग्री कॉलेज सरधना

(मेरा सफर)
(विद्यालय से महाविद्यालय)

मैं सन्त जोजफ्स की छात्रा ने 15 से 16 वर्ष पूर्ण किये हैं। मैंने विद्यालय से महाविद्यालय पहुँचने और महाविद्यालय पूर्ण करने में से वर्ष बितायें हैं।

किसी के लिए कितना मुश्किल होता होगा एक ही जगह पर रह कर पढ़ना। मगर मेरे साथ ऐसा नहीं है। मुझे तो अब भी ऐसा लगता है अभी तो विद्यालय से महाविद्यालय की ओर आई थी। ऐसा लगता कि तीन साल भी कितनी जल्दी चले गये।

खाली समय पर ग्राउंड में बैठकर गप्पे मारना, पढ़ने का जल्दी से नाम ना लेना, कभी इसकी बातों पर हँसना–तो कभी उसकी बातों पर हँसना, लाइब्रेरी में बिल्कुल ही मौन रहना, अगर किताब समय ना लौटाई जाए तो फाइन देना। ऊपर की सीढ़ियों की तरफ बन्दरों का घूमना, हिन्दी वाले प्रोफेसर के द्वारा मेरा नाम होम–साइंस का पड़ना वो इसलिए क्योंकि कभी–कभी मैं हिन्दी की कक्षा छोड़ कर हम साईंस में ही रह जाती।

अब दोस्तों की बात ले लो :– खाली समय में हम बहुत मस्ती करते खाने की तो बात ही ना करो। दोस्त कैसे होते हैं सबको पता है। हम कभी किसी बात की टेंशन ना लेते थे और जब से हमारी विदाई हुई है। ऐसा लगता है कि घर में कैद हो गये। अब सब टीचर्स और दोस्तों की याद आती है। किसी ने सच ही कहा है कि दोस्ती में ज्यादा लगाव नहीं होना चाहिए इतना हो कि आसानी से दूर रह सकें क्योंकि घर में बैठे चार दिन भी नहीं हुए हैं सबकी याद आ रही है। पढ़ने बैठो तो मन नहीं लगता।

पढ़ने का क्या है कॉलिज तो अपनी ही दुनिया है, पढ़ना–लिखना तो चलता ही रहेगा ऐश कर कोई कुछ नहीं कहेगा। कॉलिज में दोस्त और पढ़ाई दोनों ही मस्त हैं।

कॉलिज में मस्ती और कॉलिज है ज्ञान का भण्डार, कॉलिज है तो जीवन निश्चय है।

दोस्ती में वो रुठना–मनाना–वो लड़ाई–झगड़े, वो पैनों की झीना–झपटी सब रह जाती है सिर्फ वे फोटो को देखकर आँख बन्द करके लम्बी–सी प्यारी–सी यादें ही रह जाती हैं।

अब पेपर की समय की बात :– हमारे पेपर जैसे–जैसे खत्म होने को आ रहे तो ऐसा लग रहा है कि कोई बगीचे से फूलों को अलग कर रहा हो फिर क्या पता कि कोई फूल कहाँ तो कोई कहाँ।

इतनी टेंशन तो एडमिशन के समय नहीं हुई कि एडमिशन होगा या नहीं जितनी कॉलिज से दूर होने की हो रही है। कॉलिज में सारी इमारत तो बहुत अच्छी है मगर पहले इमारत के लिए नींव भी होनी चाहिए जो हमारी नींव तो अच्छी है। वो है हमारी टीचर्स उनमें तो मुझे अपनी माँ दिखाई देती है। हर मुश्किलों को आसान बनाए। हर बात को आसानी से समझाए उनका कोई जवाब नहीं वे गजब हैं। हमारे सारे दोस्त 2 जुलाई के बाद कोई कहाँ तो कोई कहाँ (ऐसा होगा कि हम कहाँ तुम कहाँ)।

स्वाति

बी.ए. तृतीय वर्ष

साइबर अपराध और सोशल मीडिया की भूमिका

हम जितनी तेजी से डिजिटल दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं, ठीक उतनी ही तेजी से साइबर अपराध की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। जिस गति से तकनीक ने उन्नति की है, उसी गति से मनुष्य की इंटरनेट पर निर्भरता बढ़ी है। एक ही जगह पर बैठकर इंटरनेट के जरिये मनुष्य की पहुँच, विश्व के हर कोने तक आसान हुई है।

वर्तमान में भारत की बड़ी आबादी सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करती है। भारत में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के प्रति लोगों में जानकारी का अभाव है। इसके साथ ही अधिकतर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के सर्वर विदेश में हैं, जिससे भारत में साइबर अपराध घटित होने की स्थिति में इनकी जड़ तक पहुँच पाना कठिन होता है।

साइबर अपराध :– साइबर अपराध के मामलों में एक साइबर अपराधी किसी उपकरण का उपयोग, उपयोगकर्ता की व्यक्तिगत जानकारी, गोपनीय व्यावसायिक जानकारी, सरकारी जानकारी या किसी डिवाइस को अक्षम करने के लिये कर सकता है। उपरोक्त सूचनाओं को खरीदना एवं बेचना भी एक अपराध है।

- ★ साइबर विशेषज्ञों के अनुसार, अपराध की श्रेणी को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।
- ★ वे अपराध जिनमें कम्प्यूटर पर हमला किया जाता है। जैसे – हैकिंग, वायरस हमले आदि हैं।
- ★ अपराध जिनमें कम्प्यूटर को एक हथियार/उपकरण के रुप में उपयोग किया जाता है। जैसे – साइबर अपराध, आई.पी.आर. उल्लंघन, क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, पोर्नोग्राफी आदि है।

साइबर अपराध की श्रेणियाँ :– इसके अन्तर्गत तीन प्रमुख श्रेणियाँ आती हैं ''

- ★ व्यक्ति विशेष के विरुद्ध
- ★ सम्पत्ति विशेष के विरुद्ध
- ★ सरकार विशेष के विरुद्ध

सोशल मीडिया की भूमिका :–

- ★ बड़े पैमाने पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करने वाली जनसंख्या साइबर अपराध के खतरों से अनजान है। विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइट्स के सर्वर विदेशों में केन्द्रित हैं, जिससे यह डर रहता है कि कहीं ये देश लोगों की व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग न करें।
- ★ विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर लोग अपनी व्यक्तिगत जानकारियाँ साझा करते हैं, जिससे हैकर्स इन सोशल नेटवर्किंग एकाउंट्स को आसानी से हैक कर लेते हैं और फिर सूचना दुरुपयोग करते हैं।
- ★ लोगों को सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हैकर्स ऑनलाइन ठगी का शिकार बनाते हैं।
- ★ सुरक्षा एजेंसियों द्वारा यह भी पता लगाया गया है कि ऑनलाइन मुद्रा स्थानान्तरित करने वाली विभिन्न एप के माध्यम से आतंकवादियों और देश विरोधी तत्वों को फंडिंग की जाती है।
- ★ साइबर अपराधी विभिन्न ऑनलाइन गेम्स के माध्यम से बच्चों को अपराध करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।

डॉ. विदुषी त्यागी
(अर्थशास्त्र प्रवक्ता एवं
राष्ट्रीय सेवा योजना कार्य क्रमाधिकारी)

हेमलेट दुखद नाटकाँश

हेमलेट विलियम शेक्सपीयर का एक प्ले है जो कि एक दुखद घटना है। इस कहानी की शुरुआत एक भूत से होती है जो कि हू–ब–हू टेनमार्क के राजा की तरह दिख रहा है जिनकी हाल ही में मृत्यु हुई है। सबसे पहले भूत शाही किले की दीवार के आसपास किले के गार्ड्स को दिखाई देता है। किले के गार्ड्स डर कर हॉरेसिया (हेमलेट का दोस्त) के पास गई। हॉरेसियो एक शक्की किस्म का आदमी है। ये हर बात पर आसानी से विश्वास नहीं करता है जब गार्ड्स डरे–डरे हॉरेसियो के पास आये और उन्होंने बोला कि उन्होंने एक भूत देखा है टेनमार्क के राजा का। हॉरेसियो को आसानी से विश्वास नहीं हुआ और वह भूत देखने खुद गया तो उसे भी विश्वास हो गया कि यह टेनमार्क के राजा का भूत है। हॉरेसियो ये बात हेमलेट को बताता है तो हेमलेट भूत से मिलने जाता है उस भूत ने भी हेमलेट के पिता होने का दावा किया। भूत हेमलेट से कहता है कि उसे तुम्हारे चाचा (किलॉटियस्स) ने धोखे से मारा है और हेमलेट तुम्हें मेरी मौत का बदला लेना होगा।

किलॉटियस्स हेमलेट का चाचा है और उसने हेमलेट के पिता का कत्ल किया है और खुद टेनमार्क का राजा बन गया और हेमलेट की माँ (गर्टरुट) से शादी कर लेता है। हेमलेट को विश्वास नहीं होता है कि उसके चाचा ने उसके पिता को मारा है। वह एक योजना बनाता है। हेमलेट सबके सामने पागल होने का नाटक करता है। कभी तो वो पागलपन में आत्म हत्या करने की कोशिश करता है और कभी–कभी वह यह दिखाता है कि उसे संसार की सब ही औरतों पर से भरोसा उठ गया है। पॉलोनियस यह सोचता है कि यह हालत हेमलेट की ऑफिलिया (हेमलेट की प्रेमिका) के प्यार में हुए हैं। पॉलोनियस (ऑफिलिया के पिता) उसकी जासूसी करते हैं। हेमलेट ने थेटर में एक प्ले खेला। उसने एक नाटक मण्डली के साथ मिलकर उसके चाचा और माँ के सामने प्ले खेला। उसने उस प्ले में अपने पिता की मृत्यु दिखाई। उसने यह देखना था कि उसके चाचा का क्या रिएक्शन था यह प्ले देखने पर। मृत्यु वाले सीन में किलॉटियस उठकर चला जाता है। हेमलेट को यकीन हो गया कि उसके चाचा ने ही उसके पिता को मारा है। उसके चाचा को भी ये पता चल गया कि हेमलेट पागल नहीं है। वह पागल होने का नाटक कर रहा है अब हेमलेट अपने चाचा को मारना चाहता है। एक दिन उसे मौका मिला अपने चाचा को मारने का पर हेमलेट यह सोचकर छोड़ देता है कि वह प्रार्थना कर रहा है। मैं उसे अभी मारुँगा तो वह स्वर्ग में जाएगा। जैसे आदमी को तो नरक में जाना चाहिये। हेमलेट अपनी माँ के पास जाता है और उन पर गुस्सा करता है। हेमलेट अपनी माँ पर इतना गुस्सा होता है कि उन्हें लगता है कि हेमलेट मुझे मार ही ना दे। पॉलिनियस यह सब ही बातें पर्दे के पीछे सुनता है जब हेमलेट एग्रेसिव हो जाता है तो पॉलिनियस पर्दे के पीछे बचाओ–बचाओ चिल्लाता है। हेमलेट यह सोचता है कि पर्दे के पीछे उसके चाचा हैं और वह उसे मार देता है। ऑफिलिया के पिता की मृत्यु हो जाती है। हेमलेट पॉलोनियस को गलती से मार देते हैं अपना चाचा समझ कर। ऑफिलिया अपने पिता की याद में मर जाती है। लियरट्रड अपने पिता की मौत का बदला लेने फ्रांस से वापस आ जाता है। लियरट्रड हेमलेट को ऑफिलिया के अन्तिम संस्कार में पकड़ लेता है। हेमलेट कहता है अगर लड़ना है तो ढंग से लड़ो। फिर एक मुकाबले का आयोजन होता है। अब दोनों के हाथ में तलवार पकड़ा दी है लेकिन लियरट्रड की तलवार पर जहर लगा हुआ है। अगर मान लो हेमलेट जीत जाता है तो उसे एक शर्बत पिला दिया जाएगा जिसमें जहर है। इसका आयोजन किलॉटियस्स करता है। चाचा किलॉटियस्स ने सब कुछ सेट करके रखा है हेमलेट को मारने के लिए। तलवार हेमलेट के हाथ पर लग जाती है और एक्सचेन्ज एक–दूसरे के साथ तो हेमलेट पर लियरट्रड की जहर वाली तलवार आ जाती है। हेमलेट की माँ को सब कुछ पता चल जाता है तो वह शर्बत जहर वाला पी लेती हैं और मर जाती हैं। ऑफिलिया का भाई किलॉटियस की सारी चाल समझ चुका था लेकिन लियरट्रड भी घायल था। उस तलवार से तो वह मर जाता है। हेमलेट भी घायल होता है तलवार से उसने सोचा कि अब मैं भी मरने वाला हूँ लेकिन इस चाचा को नहीं छोडूँगा तो हेमलेट ने उसी तलवार से किलॉटियस्स को भी मार दिया। खुद भी मर गया और यहीं इस प्ले का अन्त हो जाता है जिसमें सब मर जाते हैं। केवल हेमलेट का दोस्त बच जाता है। यह एक ट्रेजिक प्ले है जिसका अन्त दुःख से होता है।

रुकसार वकील अहमद

एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार से तात्पर्य है कि जो लोग जिस काम के काबिल होते हैं, पर उन्हें काम नहीं मिल पाता। जो काम देने वाले होते हैं वे भाई–भतीजावाद करते हैं या रिश्वत लेते हैं। भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में हो रहा है, चाहे वो कोई भी क्षेत्र हो।

Hk"Vkpkj ds dkj.k %& भ्रष्टाचार के अनेक कारण हैं ; जैसे – रिश्वतखोरी, भाई–भतीजावाद, लिंग भेद, धर्म भेद आदि।

1- Hkkbl&Hkrhtkokn %& भाई–भतीजावाद से तात्पर्य है कि जो लोग किसी ऊँचे (ओहदे) पर होते हैं वे उन लोगों को नौकरी देते हैं जो उनके रिश्तेदार होते हैं या भाई, बहन होते हैं। इस तरह जो उस नौकरी के हकदार होते हैं वह उनको नहीं मिल पाती।

2- fj'or[kksjh %& रिश्वतखोरी भी भ्रष्टाचार का एक प्रमुख कारण होता है। जो लोग नौकरी देते हैं ; वह उन लोगों को देते हैं ; जो उनको रिश्वत देते हैं। इस तरह जो लोग गरीब होते हैं वह लोग रिश्वत में बड़ी रकम नहीं दे पाते और उनको नौकरी नहीं मिल पाती।

3- fyax Hksn %& लिंग भेद भी भ्रष्टाचार का एक प्रमुख कारण है।

lecy
ch-,- f}rh; lsesLVj

''माँ की खूबियाँ''

माँ खूबियों की खान होती है
बच्चों का जहान होती है
जब चली जाती है वो छोड़कर
महफिल भी सुनसान होती है
चेहरे की छूटी मुस्कान होती है
जो समझे सभी परेशानियों को
वो सिर्फ माँ होती है।।
ना कोई माँ जैसा होता है
ना कोई माँ के समान होता है
जिसके पास माँ होती है
उसके पास सारा जहान होता है।।

fu'kk flag
ch-,- r`rh; o"kZ

मोबाइल

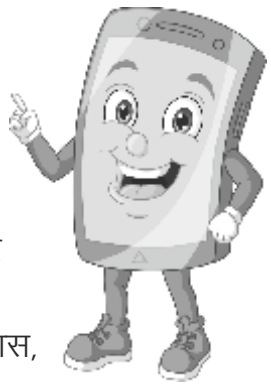

मोबाइल ये तूने क्या किया
अच्छों–अच्छों को रास्ते से हटा दिया।
वो एक जमाना था घड़ी की मदद माँगते थे।
अलार्म लगा के सोते घंटी सुन के जागते थे।
मनपसंद टेप रिकॉर्डर होते थे बड़े–बड़े मगर
अब छोटे ही फोन पर होते काम सारे
मनोरंजन के साधन रेडियो, टी.वी. थे बड़े खास,
पर बना दिया तूने उनको भी बकवास।
कम्प्यूटर पर भी तेरी नजर गड़ी है,
उसको भी खाने की तुझको हड़बड़ी है।
एक–एक कर होते गए कितने तेरे शिकार,
मोबाइल अब तेरी ही सरकार
वाह रे शातिर कैसे दिमाग से काम लिया ?
कुछ को खाया और कुछ घोल बनाकर पी गया।
मोबाईल ये तूने क्या किया ?
अच्छों–अच्छों को रास्ते से हटा दिया।

Lokfr
ch-,- r`rh; o"kZ

भारतीय दर्शन एवं शिक्षा के उद्देश्य

दर्शन जीवन के प्रति दृष्टिकोण है जिसका अर्थ है दृश्यते अनेन इति दर्शनम् अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए। इसी के द्वारा भारतीय ऋषियों ने जीवन जगत सत्य एवं मूल्यों को देखने का प्रयास किया तथा चिंतन मनन तथा निदिध्यासन द्वारा कुछ निष्कर्ष निकाले। प्राचीन काल में वेदों के रुप में दार्शनिक विचारधारा का प्रारम्भ हुआ।

इन वेदों में ऋग्वेद के अनुसार भौतिक वातावरण से दूर अर्न्तमुखी प्रकृति अपनाने से परम शांति मिलती है जबकि अथर्ववेद लौकिक सामग्री से भरा है। सामवेद में संगीत प्रमुख तत्व है जबकि यर्जुवेद में कर्म काण्ड की प्रधानता है।

पूर्व वैदिक काल की अपेक्षा उत्तर वैदिक कालमें ब्रहम ज्ञान की अधिक प्रधानता थी उपनिषद काल में व्यवहारिक व व्यवसायिक ज्ञान के साथ–साथ ब्रह्म की खोज एवं आत्म तत्व का अन्वेषण ही प्रमुख तत्व है। इसमें ब्रहामण साहित्य का प्रमुख भाग सत्र रुप में मिला। अतः यह सूत्र काल व शास्त्रीय युग कहलाया।

इन शास्त्री साहित्यों के निर्माण से उनके दर्शन मिले जिससे ''षड दर्शन'' की परम्परा का उल्लेख किया गया।

षड दर्शन में सांख्य, योग, न्याय, वैश्विक पूर्व मीमांसा व उत्तर मीमांसा समाहित है।

कपिल ऋषि द्वारा प्रतिपादित सांख्य दर्शन जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है योग दर्शन उसी सिद्धान्त को व्यवहारिक रुप प्रदान करता है। सांख्य का अर्थ है सम्यक, ''ख्याति का यथार्थ ज्ञान'' पतंजलि द्वारा प्रतिपादित योग दर्शन का अर्थ है। ''चित्र वृति निरोध'' यम, नियम आसन प्रणायाम प्रत्याहार ध्यान धारणा एवं समाधि। योग दर्शन में ईश्वर सत्ता को स्वीकार किया गया है।

गौतम मुनि द्वारा प्रवर्तित न्याय दर्शन तथा कणाद द्वारा प्रतिपादित बैशेषिक दर्शन एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों दर्शन यथार्थवादी हैं तथा ईश्वर को जगत का कर्ता मानते हैं। इनका मानना है कि शरीर व अन्य भौतिक पदार्थ परमाणुओं द्वारा निर्मित होते हैं दोनों ही दर्शन अध्यात्मवादी है।

जैमिनी द्वारा प्रतिपादित पूर्व मीमांसा दर्शन पूर्ण रुप से वेदों पर आधारित है। ये ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखते हैं तथा स्वर्ग नरक कर्म नियम पुर्नजन्म आत्मा की मिथ्यता तथा बहुदेव में इनका विश्वास है।

उत्तर मीमांसा (वेदान्त) वेदों के अंतिम भाग उपनिषद पर आधारित है। वेदान्त दर्शन पूर्णतः आध्यात्मवादी है तथा बहुदेव के विरोधी हैं।

षड दर्शनों के अलावा तीन ऐसे दर्शन हैं जो वेदों की सत्ता को चुनौती देते हैं। अतः नास्तिक दर्शन कहलाते हैं। इनमें सबसे प्राचीन चार्वाक है जो कहते हैं कि प्रत्यक्ष ही प्रमाण है।

दूसरा नास्तिक दर्शन जैन दर्शन है। यह अनेकान्तवादी एवं सापेक्षवादी है। यह आत्मा को स्वीकार करता है तथा अहिंसा को सर्वोपरि मानता है।

तीसरा अवैदिक दर्शन बौद्ध दर्शन है जिसका सूत्रपात भगवान बुद्ध ने दुःखों से निवृत्ति के लिये किया था। बौद्ध दर्शन अनात्मवादी, अनीश्वरवादी, आध्यात्मवादी व नैतिकतावादी है।

यह क्षणिकवाद व पुर्नजन्म में विश्वास रखता है। इसके बाद लगातार दार्शनिक चिंतन मनन की धारा अविरल गति से बहती रही। उसी श्रृंखला में दयानन्द सरस्वती, स्वामी दयानन्द, महर्षि अरविन्द, रविन्द्र नाथ टैगोर एवं महात्मा गाँधी जैसे अनेकों मनीषी व आचार्यगण आते रहे तथा आज भी अनेकों मठ, पीठ व विश्वविद्यालय दार्शनिक ज्योति को जलाने में संलग्न है।

भारतीय दर्शन ने भारतीय शिक्षा को एक सही दिशा प्रदान की तथा उसी के अनुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य पुनः जन्म लेकर द्विज बनता तथा पूर्णता की ओर अग्रसर होता है एवं अपने चतुर्दिक वातावरण को भी परिष्कृत करता है।

शिक्षा मनुष्य के मस्तिष्क को तार्किक क्षमता प्रदान करती है। अनेक कुप्रवृत्तियों व विकृत्तियों से बंधाकर जन एवं राष्ट्र कल्याण की भावना पैदा करती है। शिक्षा व्यक्ति के संस्कारों को शुद्ध करके उसके व्यवहार पर अमिट प्रभाव डालती है, ऐसा नहीं है कि अशिक्षित व्यक्ति में सोचने की शक्ति नहीं होती बल्कि शिक्षा उस शक्ति का विकास करती है इसीलिए कहा जाता है कि

अशिक्षित व्यक्ति की दो आँखें जबकि शिक्षित व्यक्ति की चार आँखें होती हैं। अशिक्षित व्यक्ति कूप मण्डूक बना रहता है जबकि शिक्षित व्यक्ति अपनी प्रज्ञा चक्षु से सारे संसार को देखता है।

शिक्षा मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बनाती है अन्यथा वह साक्षात् पशु है, जो काम करता है तथा पेट भरना जानता है।

साहित्य : संगीत कला–विहीन :

साक्षात् पशु : पुच्छ–विषाणहीन :

साहित्य संगीत कला आदि शिक्षा के अंग हैं। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिमा का विकास करते हैं। दुर्भाग्यवश आज शिक्षा का उद्देश्य केवल उदारपूर्ति यानी धन कमाना मात्र है। आज शिक्षित व्यक्ति स्वार्थपरता के अन्धकार में इस प्रकार घिरा हुआ है कि स्वयं उसका ही दम घुट रहा है।

वैदिक काल से ही शिक्षा का उमें सहृदयता दया स्नेह श्रद्धा ममता सहानुभूति जैसे गुणों का विकास करना ही रहा है परन्तु आज ये गुण कहीं लुप्त हो रहे हैं।

भारतीय संस्कृति व भारतीय शिक्षा असम्बद्ध हो रही है। अतः आज हमें छात्रों को मन को भारत की गौरव गरिमा से गुजारिश करना होगा तथा शिक्षा को भारतीय संस्कृति व दर्शन से सम्बद्ध कर एक अच्छे राष्ट्र व नागरिक का निर्माण करना होगा। किस भी देश का विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था से जुड़ा होता है। यदि शिक्षा की प्रगति होगी तब देश की प्रगति भी निश्चित है। हमें शिक्षा का गुणात्मक विकास करना होगा जो कि भारतीय दर्शन व धर्म पर आधारित हो तथा इसमें भारतीय दर्शन के मूल तत्व समाहित किये जायें ताकि एक अच्छे मानव का निर्माण किया जा सके। शिक्षा में दर्शन के कुछ मूल तत्व निम्न वर्णित हैः–

भारतीय दर्शन की लगभग सभी शाखाएँ आत्मा के अस्तित्व में विश्वास रखती है। अतः मानव जीवन का चरम लक्ष्य आत्मानुभूति है। सभी दर्शन कर्म नियम को मानते हैं जिसके अनुसार अच्छे कर्म करने चाहिए क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलता है।

कुछ को छोड़कर भारतीय दर्शन व संस्कृति का अधिकांश भाग ईश्वर में विश्वास रखता है। अतः ईश्वर के अस्तित्व में आस्था आवश्यक है।

भारतीय दर्शनों का प्रारम्भ निराशावाद से होता है परन्तु निराशा प्रारम्भिक अवस्था है अंतिम नहीं। आशावाद भारतीय दर्शन का अंतिम लक्ष्य है। भारतीय दर्शन नियन्त्रित आशावाद का पक्षधर है।

अनियन्त्रित आशावाद को खतरनाक माना गया है। छात्रों में संतुलित आशावाद को होना उचित है। संतुलित आशावाद का विकास सांसारिक निराशावाद की झलक से ही हो सकता है।

भारतीय दर्शन ये अनेकता में एकता का मूल तत्व है। राष्ट्रीय भावना के विषय में भारतीय साहित्य में अनेकशः वर्णन विद्यमान है।

भारतीय दर्शन कोरा सैद्धान्तिक विवेचन नहीं है। आज भी विभिन्न दर्शनों के अनुगामी हैं जिन्होंने दार्शनिक सिद्धान्तों को आचरण में उतारा है। अतः छात्रों को यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि वे सैद्धान्तिक ही न रहे बल्कि सिद्धान्तों को व्यवहार में भी उतारे।

अज्ञान को बन्धन का कारण माना गया है। भारतीय दर्शन में मोक्ष को जीवन का लक्ष्य माना गया है। अतः छात्रों की प्रवृत्ति विधायक होनी चाहिए और उनके ज्ञानोंपार्जन के प्रति सदैव रुचि होनी चाहिए।

शिक्षा में अनुकरण ही नहीं बल्कि चिंतन मनन को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

आत्मा वा अरे दृष्टव्यः मन्तव्य निदिध्यासित व्यश्च'' कहकर उपनिषदों ने भी मनन के महत्व को स्वीकार किया है।

भारतीय दर्शन ब्रहय अनुशासन को साधन मानता है। वास्तविक अनुशासन आत्म नियन्त्रण से संभव है। अतः इन्द्रिय निग्रह यम नियम संयम प्राणायाम आदि के द्वारा मन पर नियन्त्रण आवश्यक है।

यदि सभी छात्र स्वयं में इन गुणों को विकसित करें तथा शिक्षा में समाहित इन मूल तत्वों को ग्रहण करें तो हम फिर से भारतीय संस्कृति से ओत–प्रोत सभ्य व सुसंस्कृत मनुष्य बनकर एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे। इसके शिक्षा शिक्षक व शिक्षार्थी की सक्रिय भूमिका की अति आवश्यकता है।

श्रीमती मोनिका शर्मा
बी.एड. विभाग
अंग्रेजी प्रवक्ता

हिन्दुस्तान जिन्दाबाद

हिंदुस्तान जिंदाबाद, हिंदुस्तान जिंदाबाद
तेरी शान जिंदाबाद, तेरी पहचान जिंदाबाद
हिंदुस्तान जिंदाबाद, हिंदुस्तान जिंदाबाद।।
मेरे हिंदुस्तान तुझे दिल से सलाम है मेरा,
सब मुल्कों में सबसे प्यारा हिंदुस्तान है मेरा
हिंदी इस हिंदुस्तान की पहचान है,
तो वही हिमालय हिंदुस्तान का अभिमान
आओ हम सब मिल कर बोले,
हिंदुस्तान जिंदाबाद, हिंदुस्तान जिंदाबाद।।
हमारे मुल्क में सभी धर्म के लोग साथ रहते हैं
प्रेम और अमन की इस जगह को हिंदुस्तान कहते हैं
जहाँ माँ–बाप और गुरुओं का सम्मान होता है,
वहीं निगाहबान लोगों का अभिमान होता है।।
कतरा–कतरा बोले अब जिंदाबाद,
हिंदुस्तान जिंदाबाद, हिंदुस्तान जिंदाबाद।।
पवित्रता और सच्चाई जो हिंदुस्तान का आधार होता है।
इसलिये खुशियों की होती हिंदुस्तान में बहार है
जहाँ ईद और होली मिलकर साथ मनाते हैं,
वहीं इन मौहब्बतों को हम साथ सजाते हैं,
हम हैं हिंदुस्तानी और यही हमारा अभिमान,
जिंदाबाद, जिंदाबाद, हिंदुस्तान जिंदाबाद।।

lu k
ch-,M- f}rh; o"k

अल्फाज कहाँ से मैं लाऊँ
जो देश प्रेम के कद को नापे
वो अल्फाज कहाँ से मैं लाऊँ,
जो गाथा वीरों की समझा दे
वो अल्फाज कहाँ से मैं लाऊँ।
यूँ तो कोरे पन्ने भी बयाँ सब कर देते हैं

"सुविचार"

नदी में गिरने से कभी भी
किसी की मौत नहीं होती है
मौत तो तब होती है जब
उसे तैरना नहीं आता है।।
अच्छे लोगों की संगति में बुरे
से बुरा मनुष्य भी सही
आचरण करने लगता है।।
समस्या अंत की तरफ इशारा नहीं
करती बल्कि रास्ता दिखाती है।।
कुदरत ने हम सबको एक हीरा बनाया है
बस शर्त यह है कि जो घिसेगा
वह चमकेगा।।
शिक्षक और सड़क दोनों एक जैसे होते हैं
खुद जहाँ हैं ; वहीं रहते हैं ; मगर दूसरों
को उनकी मंजिल तक पहुँचा ही देते हैं।।
मंजिल चाहे कितनी भी ऊँची क्यों न हो ?
उस मंजिल का रास्ता हमेशा पैरों के नीचे
ही होता है।।
शब्दों की ताकत को कम नहीं आँकिये
क्योंकि छोटी–सी हाँ और छोटी–सी
ना पूरी जिन्दगी बदल सकती है।।

euh"kk jkuh
ch-,- r`rh; o"k

आज का हिंसात्मक दौर

जिन्दगी क्या है एक मीठा–सा तराना है
जिसे हम सभी को कभी रोके तो कभी हँसके गुनगुनाना है।
जिसे सिखा ना सका था कोई भी अब तक,
जिन्दगी ने सिखा दिये हैं हमको वो सबक।
ईश्वर ने तो जिन्दगी सभी को समान दी है,
तो क्यो आज इंसान ने ही इंसान की जान ली है।
जिन्दगी जैसी है हमारी, क्या दूसरों की भी वैसी नहीं है ?
जैसे लेते हैं हम साँसों क्या दूसरे भी वैसे लेते नहीं हैं ?
फिर क्यों हिंसा इतनी बढ़ती जा रही है
क्यों आज इंसान की किडनियों की कीमत, इंसान से भी अधिक आँकी जा रही है।
एक ओर तो मृत व्यक्तियों के भी श्राद्ध भारतवर्ष में मनाये जाते हैं
तो दूसरी ओर जीवित व्यक्तियों के शरीरों पर छुरे चलाये जाते हैं।
आखिर हो क्या गया है ? इंसानों को जो उनकी इंसानियत मरती जा रही है।
क्या कुछ इंसानों को देश की शांति रास नहीं आ रही है ?
जिस भारत देश में आज, कैसा ये आतंक छाया है ?
अब नहीं रही यहाँ वो प्राचीन संस्कृति
क्योंकि अब होती जा रही है यहाँ अपराधों की अति।
मारना, काटना, लूटना, खसोटना यही चारों ओर हो रहा है
फिर भी मेरा भारत महान, इस बात का शोर हो रहा है।
एक थे महात्मा गाँधी जिन्होंने इस देश को आजाद कराया था,
आजादी पाने के लिए हिंसा का नहीं अहिंसा का मार्ग अपनाया था।
उस गाँधी के आदर्शों को हमने ऐसे तोड़ा है,
कि फिर बन सके कोई गाँधी, ये अवसर भी ना छोड़ा है।
क्यों स्वयं को सुधारने के लिए किसी ओर की राह तकते हैं हम,
क्यों नहीं समझते कि सब कुछ कर सकते हैं हम।
इस अपराध की दलदल से हमको निकालने अब ना कोई मसीहा आयेगा,
बदलना होगा हमें स्वयं को ये संसार स्वतः बदल जायेगा।
जिन्दगी में हमारी सिर्फ प्रेम होना चाहिए
सबकी जिन्दगी में प्रेम ही घोलें यही प्रयत्न होना चाहिए।
प्रेम से ये जिन्दगी प्रेममय हो जायेगी
फिर हमारी जिन्दगी में अहिंसा के लिए जगह ही कहाँ रह जायेगी।
तो आओ आज हम सभी मिलकर लें यह संकल्प
स्वार्थ का नहीं प्रेम का, हिंसा का नहीं अहिंसा का धारण करेंगे जीवन में व्रत।

रेखा
असिस्टैन्ट प्रोफेसर
हिन्दी

सुविचार

1– सही सोच आपको सफल बनाती है और गलत सोच आपको असफल बनाती हैं।

2– पसीने की स्याही से जो लिखते हैं अपने इरादों को, उनके मुकद्दर के पन्ने कभी कोरे नहीं होते।

3– जितना बड़ा सपना होगा तकलीफें उतनी बड़ी होंगी और जितनी बड़ी तकलीफें होंगी उतनी बड़ी कामयाबी होगी।

4– शिक्षक के बिना आप सभ्य और समृद्ध समाज की कल्पना नहीं कर सकते

5– शिक्षक और सड़क दोनों एक जैसे होते हैं। खुद जहाँ हैं, वहीं रहते हैं मगर दूसरों को उनकी मंजिल तक पहुँचा ही देते हैं।

6–व्यक्ति के जीवन में अनुशासन सफलता का मार्ग है।

7– जीत उन्हीं की होती है जिनमें धैर्य, शौर्य और साहस होता है।

सना
बी.एड. द्वितीय वर्ष

चन्द्रशेखर आजाद

भारतदेशस्य महान् क्रान्तिकारी चन्द्रशेखरस्य जन्म 23 जुलाई 1906 तमे दिनांके मध्य प्रदेश राज्ये अभवत्। तस्य पितुः नाम पण्डितः सीतारामः तिवारी आसात्। मातुः नाम जगरानी आसीत्। पितुः द्वारपालस्य कार्य करोति स्म। तस्य बाल्यावस्था दरिद्रावस्थायां व्यतीता। 14 वर्षवयसि सः वाराणसी मध्ये स्थित संस्कृतमहा विद्यालये छात्ररुपेण प्रविष्टः।

तस्मिन् समये देशे स्वतन्त्रताय संघर्ष प्रचलित स्म अतः सः अपि तेषां सम्मिलितः भवति। स्वतन्त्रतान्दोलन प्रसंगे सः बन्धकः अभवत् अनन्तरं न्यायाधीशस्य समक्षं विचाराय प्रेषितः। तदा सः स्वस्य नाम ''आजाद'' पितुः नाम ''स्वतन्त्रा'' च गृहसंकेतः कारगारमेति परिचयं ददाति।

कालक्रमेण तेन भारतीय सामाजिकः जनतन्त्रराज्यस्य सैन्ये सम्मिलितं भूत्वा प्रचण्ड हिसात्मकं कार्याणि कृतानि।

तेषु काकोरी षड्यन्त्रः 1926 वाइसरायस्य रेलयानमुपरि आक्रमणं तथा राज सभायां विस्फोटक क्षेयणम् प्रमुख मानि।

लाला लाजपत राय महोदयस्य प्राणहन्तारं सोन्दर्सनामधेय शासकोपरि आक्रमणं, लाहौर काण्ड इति अनेकानि क्रान्ति कार्याणि आंग्ल सर्वकारं दोलयन्सि स्मः। अतः आंग्ल सर्वकारेन तं जीवितं वा मृतं वा गृहीतुम् अनेके पुरस्काराः घोषिताः। सः आरक्षकस्य हस्ते जीवितं कदापि न आगमिस्यामक इति तस्य प्रतिज्ञा आसीत्।

आजादमहोदयाय झाँसीनगरम् अति प्रियम् आसीत्। सः प्रायेण तत्र एव निवसति स्म। 1929 तमे शेषपर्यन्ते तु बहवः क्रान्किारिणः आंग्ले गृहीताः। 1930 तमे सम्पूर्ण क्रान्ति कारीद लस्य पतनमभवत्।

भगतसिंहस्य अपि कण्ठपाशः जातः। आजादः व्यथितः भवति स्त्र सः स्वकार्य समिति विसर्जन विचारयति तदन्तरं सः दिल्ली नगरं गवान् तत्र योजना इति निर्माण अकरोत्। तत्र स्थिति सम्यक नासीत्। अतः सः कानपुर नगरं अगच्छत्। कानपुर नगरं अपि संतोषः न जातः। अतः इलाहाबाद नगरं आगच्छत्।

एकदा 27 षेबुआरी 1931 तमे इलाहाबादस्य आल्फ्रेड उद्यामे आसीत् तदा आरक्षके सह गुलिकायुद्ध जातः। सः आरक्षकाणां हरते गन्तुं न इच्छति स्म अतः स्वभुखुण्डिकया गुलिकां मारयित्वा स्प प्राणं व्यक्तवान् स्वनाम् ''आजाद'' इति सार्थकं अभवत्।

iwtk 'kekZ

पापा

बेटी पुकारे पापा तुम कहाँ चले गए
मम्मी, दादी, दादा सब रोते हैं तुम कहाँ गए ....
लौट आएँगे आप जल्दी ऐसा कहकर कहाँ गए
बेटी पुकारे पापा तुम कहाँ चले गए ....
फुल फुलिया सड़क अपने कहते हैं,
बम से उड़ा दिया
कैसे पढ़ूँ और क्या करुँ जो भविष्य
मेरा चुरा लिया
लौट आओ पापा घर अपने
अब तुम हम सब के लिए
बेटी पुकारे पापा तुम कहाँ चले गए ....

lkfu;k jkechj
ch-,- iFke lseLVj

भावनाओं का महत्व समझें

हम सब खुद को यह बताते रहते हैं कि हम एक व्याकुल, एक बेहद मुश्किल दौर में जी रहे हैं पर क्या इतिहास में कोई ऐसा दौर हुआ जो चिन्ताओं, कठिनाइयों और समस्याओं से मुक्त रहा हो ? हम इस हकीकत से मुँह नहीं चुरा सकते कि दुनिया में जीवन का मतलब ही कठिनाइयों से निपटना है। हाँ ! इनसे कैसे निपटें, यह चुनने का विकल्प हमारे पास होता है। नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ नकारात्मक भावनाओं से निकलती हैं और ऐसी भावनाओं ने हमारे भीतर एक इतिहास रच रखा है। यहाँ तक कि हम किसी पुरानी चिन्ता या हताश से घिरे नहीं होते तब भी हमारी प्रतिक्रियाएँ पुरानी ही होती हैं क्योंकि वे हमारी भावनाओं के इतिहास से उपजती हैं।

सिर्फ नकारात्मक भावनाएँ ही हमारे भीतर इतिहास नहीं गढ़ती बल्कि सकारात्मक भावनाओं का भी अपना इतिहास होता है पर यह नकारात्मक भावनाओं जितना नहीं होता। सकारात्मक भावनाएँ सुखद अनुभवों के द्वार खोलती हैं ; जबकि नकारात्मक भावनाएँ गतिरोधों को जन्म देती हैं। भय मस्तिष्क को सुन्न कर देता है, आनन्द मन को जागृत करता है। यह एक विकृत मनोवैज्ञानिक विशेषता है जो लोगों को यह मानने के लिये तैयार करती है कि भय उपयोगी है, वास्तव में ऐसा नहीं है। ऐसा एक प्रतिशत से कम समय होता है जब कोई लड़ाई या आक्रामक प्रतिक्रिया हमें सुरक्षा का एहसास कराती है बाकी समय में हम बस तनावों का जवाब दे रहे होते हैं। यही कारण है कि ज्यादातर लोग लगातार बुरी तरह से चिन्ता की स्थिति में रहते हैं और कुछ भी बुरा घटने पर उनकी चिन्ता भड़क उठती है। अक्सर उस बुरी घटना के सीधे शिकार आप नहीं होते, वे किसी और के साथ घटती है।

इस विकल्प में सकारात्मक भावनाओं को प्राथमिकता में रखकर देखिए। इसके लिए आपको खुशी, सहानुभूति, करुणा, आश्चर्य और विस्मय को महत्व देना होगा। जब आप सकारात्मक भावनाओं को उनके वास्तविक मूल्य के लिये अहमियत देते हैं तो आपका आन्तरिक भावनात्मक जीवन नाटकीय रुप से बदलने लगता है।

दरअसल, हम सभी के अन्दर कई 'मैं' मौजूद हैं और स्थिति के अनुरुप हम एक 'मैं' से दूसरे 'मैं' तक शिफ्ट होते रहते हैं लेकिन यहि आप कुछ ठहरकर इन अलग–अलग 'मैं' को स्वयं एक नाम देते हैं तो आप अपने सामाजिक 'मैं', पारिवारिक 'मैं', अन्तरंग 'मैं' आदि को पहचान लेंगे। फिर भी ये सभी आपके सच्चे 'मैं' नहीं हैं, ये मन–निर्मित 'हैं'। आपका सच्चा 'मैं' सरल जागरुकता में मौजूद है। यह वह है जो आप तब होते हैं जब आप बिना किसी एजेन्डे के होते हैं इसीलिए आप सकारात्मक भावनाओं के महत्व को समझें।

डॉ. सुषमा रानी
समाज शास्त्र विभाग
असिस्टैन्ट प्रोफेसर

वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय।।

सन्त कबीर जो आज से लगभग 6 शताब्दी पूर्व विद्यमान थे। भक्तिकाल की निर्गुण शाखा की सन्त काव्यधारा के प्रवर्तक, कबीर अपनी बानियों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी जो प्रासंगिकता 6 शताब्दी पूर्व थी वह आज भी है। कारण है उनके द्वारा अपने साहित्य में ऐसे विषयों का समावेश जो युग सापेक्ष है।

आज के समय में बढ़ता साम्प्रदायिक विरोध, अन्धविश्वास, बाह्याडम्बर व अन्य अनेक ऐसे कारण हैं जो कबीर जैसे व्यक्तित्व की पुनः आवश्यकता को दर्शाते हैं।

आज का समाज दिखावा पसन्द हो गया है। यह दिखावा हर स्तर पर है। वह चाहे धार्मिक स्तर हो या सामाजिक स्तर। सभी जगह व्यक्ति दिखावा ही पसन्द करते हैं। सन्त कबीर ने इन्हीं बाह्य–आडम्बरों का विरोध करते हुए हृदय की शुद्धता के साथ कर्म करने की सीख दी है। वे हिन्दुओं की मूर्ति पूजा पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं –

पाथर पूजै हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।
तातै या चाकि भली, पीस खाए संसार।।

सन्त कबीर केवल हिन्दुओं के लिए ही ऐसा नहीं कहते वरन् वे मुसलमानों के लिए भी कहते हैं –

''काँकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई बनाय।
ता मपै चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।।''

हिन्दू और मुस्लिम दोनों की माला फेरने के सम्बन्ध में वे कहते हैं –

''माला फेरत जुग भया गया न मन का फेर।
करका मनका डारि दै, मन का मनका फेर।।

हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही अपने–अपने ईश्वर, अल्लाह के नाम पर झगड़ते रहते हैं कभी–कभी तो यह झगड़ा हिंसात्मक रुप ले लेता है। हिन्दू और मुस्लिमों दोनों की इसी प्रवृत्ति के लिए सन्त कबीर ने कहा है –

''सन्तौ देखौ जग बैराना
हिन्दू कहे मोहि राम पियारा, तुर्क कहै रहमाना
आपस में दोउ लड़ि–लड़ि मुए, गरम न कोउ जाना।''

आज के समय में हर कोई सुन्दर दिखना चाहता है। सुन्दर दिखने के लिए व्यक्ति न जाने कितना अपव्यय कर देता है। ऐसे ही हाड़–मांस से निर्मित शरीर को सजाने, सँवारने और उस पर घमण्ड करने वालों के लिए सन्त कबीर कहते हैं –

हाड़ जलै ज्यूं लाकड़ी, केस जलै ज्यूं घास।
सब तन जलता देखि करि, भया कबीर उदास।।

''हर व्यक्ति दूसरों में दोष ढूँढता रहता है। वह अपने अन्दर झाँककर कभी यह नहीं देखता'' कि उसके अन्दर भी कोई दोष हो सकता है। कबीर दास जी ने अपने अन्दर झाँका तो पाया कि जिस बुरे की तलाश में वह निकले थे वो बुरा तो उनके अन्दर ही है–

''बुरा जो देखन मैं चला, बुरा ना मिलिया कोय।
जो मन देखा आपना, मुझसे बुरा ना कोय।।''

सन्त कबीर कहते हैं कि कोई व्यक्ति कितना ही धनी या ज्ञानी क्यों न हो जाये। अगर उसका धन और ज्ञान दूसरों के काम नहीं आ सकता तो फिर वह सब व्यर्थ है –

बड़े हुए तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कबीर ने अपने युग में जो कुछ देखा उसी के सुधार हेतु अपने उपदेश दिये। उन्होंने बाह्याडम्बर के स्थान पर हृदय की शुद्धता, शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा व्यवहारिक ज्ञान, ईश्वर से पहले गुरु, देह अहंकार के स्थान पर देह नश्वरता, परदोष दर्शन के स्थान पर आत्मदोष दर्शन को महत्व दिया। धर्म, जाति और सम्प्रदाय के नाम पर लड़ने वालों को सौहार्द और प्रेम से रहने की सीख दी। साम्प्रदायिक तनाव आज भारतवर्ष की सबसे बड़ी समस्या बना हुआ है। ऐसे में आवश्यकता है कि कबीर जैसे व्यक्तित्व की जो लोगों को अपनी शिक्षाओं के द्वारा सौहार्द और प्रेम से रहने की सीख दे सके।

रेखा
एसिस्टैन्ट प्रोफेसर
हिन्दी

''कविता''

इतिहास हूँ गवाही हूँ, प्राचीन भारत की –
गौरव गाथा हूँ, वीर जवानों और देश भक्तों की –
लिए हूँ आँचल में कहानी प्राचीन विचारों की –
इतिहास हूँ गवाही हूँ, प्राचीन भारत की –
अमर कथा हूँ, पुराण रामायण और महाभारत की –
लिए हूँ आँचल में कहानी प्राचीन विचारों की –
इतिहास हूँ गवाही हूँ, प्राचीन भारत की –
सत्यनिष्ठ हूँ, आयी थी झुके शीश वीरों के
उठाने वीरांगना रानी झाँसी की –
लिए हूँ आँचल में, कहानी प्राचीन विचारों की –
इतिहास हूँ गवाही हूँ प्राचीन भारत की –
परिस्थिति हूँ, कितने हुए शहीद कितनों के बलिदानों की –
लिए हूँ आँचल में कहानी प्राचीन विचारों की –
इतिहास हूँ गवाही हूँ प्राचीन भारत की –
घटना हूँ, उस शौर्य पराक्रम और तिरंगे के मान सम्मान की –
लिए हूँ आँचल में कहानी प्राचीन विचारों की –
इतिहास हूँ गवाही हूँ, प्राचीन भारत की –
वेदना हूँ, पीड़ा हूँ, युद्ध भूमि में हुए शहीद योद्धाओं की –
लिए हूँ आँचल में कहानी प्राचीन विचारों की –
इतिहास हूँ गवाही हूँ, प्राचीन भारत की –
गवाही हूँ, प्राचीन भारत की

शिवानी खानम
प्रवक्ता
इतिहास विभाग

सड़क सुरक्षा कविता

हम अपनों से एक वादा करेंगे
हादसों से खुद को सुरक्षित रखेंगे
सड़क पर वाहनों के चलते समय
खुद की सुरक्षा का पूर्ण दायित्व निभाएँगे
शराब पीकर कभी वाहन नहीं चलाएँगे
यातायात के सभी नियमों का पालन करेंगे
हादसों से खुद को सुरक्षित रखेंगे
चाहे भले कितनी भी जल्दबाजी हो
पर हम संयम, धीरज धरेंगे
हम अपनों से एक वादा करेंगे
हादसों से खुद को सुरक्षित रखेंगे।

नाज़मा कस्सार
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर
अंगेजी

संतुलित भोजन का अर्थ

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार ''संतुलित भोजन वह है जो शरीर को वृद्धि विकास कार्य तथा स्वास्थ्य संरक्षण के लिए आवश्यक तत्वों को सम्मिलित करता है, जो कि उसमें मात्रा व गुणों में संतुलित रुप से पाए जाते हैं।

''जो भोजन शरीर की ऊर्जा, निर्माणक एवं सुरक्षात्मक तत्वों की उचित मात्रा–पूर्ति करे संतुलित भोजन कहलाता है।

अतः कहा जाता है कि ''जिसमें भोजन के आवश्यक तत्व जैसे – प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व विटामिन, पानी आदि उचित गुण व उचित मात्रा में उपस्थित हों संतुलित भोजन कहलाता है।

संतुलित भोजन का महत्व –

संतुलित भोजन मनुष्य की लंबी आयु के लिए आवश्यक होता है। संतुलित भोजन व्यक्ति का समुचित विकास कर उसके स्वास्थ्य स्तर को ऊँचा उठा सकता है। संतुलित भोजन के अभाव का प्रभाव शिशुओं, गर्भवती महिलाओं व स्तनपान कराने वाली महिलाओं तथा अधिक परिश्रम करने वाले व्यक्तियों पर विशेष रुप से पड़ता है। अधिकतर भारतीय नागरिक गाँवों में निवास करते हैं और मुख्य रुप से उनका भोजन अनाज ही होता है।

ज्योति
नागरिक शास्त्र विभाग
गृह विज्ञान

शिक्षा क्या है ?

Education is a God gift which is provided to some or other one

इससे मेरा तात्पर्य है कि शिक्षा भगवान का वह तोहफा है जो किसी–किसी को नसीब होता है अर्थात् जो व्यक्ति शिक्षा के प्रति जागरुक होते हैं वे ही सही मायने में शिक्षा के पात्र होते हैं और जो शिक्षा के प्रति उदासीन होते हैं वे व्यक्ति हर क्षेत्र में पिछड़ जाते हैं।

शिक्षा वह माध्यम है जो मनुष्य का खान–पान, रहन–सहन और बोल–चाल का तरीका सिखाती है अर्थात् वह व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है। अगर व्यक्ति शिक्षित होगा तो वह समाज में रहने वाले अन्य अशिक्षित व्यक्ति से जरुर भिन्न होगा।

शिक्षित व्यक्ति देश की उन्नति का माध्यम होता है जबकि अशिक्षित व्यक्ति की सोच सीमित होती है अर्थात् वह जो भी कार्य करता है वह देश की उन्नति, परिवार की उन्नति का भागीदार होता है। शिक्षित व्यक्ति किसी भी माहौल में अपने आपको ढाल लेता है चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हो वह निरन्तर प्रयासरत रहता है। शिक्षा की कोई सीमा नहीं होती। शिक्षा जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखी जा सकती है।

f'k{kk dk egRo

शिक्षा एक शास्त्र है :– अपने कर्तव्य का पालन करने के लिये।
शिक्षा एक शास्त्र है :– दूसरों की सहायता करने के लिये।
शिक्षा एक शास्त्र है :– अपने आदर्शों के सम्मान के लिये।
शिक्षा एक शास्त्र है :– बेरोजगारी को समाप्त करने के लिये।
शिक्षा एक शास्त्र है :– देश की उन्नति के लिये।
शिक्षा एक शास्त्र है :– गरीबी समाप्त करने के लिये।
शिक्षा एक शास्त्र है :– समाज से भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिये।
शिक्षा एक शास्त्र है :– जुर्म का विरोध समाप्त करने के लिये।
शिक्षा एक शास्त्र है :– समानता का अधिकार प्राप्त करने के लिये।
शिक्षा एक शास्त्र है :– अपनी संस्कृति की रक्षा करने के लिये।

vtyh lke
,e-,- Qkbuy

माँ बाप

माँ बाप का प्यार और माँ बाप का रिश्ता
एक ऐसा रिश्ता है हम कितना
भी दूर हों कितना भी लड़ झगड़ लें
लेकिन प्यार कभी खत्म नहीं होता
कई बार तो हम उनकी बातों का
बुरा मान जाते हैं उनसे रुठ भी जाते
हैं लेकिन उनकी तरफ से ऐसा कुछ
नहीं होता, बेशक एक थप्पड़ मार दें
लेकिन उनकी तरफ से प्यार कभी
कम नहीं होता हाँ मानती हूँ रोकते
हैं टोकते हैं लेकिन कभी गलत
नहीं सोचते हैं मैं इनके बारे में
जितना बोलूँ उतना कम है क्योंकि
माँ बाप भगवान का दूसरा रुप है
मेरे लिए मेरे माँ बाप मेरी मोहब्बत
मेरा प्यार मेरा हर लम्हा मेरी हर
शुरुआत हमेशा रहेंगे मेरे माँ बाप

lkfu;k jkechj
ch-,- iFke leLVj

अनमोल वचन

1. सफलता का सूत्र – सही चीज, सही तरीके से, सही समय पर करें।
2. बिना उत्साह के कभी किसी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती।
3. ज्ञान, धन से सदैव ही श्रेष्ट है, क्योंकि धन की तो रक्षा करनी पड़ती है और ज्ञान मनुष्य की रक्षा करता है।
4. हमारे विचार का स्तर ही हमारी निजी प्रसन्नता का स्तर निर्धारित करता है।
5. जीवन में सफलता अपनी सोच सकारात्मक रखने से मिलती है।
6. आत्म बल ही विपत्ति में सबसे बड़ा सहायक होता है।
7. विनम्रता से व्यक्तित्व की शोभा कई गुना बढ़ जाती है।
8. प्रसन्नता जीवन का अमूल्य उपहार है।
9. मानसिक शांति से बड़ा सुख कोई और नहीं हो सकता।
10. अनीति के रास्ते पर चलने वाले का बीच राह में ही पतन हो जाता है।
11. उस सुख का त्याग कर दो जो किसी के दुख का कारण बने।
12. दूसरों को बदलने का प्रयत्न करने के बजाय स्वयं को बदल लेना ही बेहतर है।
13. यह आशा मत कीजिये कि दूसरे आपसे प्यार करें व आप पर ध्यान दें। इसके बजाय आप दूसरों से प्यार करें व उनका ध्यान रखें।

सोनिया
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

दहेज प्रथा

दहेज प्रथा एक सामाजिक कोढ़ है। दहेज प्रथा आज एक विराट एवं गम्भीर रुप धारण कर चुकी है। दहेज प्रथा के कारण महिलायें सम्पूर्ण रुप से असुरक्षित एवं अस्वतन्त्रवादी हैं ; जिस कारण वे समाज में रखे गये किसी भी सामूहिक कार्यक्रम या आयोजन या सम्मेलनों आदि में हिस्सा नहीं ले पाती हैं। उन्हें कमजोर बनाया जाता है जिससे वह समाज में रखे गये किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा न बन सके। दहेज प्रथा के कारण महिलायें न तो सम्पूर्ण शिक्षा ग्रहण कर पाती है और न समाज में अपना कोई स्थान या अधिकार रख पाती है।

कंचन सोम
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

समय अनमोल

समय है एक अनमोल जीवन,
समय है एक अनमोल पहलू,
अगर समय निकल गया तो ये,
समझो की समय के साथ,
सब कुछ निकल गया।
समय बर्बाद करने से केवल,
मनुष्य का जीवन बर्बाद होता है,
और कुछ नहीं,
इसलिए समय की कद्र करना सीखें।

निकिता राय
बी. कॉम द्वितीय सेमेस्टर

गर्मी

जब भी होती है गर्मी
तभी होती है हमारे में नरमी
आ जाती है जब ये गर्मी
बहुत सताती हमें ये गर्मी
बार–बार नहाते हैं जब हम
तो मिलता है सुकून जब–जब
बहुत रुलाती है ये गर्मी
गर्मी में जब करते परिश्रम
तो आता है हमें पसीना नम–2
ये गर्मी का मौसम है आया
सबको इसने बहुत सताया
आसमान से आग है बरसे
सूरज ने फैलायी माया
कूलर, पंखे, ए.सी. चलते
अब ये दिन भी जल्दी न ढलते
जून का जो आया महीना
टप–टप करके बहे पसीना
गर्मी में जब आता आईसक्रीम वाला
तो सब गली के बच्चे शोर मचाते
गर्मी में जब थोड़ी दूर पैदल चलते
तो चलते–चलते हो जाते हैं दुबले–पतले
सूरज की ये देखो माया
सबको इसने खूब सताया और रुलाया
गर्मी में नदियों या तालाब का जल सूख जाता
तब हंस और पक्षी भटक–भटक जाते
जब उनको न मिलता कोई ठिकाना
तो ये खम्भे पर लटक–लटक जाते
हमने तो इस गर्मी को न बुलाया
जो किसी के मन को न भाया
जब दोपहर में सूरज की ज्यादा गर्मी पड़ती
तो गलियों में कोई–कोई भी
नहीं पसीने से झुलसता पड़ता
गर्मी में पड़े–पड़े हो जाते हैं बोर
तब आए सुस्ती और नींद बोर
नहाकर भी गर्मी में बेनहाये हो जाते
ये सब गर्मी में मुमकिन हो जाते
जब बिजली भाग जाती तो
हम पसीने से हो जाते हैं गीले
जो काम न हो हम सब से
और हम पल–पल ढीले हो जाते
कभी गलती से जो मौसम बदले
पाकर बारिश का पानी फिर
सब छनीले होते।
आया है जब ये गर्मी का मौसम
तो बहुत सताता बहुत रुलाता
है ये गर्मी का मौसम।।

फरहीन
बी.ए. प्रथम वर्ष

'असली खुशी'

जिस खुशी को हम बाहर तलाश रहे होते हैं, वह हमारे भीतर ही छिपी होती है। खुशी माँगने से नहीं मिलती वह तो महसूस करने की चीज है। उसे अपने भीतर झाँककर तलाशना होता है। कभी–कभी हमें छोटी–छोटी चीजों में छोटी–छोटी बातों में खुशी मिल जाती है लेकिन जो खुशी दूसरों को खुश करने में होती है। उसका आनन्द अलग है। वो खुशी दुनिया की सबसे अलग खुशी है। जब हम दूसरों को खुश रखेंगे तब हमें खुशी मिलेगी।

आरजू
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

बेटी अभिशाप नहीं

बेटी हूँ पापा मैं आपकी,
बेटी ही मुझको रहने दो,
ना समझो अभिशाप मुझे,
वरदान ही मुझको रहने दो,
आसमानों में उड़ने दो,
हवाओं संग मुझको बहने दो,
कमजोरी नहीं ताकत हूँ आपकी,
यूँ कोख में न मुझको मरने दो
मेरी भी जिंदगी है, मेरे सपने हैं,
मेरे सपनों में रंग मुझको भरने दो
हौंसला अफजाई करो मेरा,
न यूँ बुरी नजर से मुझको डरने दो
मैं भी भाई सा नाम कमाऊँगी,
बाहर मुझको भी पढ़ने दो
ये सोच समाज की छोटी है,
यही बड़ी कुछ मुझको करने दो
संघर्ष बड़ा अभिमानी है,
बस मुश्किलों से मुझको लड़ने दो
और भी मजबूत बन जाऊँगी,
बस संघर्षों में मुझको पलने दो
तूफानों से लड़ जाऊँगी मैं,
एक हुँकार तो मुझको भरने दो
जग को बौना/छोटा साबित कर दूँगी मैं,
बस एक बार मुझको लड़ने दो
साँसें बहुत मजबूत हैं मेरी,
सपनों की सीढ़ियाँ मुझको चढ़ने दो।
ये दुनिया भी याद करेगी मुझे,
बस अकड़ कर मुझको चलने दो।
नेकी की राह पर चलूँगी सदा,
बस एक कदम तो मुझको बढ़ने दो।
बेटी हूँ मैं आपकी,
बस मुझे आगे बढ़ने दो

शुऐबा कुरैशी
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

समय की कीमत

समय बहुत बलवान होता है। जो बीत जाता है वो वापस नहीं आता है। हमें समय का एक–एक मिनट का प्रयोग करना चाहिए समय बहुत ज्यादा रफ्तार से जाता है। जो एक बार चला गया वो वापस नहीं आता क्योंकि समय का एक–एक पल महत्वपूर्ण है। समय की कीमत बहुत ज्यादा है। आज के समय में समय निकल जाता है। हम फिर बाद में पछताते हैं। समय की कीमत को हमें समझना चाहिए।

अंशु
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

समय की कीमत

आज कल दुनिया में मनुष्य खुद में इस तरह व्यस्त हो गए हैं कि वो जानते ही नहीं उन्हें अपनी जिंदगी में क्या करना है, उनका लक्ष्य क्या है ? इधर–उधर के कामों में अपना समय नष्ट कर रहे हैं जो मनुष्यों के लिए बिल्कुल सही नहीं है। समय का दुरुपयोग ज्यादा कर रहे हैं। पढ़ाई के क्षेत्र में भी आधे से ज्यादा छात्र अपना समय व्यर्थ करते हैं। समय नष्ट होने का कारण सोशल मीडिया, टी.वी. है। सोशल मीडिया का फायदा और नुकसान दोनों हैं पर इससे मनुष्य ज्यादा उसका दुरुपयोग कर रहे हैं। उसका सदुपयोग नहीं हो रहा है और ये सब समय नष्ट होने का कारण हैं।

स्वाति
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

दहेज प्रथा

हमारे समाज में दहेज प्रथा की बड़ी भूमिका होती जा रही है। इस प्रथा को समाज में बहुत ही गलत माना जाता है। कुछ लोग विवाह में अत्यधिक धन लगा देते हैं जिसके कारण वे बहुत ज्यादा निर्धन हो जाते हैं। वे आत्म हत्या कर लेते हैं। ज्यादा माता–पिता को दुःख न पहुँचे इसकी वजह से लड़कियाँ अपनी जान भी गँवा बैठती हैं।

अजय पाल सिंह
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

भ्रष्टाचार

आज के समय में भ्रष्टाचार बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार का अर्थ है– भ्रष्ट आचरण अर्थात् थोड़े से पैसों के लिए हमारी पूरी अर्थव्यवस्था भ्रष्ट होती जा रही है। हमारे आस पास भ्रष्टाचार बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा है। बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अनेक उपाय भी किए जा रहे हैं। भ्रष्टाचार एक आम बात बन गई है। नेता से लेकर मन्त्री तक सब भ्रष्ट हैं। हमें अपना छोटा–सा काम करवाने के लिए भी रिश्वत देनी पड़ती है। भ्रष्टाचार को रिश्वत भी कहते हैं। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा जहाँ भ्रष्टाचार व्याप्त न हो। हर क्षेत्र भ्रष्ट होता जा रहा है।

वैशाली
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

नारी शिक्षा

नारी का जन्म एक वरदान है।
नारी की शिक्षा एक अभियान है।
नारी को शिक्षित बनाओ।
यह सम्मान पाओ।
नारी का सम्मान करोगे।
तभी आप आगे बढ़ोगे।
नारी है एक वरदान।
जिसका करना है हमें सम्मान।

रजनी
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

अतिथि देवो भव :

कहते हैं कि अतिथि भगवान का रुप होते हैं। कहते क्या सभी ये मानते भी हैं। जब घर अतिथि आते तो घर की रौनक अलग सी ही होती है। कभी–कभी तो वे भगवान के रुप में ही शुभ या फिर अशुभ समाचार लेकर पधारते हैं। कोई उनके जाने के घण्टे या दिन देखता है। ये कब घर से जायेगा और कोई तो ये पूछ ही लेता है कि आप कितने दिन के लिए आए हों। अगर अतिथि कुछ ही समय के लिए आता है तो ठण्डा लेंगे या गर्म नहीं पूछते। ये पूछता है कि आप खाकर आये हो या जाकर खाओगे। अरे ! इतना सुनने के बाद वो अतिथि देवो भव : कैसे हुआ ? मेरी समझ में तो कभी नहीं आया। जो मनुष्य अतिथि से ये सवाल करते हैं क्या वे मनुष्य कभी मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे में जाकर ये कहता है कि कितने का प्रसाद अर्पण करुँ। कितनी बार माथा टेकूँ। फिर अतिथि से ऐसे सवाल ही क्यों करते हो। हमें ये कहना चाहिए :–

- कि रास्ते में कोई दिक्कत, परेशानी तो नहीं हुई।
- खाना तैयार है खाना खा लीजिए।
- सफर में थक गये होंगे, आप आराम कर लीजिए।
- जब तक मन हो तब तक घूमो, आराम से रहो। तब कहेंगे अतिथि देवो भव :

स्वाति
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

मेरा सुनहरा बचपन

वो भी क्या दिन थे,
जब हालात हमारे संग थे।
बच्चे नहीं थे हम तो,
आसमान में उड़ती पतंग थे।
हमारी हरकतों से, यहाँ तक,
हमारे माँ–बाप भी तंग थे।
दिन भर चाहे माँ कितना ही रुठे,
शाम को हँसते हम संग–संग थे।
पिता की मार का डर,
लेके घूमते हम संग थे।
अध्यापक की मार से,
रहते हम पूरे दिन तंग थे।
दोस्तों के साथ पूरे दिन,
रहते हम मस्त–मलंग थे।
वो सुनहरे दिन थे, जब हम,
किसी के जीवन में भरते रंगीन तरंग थे।
सभी बड़ों के दिल में रहते थे,
अपने प्यार से भरते उनमें उमंग थे।
वो भी क्या दिन थे,
जब हालात हमारे संग थे।

ज्योति
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

अजी गौर फरमाइये साहब

हम आशिक नहीं वो शायर हैं।
जो शायरी करते नहीं सिर्फ कह जाते हैं।
हम वो बन्द किताब नहीं, बस
हम वो खुली किताब हैं।
जो सिर्फ पलटे ही नहीं,
पढ़े भी जाते हैं।
या शायर के चेहरे भी पढ़ लो
फिर वो किताब ही क्या पढ़े अरे हमने तो पूरा
चेहरा ही पढ़ लिया जनाब

स्वाति
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

समय की कीमत समझें

हम अपने जीवन में अगर पैसे बर्बाद करेंगे तो हम अपना पैसा बर्बाद करेंगे, यदि हम जीवन में समय बर्बाद करेंगे तो हम अपने जीवन का एक अहम हिस्सा खो देंगे। समय ही सब कुछ है समय कभी भेदभाव नहीं करता। सभी के पास एक–सा ही होता है फिर चाहे वह गरीब हो या अमीर। समय पर किसी का जोर नहीं चलता। समय सभी को समान मिलता है ; जिन्दगी बदलने के लिए। परन्तु जिन्दगी दोबारा नहीं मिलती, दोबारा समय को बदलने के लिए। समय ही धन है जो इसे सोच समझ कर खर्च करता है वही सफल होता है। उस इंसान को हर चीज समय के साथ मिल जाती है, जो समय के साथ चलता है समय से आगे नहीं। समय को अपना बनाने में भी समय लगता है।

प्रिया सोम
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

पक्षी

आओ मिलकर पक्षी बचाएँ
मीठी–मीठी बोलियाँ सुनाएँ
इनकी चहचाहट से हम मुस्काएँ
क्यों न हम पक्षी बचाएँ
इन पर आती हमको दया
फिर क्यों दिखाएँ इनको ईर्ष्या
कितने रंग–बिरंगे पक्षी
काले, लाल, हरे पक्षी
कितने सुन्दर ये पक्षी
देखो कितने चहक रहे हैं
कोयल हमको गीत सुनाती
चिड़ियाँ चीं–चीं करती जाती
आसमा में ऊँचा उड़ती
देखो कितनी लम्बी सैर ये करती
जब सुबह–सवेरे ये चहचहाते
मानो सोतो को हैं जगाते
जब हम इनको खाना खिलाते
दाना खाकर ये उड़ जाते।।

अफसा
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

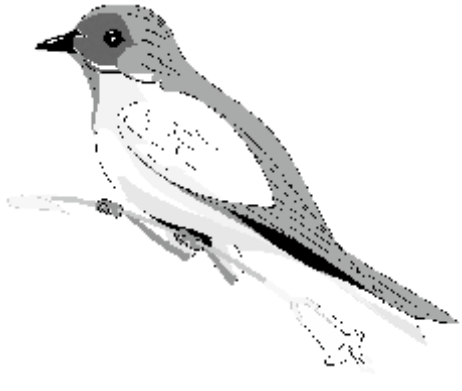

हिन्दी भाषा

प्रकृति की पहली ध्वनि ऊँ है
मेरी हिन्दी भी इसी ऊँ की देन है
देवनागरी लिपि है इसकी, देवों की कलम से उपजी
बांगला, गुजराती, भोजपुरी, डोगरी, पंजाबी और कई
हिन्दी ही है इन सबकी जननी।
प्रकृति की हर इक चीज अपने में सम्पूर्ण है
मेरी हिन्दी भाषा भी अपने में सम्पूर्ण है
जो बोलते हैं वही लिखते हैं
मन के भाव सही उभरते हैं
हिन्दी भाषा ही तुम्हें, प्रकृति के समीप ले जाएगी
मन की शुद्धि, तन की शुद्धि, सहायक यह बन जाएगी।
कुछ हवा चली है ऐसी यहाँ
कहते हैं इस मातृभाषा को बदल डालो।
बदल सको क्या तुम अपनी माता को ?
मातृभाषा का क्यों बदलाव करो।
देवों की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो।
बदल सको तो तुम अपनी
सोच को बदल डालो
हर इक भाषा की तुम सोच को बदल डालो
हिन्दी की जड़ों पर आओ हम गर्व करें
हिन्दी भाषा पर आओ हम गर्व करें।

ऐलिन चार्ल्स
बी.ए. तृतीय वर्ष

बेटी

जब–जब जन्म लेती है बेटी
खुशियाँ साथ लाती है बेटी
ईश्वर की सौगात हैं बेटी
सुबह की पहली किरण है बेटी
तारों की शीतल छाया है बेटी
आँगन की चिड़िया है बेटी
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी
नये–नये रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटी
बार–बार याद आती है बेटी
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिनके पास नहीं है बेटी।

ऐलिन चार्ल्स
बी.ए. तृतीय वर्ष

गुरू ज्ञान देते हैं

लोग कहते हैं कि गुरु ज्ञान देते हैं,
शरीर होता है मगर प्राण देते हैं!
मैं मानती हूँ कि गुरु ज्ञान के साथ
और भी बहु दान देते हैं!
गुरु ही शिष्य को नई पहचान देते हैं
गुरु के कारण ही लोग शिष्य को सम्मान देते हैं!
जीवन जीने के लिए मार्ग देते हैं।
व्यक्तित्व बनाने के लिए संस्कार देते हैं।
जीवन होता है मगर जीने का अंदाज देते हैं
पंख होता है मगर उड़ने को आकार देते हैं
शरीर होता है मगर प्राण देते हैं
गुरु ज्ञान देते हैं, गुरु ज्ञान देते हैं!

महिमा प्रताप सिंह
बी.एड. द्वितीय वर्ष

पापा का अनोखा प्यार

शाम हो गई अभी तो घूमने चलो ना पापा
चलते–चलते थक गई कन्धे पर बैठा लो ना पापा
अन्धेरे से डर लगता है सीने से लगा लो ना पापा
मम्मी तो सो गई, अब आप ही थपकी देकर सुलाओ ना पापा
पढ़ाई तो पूरी हो गई अब कॉलेज जाने दो ना पापा
पाल पोस के बड़ा किया अब विदा मत करो ना पापा
डोली में बैठा ही दिया तो अब आँसू मत बहाओ ना पापा
आपकी मुस्कुराहट अच्छी है एक बार और मुस्कुराओ ना पापा
आपने मेरी हर बात मानी, एक बात और मान लो ना पापा
इस धरती पे मैं, बोझ नहीं हूँ दुनिया को समझाओ ना पापा

शालिनी मसीह
बी.ए. तृतीय वर्ष

तुम्हें सोचना है

घर से दो रास्ते निकलते हैं
एक देवालय जाता है
एक विद्यालय जाता है
जाना कहाँ है यह तुम्हें सोचना है
रास्ते में दो विचार मिलेंगे
एक पाखंड–आडंबर का
दूसरा करुणा के समंदर का
चुनना क्या है यह सोचना तुम्हें है
आगे चलकर दो वृक्ष मिलेंगे
एक महापुरुषों के विचारों का
एक झूठ के ठेकेदारों का
किसके छाँव में बैठना है यह तुम्हें सोचना है

टीना
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

धन से पुस्तक मिलती है
किन्तु ज्ञान नहीं
धन से आभूषण मिलते हैं
किन्तु रुप नहीं
धन से सुख मिलता है
किन्तु आनन्द नहीं
धन से भोजन मिलता है
किन्तु भूख नहीं
धन से दवा मिलती है
किन्तु स्वास्थ्य नहीं
धन से पानी मिलता है
किन्तु प्यास नहीं
धन से बिस्तर मिलता है
किन्तु नींद नहीं

ज्योति
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

मोबाइल की जकड़ में बचपन, खत्म हो रहा अपनापन

छोटे–छोटे बच्चे आठ से दस घंटे मोबाइल के साथ बिता रहे हैं इससे उनमें अपनापन खत्म होता जा रहा है। एक ओर वह माता–पिता और परिवार से दूर हो रहे हैं वहीं उनकी सेहत पर भी बुरा असर पड़ रहा है कम उम्र में ही वह मोटापा और आँखों की गम्भीर समस्या से जूझ रहे हैं। काल्पनिक दुनिया की तरफ आकर्षित होकर वह वास्तविक दुनिया से दूर हो रहे हैं। चिड़चिड़ापन और जिद्दी होने के साथ एकाग्रता में भी कमी आई है।

आठ से दस घंटे मोबाइल पर समय बिता रहे बच्चे माँ–बाप से हो रहे दूर ऑनलाइन क्लास के अलावा गेम्स आदि पर घंटों बिताते हैं। आँखों की माँसपेशियों पर इसका प्रभाव पड़ता है। सिर दर्द, आँखों में दर्द की शिकायत आती है। डॉक्टर कशिश जैन ने बताया है कि बच्चे काल्पनिकता में रहते हैं।

12 साल की उम्र में शुगर :– बच्चों ने मोबाइल के चलते खाना बंद कर दिया है। उसी के चक्कर में हाथ, पैर ढीले पड़ने, जाँच के बाद शुगर निकला।

वर्षा
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर

MANAGING COMMITTEE

Oath Taking Ceremony

College Campus

CLAUDINE NIWAS (HOSTEL)

CLAUDINE CAFETERIA

GUARD ROOM

ENTRY GATE

GARDEN

GENERATOR

GROUND

GARDEN

PARKING AREA

RAMP

SEMINAR

SEMINAR

ST. JOSEPH'S GIRLS DEGREE COLLEGE
SEMINAR

ST. JOSEPH'S GIRLS DEGREE COLLEGE
SEMINAR

ST. JOSEPH'S GIRLS DEGREE COLLEGE
SEMINAR

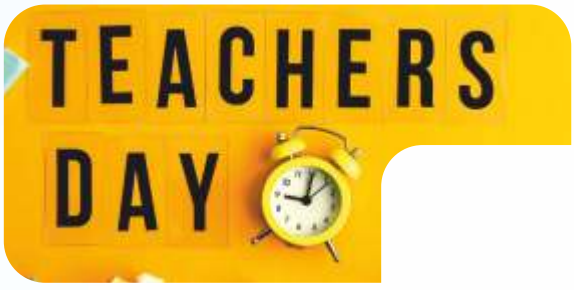
TEACHERS
DAY

HAPPY
TEACHERS
DAY

HAPPY
TEACHERS

Azadi ka Amrit Mahotsav

S.J.S.E.P Activities

PAINTING COMPETITION

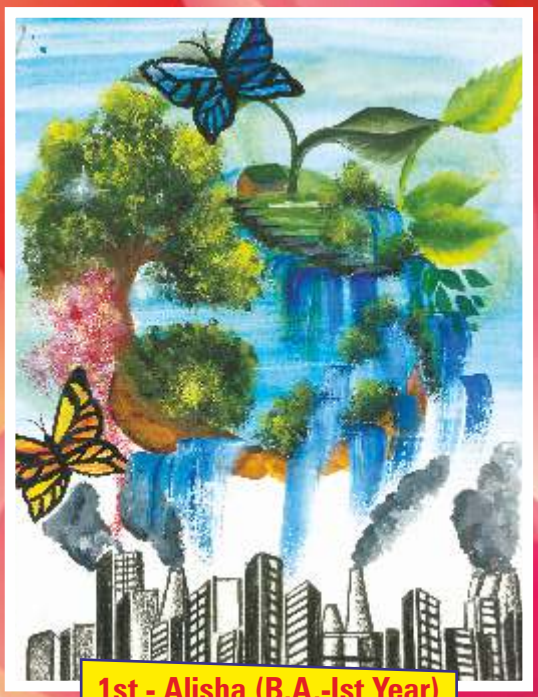

1st - Alisha (B.A.-Ist Year)

2nd - Soni Malik (B.A.-Ist Year)

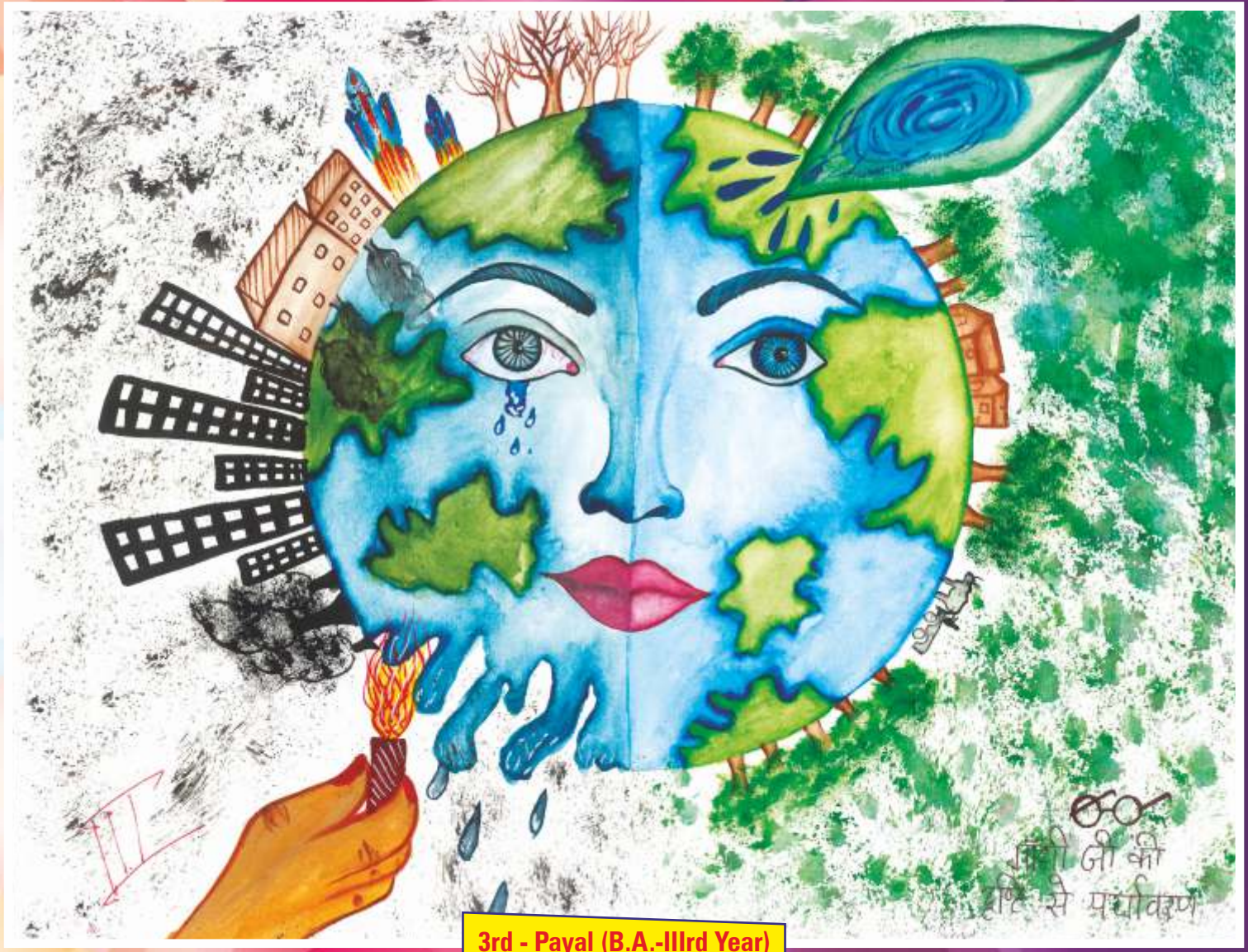

3rd - Payal (B.A.-IIIrd Year)

Women Cell

पर्यावरण

पर्यावरण प्रदूषण से हमारा जीवन दूषित होता जा रहा है। पर्यावरण प्रदूषण से हमारे भारत में अनेक बीमारियाँ फैलती जा रही हैं। पर्यावरण प्रदूषण से पेड़–पौधे भी दूषित होते जा रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए निम्न उपाय करने चाहिए :–

ध्वनि प्रदूषण :– ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिए लाउडस्पीकर, बाजे, कारखानों आदि पर रोक लगा देनी चाहिए जिससे ध्वनि प्रदूषण को रोका जा सके।

पर्यावरण प्रदूषण :– पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए पेड़–पौधे लगाने चाहिए जिससे पर्यावरण प्रदूषण को रोका जा सकता है।

चिंकी कश्यप

बेटियाँ

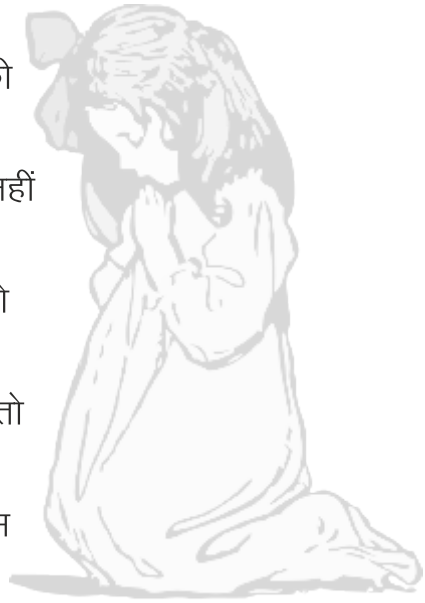

बाबुल के आँगन की
तुलसी हैं बेटियाँ,
हर एक के घर में नहीं
मिलती हैं बेटियाँ।
स्पर्श खुरदुरा हो तो
रोती हैं बेटियाँ,
हीरा अगर बेटा है तो
मोती हैं बेटियाँ।
होता है बेटा तो बस
एक ही कुल का,
दो–दो कुलों की लाज को
ढोती हैं बेटियाँ।।

गुरू

गुरु के बिना ज्ञान नहीं
ज्ञान के बिना कोई महान नहीं
भटक जाता है जब इंसान
तब गुरु ही देता है ज्ञान
ईश्वर के बाद अगर कोई है,
तो वो गुरु है
दुनिया से वाकिफ जो कराता है,
वो गुरु है
हमें अच्छा इंसान जो बनाता है,
वो भी गुरु है
बिना गुरु के जिन्दगी आसान नहीं
बिना गुरु के ज्ञान के कोई शिष्य महान नहीं
हमारी कमियों को जो बताता है,
वो गुरु है
हमें इंसानियत जो सिखाता है,
वो गुरु है
हमें जो हीरे की तरह तराश दे,
वो गुरु है
हमारे अंदर एक विश्वास जगा दे
वो गुरु है
जो सफलता की राह दिखा दे
वो गुरु है।

शुऐबा कुरैशी
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

समय तुम्हारे साथ-साथ

समय तुम्हारे साथ–साथ चलता हूँ मैं
तुम रुकते नहीं तुम थकते नहीं
तुम कहीं कभी भी थमते नहीं
क्या बात तुम्हारी है न्यारी
पीछे भी कभी तुम मुड़ते नहीं
तुमको न कोई बांध सका
सब मर्जों की तुम एक दवा !
जो चाल तुम्हारी समझ गया
धरती पर उसने है राज किया
हे समय! बड़े तुम बलशाली
वीरों को देते खुशहाली
सब आस–निराश के ज्ञाता तुम
सुख और दुखों के दाता तुम
तुम से ही जग में है वैभव
हो अभय तुम्हीं तुम ही अमृत
हे समय तुम्हें हम करे नमन
पीड़ा जग की अब करो हरण
हे समय तुम्हारे साथ हैं हम !

rjUue R;kxh
ch-,- f}rh; o"k

प्यारे पापा

पापा हर फर्ज निभाते हैं
जीवन भर कर्ज चुकाते हैं
बच्चे की एक खुशी के लिए
अपने सुख भूल ही जाते हैं
फिर क्यों ऐसे पापा के लिए
बच्चे कुछ कर ही नहीं पाते
ऐसे सच्चे पापा को क्यों
पापा कहने में भी सकुचाते
पापा का आशीष बनाता है
बच्चे का जीवन सुखदाई
पर बच्चे भूल ही जाते हैं

यह कैसी आँधी है आई
जिसने सब कुछ सिखलाया है
कोटि नमन ऐसे पापा को
जिसने हर पल साथ निभाया है
प्यारे पापा के प्यार भरे
सीने से जो लग जाते हैं
सच कहती हूँ विश्वास करो
जीवन में सदा सुख पाते हैं

vkpy
ch-,- iFke o"k

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार दो शब्दों से मिलकर बना है। भ्रष्ट + आचार। भ्रष्टाचार के प्रमुख कारण कुछ इस प्रकार हैः–

1. रिश्वत
2. भाई–भतीजावाद
3. बेरोजगारी

1- fj'or %& अपने जमीनी विवादों को सुलझाने के लिए गीरब लोगों से कुछ उच्च अधिकारी रिश्वत लेते हैं। अगर वो रिश्वत देते हैं तो उन्हें सरकार द्वारा सहायता दी जाती है। यह हमारे देश में कुछ स्थानों पर महत्वपूर्ण कारण है भ्रष्टाचार को बढ़ाने के लिए।

2- Hkkbi&Hkrhtkokn %& भाई–भतीजावाद प्रमुख कारण इस प्रकार है कुछ व्यक्ति अपनी शक्ति का गलत उपयोग कर अपने लोगों को सरकारी क्षेत्रों तथा अन्य क्षेत्रों में उनकी सहायता करते हैं जिस कारण कुछ शिक्षित लोग बेरोजगार रह जाते हैं।

uUnuh
ch-,- f}rh; lsLVj

गणगीत

जीवन में कुछ करना है तो, मन को मारे मत बैठो
आगे आगे चलना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।
चलने वाला मन्जिल पाता, बैठा, पीछे रहता है
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल रहता है
पाँव मिले चलने की खातिर, पाँव पसारे मत बैठो
आगे आगे चलना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।
तेज दौड़ने वाला खरहा (खरगोश), दो पल चलकर बैठ गया
धीरे धीरे चलकर कछुआ, देखो बाजी मार गया
चलो कदम से कदम मिलाकर, दूर किनारे मत बैठो
आगे आगे चलना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।
धरती चलती तारे चलते, चाँद रात भर चलता है
किरणों का उपहार बाँटने, सूरज रोज निकलता है
हवा चले महक बिखेरे, तुम भी प्यारे बन महको
आगे आगे चलना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।

rjUue R;kxh
ch-,- r`rh; o"k

जिंदगी

चलो हँसने की कोई, हम वजह ढूँढते हैं,
जिधर न हो कोई गम, वो जगह ढूँढते हैं।
बहुत उड़ लिए ऊँचे आसमानों में यारों,
चलो जमीं पे ही कहीं, हम सतह ढूढते हैं।
छूटा संग कितनों का जिन्दगी की जंग में,
चलो उनके दिलों की, हम गिरह ढूढते हैं।
बहुत वक्त गुजरा भटकते हुए अंधेरों में,
चलो अंधेरी रात की, हम सुबह ढूँढते हैं।।।

Vhuk
ch-,- r`rh; lseLVj

दोस्ती

कुछ खोये बिना मैंने पाया है
कुछ माँगे बिना मुझे मिला है
नाज़ है हमें अपनी
तकदीर पर क्योंकि मैंने आप
जैसा दोस्त पाया है

कोशिश कर, हल निकलेगा

कोशिश कर, हल निकलेगा आज नहीं तो, कल निकलेगा
अर्जुन के तीर–सा सध, मरुस्थल से भी जल निकलेगा।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे, बंजर जमीन से भी फल निकलेगा
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे, फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिन्दा रख, दिल से उम्मीदों को गरल के समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा
कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की जो है आज थमा–थमा सा, चल निकलेगा।

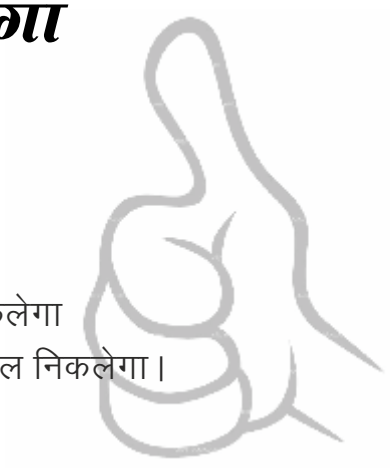

आज की नारी

आज तू बिखरा है
एक रोज तू निखरेगा ही।।
ढला है जो आज सूरज
कल सुबह फिर निकलेगा ही
माना तेरी मंजिलें,
माना तेरी मंजिलें इन लोहों की जंजीरों में हैं
पर तू तपेगा जब तेरी तपन से,
वो लोहा भी पिघलेगा ही।
मंजिलों के रास्तों में काँटें तो सभी के हैं
मंजिलों के रास्तों में काँटें तो सभी के हैं
पर तेरे अन्दर जुनून है तो, तू काँटों पे चलेगा ही।
माना आज तू बिखरा है
एक रोज तू निखरेगा ही।
ढला है जो आज सूरज
कल सुबह फिर निकलेगा ही।
हवाएँ विपरीत ही क्यों न चलें
तू कदम कदम बढ़ेगा ही।
हवाएँ विपरीत ही क्यों न चलें
तू कदम कदम बढ़ेगा ही।
तुझे कल के लिए है तैयार होना
तो आज तो गिरेगा ही
आज तो गिरेगा ही।
तेरी कोशिश देख हवाओं का रुख
एक रोज तो बदलेगा ही।
माना आज तू बिखरा है
एक रोज तू निखरेगा ही।
ढला है जो आज सूरज
कल सुबह फिर निकलेगा ही।

vk;'kk
ch-,- iFke lseLVj

जिंदगी

1. जिंदगी बड़ी खुश नसीब होती है।
कभी हार तो कभी जीत होती है।
आसमां भी आएगा जमीं पर
इरादों में बस गूँज होनी चाहिए।
2. जिंदगी से जंग जीत लेंगे हम
जिंदगी को खोने नहीं देंगे हम
अगर पाना है जिंदगी में कुछ
तो जीत कर दिखा देंगे हम।
3. जिंदगी तो जीते हैं सब
मगर जिंदगी में कुछ बनेंगे हम
कुछ कर जायेंगे जिंदगी में हम
अगर जिंदा रहेंगे हम।
4. जिंदगी की ख्वाहिश पूरी नहीं होती
कुछ खो देने से जिंदगी पूरी नहीं होती
जिंदगी में कर गुजरते हैं अक्सर वो लोग
जिनके पास कर गुजरने का हुनर होता है।

T;kfr
ch-,- r`rh; lseLVj

अनमोल वचन

आप जिन्दगी में कितने भी ऊँचे क्यों न उठ जायें, कभी भी अपनी गरीबी के दिन ना भूलें, क्योंकि ''जन्म का अन्त है मृत्यु और मृत्यु का अन्त है जन्म''

जिस प्रकार नदी के बह गये जल में आप दोबारा स्नान नहीं कर सकते, ठीक उसी प्रकार गुजरे हुए जीवन में आप दोबारा जीवन नहीं जी सकते।

छोटी–छोटी गलतियों से बचने की कोशिश करें, मनुष्य अक्सर छोटे–छोटे पत्थरों से ही ठोकर खाता है।

दो दोस्तों की जोड़ी

दो मनुष्य, दो दोस्त
दोस्ती क्या है ?
कभी किसी ने विचार किया है
कि दोस्ती होती क्या है ?
चलो ! एक विचार तो मैं ही बताती हूँ।
दोस्त तो बाद में।
पहले तो वे दो मनुष्य ही होते हैं।
दोस्त चाहे वे कितने सच्चे ही क्यों ना बन जायें।
मगर इंसान के अन्दर क्या छिपा है,
ये किसको पता ?
दोस्ती विश्वास की, दोस्ती भरोसे की होती है।
ऐसा नहीं कि कोई जरा–सी
चिंगारी लगा दे और वह बड़ी–सी ज्वाला बन जाये।
कहते हैं ना कि आग भड़क गयी।
मनुष्य की इंसानियत अच्छी होनी चाहिए।
जिसे सब अपना दोस्त बनाना चाहें।
अगर दोस्ती पर से विश्वास टूट जाता है।
तो दोस्ती पर विश्वास करना बड़ा–ही मुश्किल हो जाता है।
ऐ मेरे दोस्तों ! अगर आपका कोई सच्चा और अच्छा दोस्त है –
तो उसकी कद्र करो। दोस्त और दोस्ती का
रिश्ता कोई खेल या मजाक नहीं कि खेल लिए
और खिलौना तोड़ दिया। अरे मेरे दोस्त वो
दोस्ती है बड़ी किस्मती है। अनोखी है।

Lokfr
ch-,- r`rh; lseLVj

जिन्दगी

एक अजब सी पहेली है जिन्दगी
सबके होते हुए भी
अकेली है जिन्दगी।
कभी तो एक प्यारा–सा
अरमान है जिन्दगी,
तो कभी दर्द भरा
तूफान है जिन्दगी।
कभी गुलों से भरा
गुलिस्ताँ है जिन्दगी,
तो कभी काँटों भरा
रास्ता है जिन्दगी।
कोई तो बता दे आखिर
क्या है जिन्दगी,
सुना है चन्द रोज की
महमाँ है जिन्दगी।
जिन्दगी से चाहे
जितना भी प्यार करो,
होती तो आखिर
बेवफा है जिन्दगी।
ऐ बन्दे !
कुछ ऐसे जी कि
गा उठे जिन्दगी,
कि बन जाए
इतिहास जिन्दगी।
और दुनिया कहे !
कि कर गई कुछ
खास जिन्दगी।।

vkpy
ch-,- f}rh; lseLVj

मम्मी-पापा

कितना महान शब्द है ना यार
पर पता है .....
दम तोड़ देती है माँ बाप की ममता
जब बच्चे कहते हैं .....
कि तुमने किया ही क्या है हमारे लिए
अरे वो इस दुनिया में लाए हैं हमें .....
इससे बड़ा और क्या हो सकता है ? हमारे लिए
उसे पता है औलाद गालियाँ देगी
वो बूढ़ा बाप अब खाँसता भी नहीं है .....
बड़ी ही मुश्किल आ गयी
बँटवारे के किस्से में .....
जब माँ बाप ने पूछ लिया
कि हम हैं किसके हिस्से में .....
किसी ने रोजा रखा और किसी ने उपवास रखा
कुबूल होगा उसी का .....
जिसने अपने माँ बाप को अपने पास रखा
बूढ़े हो जाते हैं माँ बाप औलाद की खुशियों
की फिक्र में .....
औलाद समझती है कि असर उम्र का है
क्या खूब लिखा है किसी ने संगत को
जरा ध्यान में रखना साहब
संगत आपकी खराब होगी और
बदनाम माँ बाप और उनके संस्कार होंगे
इसलिए कभी भी माँ बाप का दिल मत
दुखाओ यार जो इस दुनिया में आज तुम
देख रहे हो ना सब कुछ .....
वो सिर्फ उन्हीं की बदौलत देख रहे हो
आखरी लाईन यही बोलूँगी दोस्तों
कि करो दिल से सजदा तो इबादत बनेगी
माँ बाप की सेवा अमानत बनेगी .....
खुलेगा जब तुम्हारे गुनाहों का खाता
तो माँ बाप की सेवा ही तुम्हारी
जमानत बनेगी .....

lkfu;k jkechj
ch-,- iFke lseLVj

"माँ"

माँ के जो करीब होते हैं
दुश्मन भी उनके हबीब होते हैं
माँ जिनके पास होती है
वो कहाँ गरीब होते हैं
माँ जिनकी जिन्दा होती है
वो बहुत खुशनसीब होते हैं
माँ का प्यार जिनके पास होता है
वो अमीरों से भी अमीर होता है
माँ जिनके साथ रहती है
वो कहाँ अकेले रहते हैं।
माँ के संस्कार जिनके पास होते हैं
वो हमेशा खुश और आदर करने वाले होते हैं
माँ की दुनिया जिनके पास न होती है
वो कहाँ ''खुशनसीब'' होते हैं
माँ जिनको छोड़कर चली जाती है
वो कहाँ उनके करीब होते हैं।

fu'kk flag
ch-,- r`rh; o"kZ

बेटियों का महत्व

बेटियाँ सबके मुकद्दर में कहाँ होती हैं,
घर खुदा को जो पसंद आये वहाँ होती हैं।
अगर बेटी की शादी न हो उसकी रजा से,
तो बेटी की जिन्दगी कम नहीं होती है
किसी सजा से ....
एक मीठी सी मुस्कान है बेटी,
यह सच है कि मेहमान है बेटी,
उस घर की पहचान बनने चली ....
जिस घर से अनजान है बेटी।
हर परिवार के कल को बढ़ाती है बेटियाँ,
फिर भी पैरों तले कुचल दी जाती हैं बेटियाँ।
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को
दो–दो कुल की लाज होती है बेटियाँ

'k,ck dqj'kh
ch-,- r`rh; lseLVj

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

बेटी को बचाया जाता है और उसे पढ़ाया भी जाता है पर अपनी मर्जी से उड़ाया नहीं जाता है। ऐसा क्यों होता है ? बेटी को अपना घर छोड़कर जाना होता है बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नाता तो लगता है पर उस पर अमल नहीं किया जाता।

rjyl h 'kek
ch- dke f}rh; lseLVj

पर्यावरण

पर्यावरण को बचाना है।
जीवन को आगे बढ़ाना है।
पेड़–पौधे लगाने हैं।
जीवन को स्वस्थ बनाना है
प्रदूषण को दूर भगाना है
एक बार फिर पर्यावरण को बचाना है।

jkgqr
ch-,- iFke lseLVj

स्वच्छता

स्वच्छता हमारे जीवन के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। स्वच्छता रखने से हमारा हर बीमारी से बचाव होता है। गन्दगी से अनेक बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं जिससे लोग बीमारी का शिकार बनते हैं और इससे लोगों को जान का खतरा रहता है इसलिए स्वच्छता हर एक जीव, मनुष्य के लिए आवश्यक है। अगर स्वच्छता नहीं रहेगी तो प्रदूषण पैदा होगा जिससे हमारी पृथ्वी पर प्रभाव पड़ता है। आज के समय में लोग स्वच्छता का महत्व नहीं समझते हैं, कूड़ा उठाना अपनी बे–इज्जती समझते हैं परन्तु यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी धरती को स्वच्छ रखें और प्रदूषित होने से बचायें।

हमारे देश को स्वच्छ रखने में हमारे प्रधान मन्त्री का बहुत बड़ा हाथ है, उन्होंने स्वच्छ भारत अभियान चलाया और स्वच्छता का महत्व बताया और लोगों को जागरुक किया।

bje uk t
ch-,- iFke o"k

कार्टून (ढोलकपुर - कविता (कहानी))

ढोलकपुर की है ये कहानी
कितनी न्यारी और कितनी प्यारी
भीम की शक्ति धूम मचाए
सामने कोई टिक न पाए।।
मेरा प्रिय कार्टून है छोटा भीम की कहानी
जिसमें शामिल है टुन–टुन मौसी के
लड्डू की भी कहानी।।
राजू, चुटकी, ढोलू, भोलू,
जग्गू बन्दर और कालिया, कृष्ण उसके दोस्त
जो हर पल हर घड़ी में साथ देते हैं भीम के दोस्त।।
कार्टून देखने से होता है हमारा मनोरंजन
छोटे बच्चे ज्यादातर देखते हैं कार्टून।।
जग्गू बन्दर मस्त कलन्दर
जो फिरता है एक डाल से दूसरे डाल पर
जग्गू बन्दर कली–कली की डाल पर मंडराता
और मीठे–मीठे केले खाकर उठ जाता।।
राजू है एक तीरन्दाज
जो करता है दुश्मन पर तीरन्दाजी।।
चुटकी अपने दुश्मनों को कहती
भूख लगी है तो मिर्ची खाओ
उनके कानों से धुँआ उठाकर
उन्हें सबक सिखाती पट–पटक।।
चुटकी की हँसी दिल को खुश कर जाती
उसकी खिलखिलाहट हर गम को भुला जाती
दर्द कितना भी हो इस दुनिया में
कार्टून का मनोरंजन हर गम को मिटा जाती।।
भीम को जब लगती भूख अचानक
तो टुन–टुन मौसी के लड्डू खाता।।
जहाँ कहीं भी धूप सताती
पेड़ के नीचे झठ सुसताता,
ढोलकपुर में जहाँ कहीं भी वर्षा होती,
वहाँ हम सब उसके साथ ही नहाते।।
ढोलकपुर का छोटा भी प्रिय हो
जिससे अपना भी मेल बढ़ाते।।
गोल–गोल ये पीले लड्डू बेसन के
जो देते शक्ति भीम को।।
कालिया करता तरह–तरह की शैतानी
जो देता सबको परेशानी।।
भीम समझता इस परेशानी को
जिसका भला होता हो ढोलकपुर को।।
यह कार्टून संजीव, राजीव,
चिलाका द्वारा 2008 से है प्रसारित।।

Qjghu
ch-,- iFke lseLVj

समय

समय का सबसे कहना है,
जीवन चलते रहना है,
इसको मत बर्बाद करो,
सदा काम की बात करो,
फूल सदैव मुस्कुराते हैं,
हमको यह समझाते हैं,
जीवन हँसते रहना है,
दुख भी सुख भी सहना है।
करम ही जिसकी रीत है
सत्य से जिसको प्रीत है
अंत में उसकी जीत है,
समय भी उसका मीत है।

lkfu;k jkechj
ch-,- iFke lseLVj

संत जोसेफ धैर्य का दर्पण

संत जोसेफ एक उम्मीद है, एक आस है।
परिवारों की हिम्मत और विश्वास है।
पिता की तरह बाहर से सख्त और अंदर से नर्म है,
संत जोसेफ के दिल में भी दफन कई मर्म है।
संत जोसेफ मेरे धैर्य का दर्पण है,
मेरा सब जीवन उन्हीं को अर्पण है।
संत जोसेफ मेरे सपनों को पूरा करने वाली जान है,
संत जोसेफ से ही मेरी पहचान है।
संत जोसेफ मेरा जज्बा मेरी शान है,
उन्हीं से मिले मुझे सारे वरदान हैं !
इन अंधेरी रातों के दामन में कल सुनहरा भी होगा,
वो जब तक मेरे जीवन में हैं उनके साथ मेरा रिश्ता और गहरा होगा।

संत जोसेफ मेरे संघर्ष की आँधियों में हौसले की दीवार है,
मेरी सब परेशानियों से लड़ने की दो धारी तलवार है!
बचपन से मृत्यु तक खुश करने वाला मेरा खिलौना है,
नींद लगे तो शान्ति से सुलाने वाला संत जोसेफ बिछौना है !
संत जोसेफ जमीन है, पिता की तरह ज़ागीर है,
जिसके पास संत जोसेफ है वह सबसे अमीर है !
कहने को सब ऊपर वाला देने का आधार है,
खुदा का ही एक रुप संत जोसेफ का शरीर निराकार है।

fel ,Utyhuk ,fydtUMj

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

बेटी को पढ़ाना है आगे बढ़ाना है
बेटी को सम्मान दिलाना है
बेटी को पढ़ाकर उसे अपने
पैरों पर खड़ा होना है
बेटी को शिक्षा का ज्ञान दिलाना है
और उसे पूरी शिक्षा देना है
बेटी को शिक्षा दिलाकर
घर पर नहीं बिठाना है
उसे बाहर जॉब के लिए भेजना है
उसे अपने सपने पूरे करने का अधिकार है

ofrdk
ch-,- iFke o"k

साइबर क्राइम

साइबर क्राइम एक अपराधिक कृत्य है जो इण्टरनेट के माध्यम से कम्प्यूटर के उपकरण या किसी भी स्मार्ट फोन (उपकरणों) के द्वारा किया जाता है तथा इस काम को अन्जाम दिया जाता है। इसे करने के लिए बड़े–बड़े हैकर या अपराधी अपने विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करते हैं। वह किसी आदमी, किसी समूह, संगठन या सरकार को भी नुकसान पहुँचाने के लिए साइबर क्राइम करते हैं। इसके द्वारा किसी व्यक्ति की निजी जानकारियों के साथ भी छेड़छाड़ की जाती है।

vU'kqy d'kokgk
ch-,- iFke o"k

बहन

बहन अक्सर बड़ी होती है।
उम्र में भले ही छोटी हो
लेकिन एक बड़ा सा एहसास लिए खड़ी होती है
बहन अक्सर बड़ी होती है।
जो तुम रुठ जाओ तो मना लेगी
जो कोई उलझन हो तो सुलझा देगी।
हर परेशानी को दूर कर दे
ऐसी वो जादू की छड़ी होती है।
बहन अक्सर बड़ी होती है।
हर मुसीबत की वो साथी है।
हर दर्द की दवा उसे आती है।
तेरे लिए अपनी मुश्किल भी भुला देगी
तेरी खुशी के लिए जी जान लगा देगी।
वो एक चुलबुली–सी प्यारी परी होती है।
बहन अक्सर बड़ी होती है।
उसे सिखाया जाता है ; कि हर एक चीज
पर हक उसका है भाई से कम।
दुनिया तो कहती ही है पर अपने
ही करते हैं ; उसकी आँखें नम।
फिर भी वो मुस्कान लिए अपने भाई
के साथ खड़ी होती है।
बहन अक्सर बड़ी होती है।

lkfu;k jkechj
ch-,- iFke lseLVj

असुरक्षित महिला

महिला हो या लड़की कोई भी हो हमेशा ही अपने आस पास असुरक्षित अनुभव करती है। चाहे कहीं भी जा रही हो, जब कोई लड़की बाहर जाती है जैसे– स्कूल, कॉलेज, जॉब करने या फिर मार्किट कहीं भी जाए उसके मन में हमेशा डर लगा रहता है कि वह कहीं न कहीं असुरक्षित है, पर ऐसा क्यों है ? सरकार द्वारा अभियान, इतने सारे एक्ट, जैसे ''पोक्सो एक्ट'' आदि चलाए जा रहे हैं, फिर हम महिलाएँ असुरक्षित क्यों हैं ? क्या कुछ ऐसा नहीं हो सकता कि हम हमेशा अपने आप को सुरक्षित महसूस करें ?

vkpy
ch-,- f}rh; lseLVj

राजनीति

प्रत्येक देश में राष्ट्रीय आन्दोलन उन अनेक शक्तियों के सामूहिक प्रभाव का परिणाम होता है जो एक लम्बे अरसे से देश में कार्य करती आ रही होती हैं ! भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के उदय में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सभी प्रकार के तत्वों ने अपना योगदान दिया ! भारत के राष्ट्रीय चेतना के कदम को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है :–

1. राजनीतिक एकता की स्थापना
2. ऐतिहासिक अनुसंधान
3. पाश्चात्य शिक्षा
4. भारतीयों का विदेशों में गमन
5. 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम

b'kk

बेटियाँ

किस्मत वाले हैं वो, जिन्हें बेटियाँ नसीब होती हैं
ये सच है कि उन लोगों को रब की मोहब्बत नसीब होती है।
बेटे बाप की जमीन बाँटते हैं और बेटियाँ हमेशा
बाप का दुःख बाँटती हैं।
लोग कहते हैं बेटियों का कोई घर नहीं होता,
बेवकूफ हैं वो लोग क्योंकि बेटियों बिना कोई
घर ही नहीं होता।
घर में बेटी होने पे ऐतराज है,
मुहल्ले में नौ देवियों की तलाश है।
नसीब वालों की पहली औलाद बेटियाँ होती हैं।
हर परिवार के कुल को बढ़ाती हैं बेटियाँ,
फिर भी पैरों तले कुचल दी जाती हैं बेटियाँ !

lkfu;k jkechj
ch-,- iFke lesLVj

हिन्दी है राजभाषा हमारी

सबसे प्यारी, सबसे न्यारी,
हिन्दी है राजभाषा हमारी।
आम लोगों की भाषा है हिन्दी,
क्रान्ति का अवतार है हिन्दी।
सबसे मीठे बोल हैं इसके,
दुनिया में अनमोल है हिन्दी।
हिन्दी है हमारी शान,
इसे राष्ट्रभाषा बनाना है,
हिन्दुस्तानियों का काम।

o"kkZ 'kekZ
ch-,- iFke lesLVj

"अपने विचार"

आज के समय में भारत इतनी तरक्की कर रहा फिर भी लिंग भेद है। साथ–साथ दहेज प्रथा अब भी है। दहेज प्रथा का आज भी प्रचलन है। दहेज प्रथा बहुत समय से चली आ रही है। हम अपने आस पास सुनते रहते हैं कि दहेज के कारण शादी में रुकावट भी आती है। आज के समय में रिश्ता बाद में दहेज में मोटरसाईकिल की माँग करते हैं। लड़के को एक तरह से बेचा जाता है। लड़की पर अत्याचार करते हैं।

ikph
ch-,- f}rh; lesLVj

माँ तेरी जिन्दगी के कष्ट

माँ तेरी जिन्दगी के कष्ट को
खुशियों की रबर से कुछ इस तरह मिटा दूँगी
दामन में तेरे खुशियों का खजाना भर दूँगी।
जो कहते थे कि बेटा नहीं बेटी को जन्म दिया है
उन लोगों को बेटा नहीं बेटी बनकर ही
नाम कमाकर दिखाऊँगी।
ये दुनिया–दारी जाये सारी नर्क में
पहले मैं माँ तेरा सम्मान वापस लाऊँगी।
छीन ली है जिन जालिमों ने तेरी मुस्कुराहट
उन जालिमों से छीनकर उस मुस्कुराहट को
तेरे कदमों में लाकर बिछा दूँगी।

euh"kk jkuh
ch-,- rrh; lesLVj

नारी

नारी सशक्तिकरण के नारों से गूँज उठी है वसुंधरा,
संगोष्ठी परिचर्चा सुन सुन अंतर मन में पूछ पड़ा।
वेद पुराण, ग्रन्थ सभी नारी की महिमा दोहराते,
कोख में कन्या आये तो क्यूँ उसकी हत्या करवाते।।
फिर बेटे की आस में कोख क्यूँ उजड़वाते,
कोख जो सूनी रह जाती तो आश्रम के चक्कर लगवाते।।
गोद में बालक ले लेते पर बालिका को हैं ठुकराते,
पुत्र रत्न की चाहत में ईश्वर को हैं भेंट चढ़ाते।।
चाँदी के सिक्के के लोभी दहेज की वेदी हैं जलाते,
मनचाहे वाणी के तीर सीना छलनी कर जाते।।
सरस्वती, लक्ष्मी और सीता पर दुर्गा भी वो बन जाए,
जब मनमोहिनी गणगोर सी काली का रुप भी दिखलाए।।
शक्ति को ना ललकारो नारी को नारी ही रहने दो,
करुणा ममता की सारिता ये कल–कल शीतल ही बहने दो

le;;k futkeÌhu
ch-,M- iFke o"k

मैं हूँ !!!!

रुप खनकने लगता है जब सिर्फ लबों से नहीं,
रुह से हंसते हैं हम,
कुदरत का कमाल लगते हैं, बेमिसाल लगते हैं हम,
आईना झुक जाता है – ज़माना रुक जाता है,
जब यकीन का टीका माथे की बिंदिया बन जाता है,
समझदारी की सुर्खी से होठों को सजाते हैं,
जिम्मेदारी को झुमका बनाकर कानों में लटकाते हैं,
बेबाकी से चलते हैं, गुस्ताखी पर हँसते हैं,
जितना खूबियों से है, कमियों से भी उतना ही प्यार करते हैं,
कमज़ोरी को ताकत में बदलते हैं अपने नैनों से वार करते हैं,
बदलते हैं बेशक बाहर से कभी–कबार
पर अंदर से अपने नुक्स पे भी नाज़ करते हैं।

ue:rk pkgku
v/;{k

हम मासूम ही रह गए ...

रिश्तों की धूप–छाँव से आज़ाद हो गए,
अब तो हमें भी सारे सबक याद हो गए,
आबादियों में होते हैं बर्बाद कितने लोग,
हम देखने गए तो खुद ही बर्बाद हो गए,
मैं पर्वतों से लड़ता रहा और चंद लोग,
गीली ज़मीन खोदकर गायब हो गए,
बैठे हुए हैं कीमती सोफे पर भेड़िए,
जंगल के लोग शहर में आबाद हो गए,
लफ्जों के हेर–फेर का धंधा भी खूब है,
जाहिल हमारे शहर में उस्ताद हो गए।

ue:rk pkgku
ch-,M- f}rh; o"k

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाएँ
सही तरह चलना सिखाएँ
माता–पिता से पहले आता
जीवन में सदा आदर पाता
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे
सीखी कर्तव्य निष्ठा जिससे
कभी रही ना दूर मैं जिससे
वह मेरा पथ प्रदर्शक है जो
मेरे मन को जो है भाता
वह मेरा शिक्षक कहलाता
कभी है शांत, कभी है धीर
स्वभाव में सदा गंभीर
मन में दबी रही यह इच्छा
काश मैं उस जैसा बन पाता
जो मेरा शिक्षक कहलाता

dkfeuh lke
ch-,M- iFke o"k

पहेलियाँ : बूझो तो जानूँ

1. वह कौन–सी चीज है होती सब के पास
   किसी के पास कम तो किसी के पास
   ज्यादा होती, जिसके पास ज्यादा वह
   कहलाता बुद्धिमान ?
   fnekxA
2. दो अक्षर का मेरा नाम
   खेलता है हमेशा सफेद चादर पर
   बताओ क्या है मेरा नाम ?
   iuA
3. ऐसा कौन–सा खजाना है, जिसे जितना
   लुटाया जाय, वह कितना ही ज्यादा लुटाया जाय,
   वह उतना ही ज्यादा बढ़ता है ?
   Kku dk [k tkukA
4. ऐसी कौन–सी चीज है जो बारिश में
   चाहे जितनी भीगे वह कभी गीली
   नहीं हो सकती है ?
   ikuhA
5. ऐसी कौन–सी चीज है जो अप्रैल
   में होती है लेकिन जनवरी में नहीं
   पानी में नहीं होती लेकिन
   आग में होती है ?
   xehA
6. एक फूल खिला यहाँ और एक फूल
   खिला मुंबई ऐसा अजूबा हमने है,
   देखा जिसमें है, पत्ते के
   ऊपर पत्ता ?
   Qy xkHkhA
7. वह कौन–सी चीज है, जो जागे
   रहने पर ऊपर रहती है, और सो
   जाने पर नीचे गिर जाती है ?
   vk[kk dh iydA
8. एक हाथी तालाब में गिर गया,
   अब वह कैसे निकलेगा ?
   xhyk gkdjA

lkfu;k
ch-,- iFke o"k

माँ-बाप का प्यार

गहरा इतना होता है माँ–बाप का प्यार
समुद्र भी फीका पड़ जाता है और आसमान छोटा
थोड़ा दुःख बच्चे को होते ही
माँ की ममता छलक जाती है
पैसों की कमी होने पर भी
पिता की दौलत उभर आती है।।
माता पिता से बढ़कर जग
में कोई इन्सान नहीं,
चुका पाऊँ उनका ऋण
इतनी मैं धनवान नहीं
अगर माँ जमीन है तो पापा पूरा आसमान हो तुम
बच्चों की खुशियाँ पूरी करने वाले
जग में ऐसे फरिश्ते हो तुम
बच्चों की परवरिश में पूरी
जिन्दगी कर देते हैं कुर्बान
निःस्वार्थ भाव से देते हैं प्यार
ऐसा होता है माँ–बाप का प्यार

#dlkj odhy vgen
,e-,- iFke lseLVj

अनमोल वचन

अगर आप स्वयं हार नहीं मानते,
तो यकीन मानिये
आपको इस दुनिया में
कोई नहीं हरा सकता।
पेड़ की शाखा पर बैठा पंछी
कभी–भी डाल हिलने से नहीं घबराता,
क्योंकि पंछी डाली पर नहीं
अपने पंखों पर भरोसा करता है।
बड़ा बने, पर उनके सामने नहीं,
जिसने तुम्हें बड़ा किया है।
जिन्दगी जन्नत होती है जब तक,
माँ–बाप का साया हम पर होता है।
आपका व्यवहार ही आपके
व्यक्तित्व का आईना है,
लोग इससे आपके साथ–साथ
आपके परिवार, मित्रों का भी
आँकलन कर लेते हैं।
कर्मों से ही पहचान होती है, इंसानों की ...
अच्छे कपड़े तो बेजान पुतलों
को भी पहनाये जाते हैं।
गुरु और समुंद्र दोनों ही
गहरे हैं ... पर दोनों में
एक ही फर्क है, समुंद्र
की गहराई में इन्सान
डूब जाता है और गुरु
की गहराई में इन्सान
तैर जाता है।
शिक्षा वह मोमबत्ती है
जो खुद जलकर सबको
उजाला देती है।
शिक्षक वह व्यक्ति होता है जो
अज्ञानता के अंधेरे से ज्ञान की
रोशनी में छात्रों को लाता है और
उन्हें सफलता के शिखर पर पहुँचाने
में मदद करता है।
गरीब वो नहीं जो झोपड़ी
में रहता है, गरीब वो है
जो अपनी दौलत का घमण्ड
झोपड़ी वालों को दिखाता है।
कदम छोटे हो या बड़े
रुकने नहीं चाहिए,
क्योंकि मन्जिल पाने के लिए,
चलते रहना बहुत जरुरी होता है।
काम ऐसा करो कि पहचान
बन जाये, हर कदम ऐसा
चलो कि निशान बन जाये,
यहाँ जिन्दगी तो हर कोई
काट लेता है, जिन्दगी जियो
इस कदर की मिसाल
बन जाये।
इस दुनिया में शिक्षा से बड़ा,
कोई हथियार नहीं है ...
और कलम से बड़ी,
कोई तलवार नहीं है।

lkfu;k
ch-,- iFke o"k

अनमोल जीवन : विद्यार्थी जीवन

जो कुछ ढूँढा करती थी,
वो सब मैंने किताबों में पाया।
किताबों से शिक्षा मिली हमको,
जिससे जीने का सलीका आया।
किताबों से ही जिन्दगी का फूल खिलता है।
लगता है, ऐसा मुझको तुमसे अपनापन मिलता है।
आपने सही और गलत में
हमें फर्क करना सिखाया।
हमारे इस अंधेरे जीवन में,
खुदा जलकर दीप जलाया।।
जो सोचा न था, शायद कभी,
माँ–बाप का अक्स भी आपमे है पाया।
खुशनसीब हैं वो जिनको,
जीवन में आप जैसा गुरु मिलता है।
लगता मुझको तुमसे अपनापन मिलता है।
अपने जैसे होते हैं
ऐसे ही होते ये सहपाठी
एक पल भी न बिछड़े इनसे
हम हो गया है, इनके आदी।
घर जैसा प्यार भरा माहौल कॉलेज में ही मिलता है।
यहीं हमें लगता है जैसे कॉलेज में अनमोल जीवन मिलता है।
ये सब हर किसी को कहाँ मिलता है।
लगता मुझको तुमसे अपनापन मिलता है।

fel 'khuk ÝkfUl l
fp=dyk foHkkx

कलम

कलम में है बड़ी सच्चाई
जिसमें मिलें हर किसी की परछाई
कलम है जो राज छुपाए या बताए
फिर भी सबके मन को जान पाए
कलम न होती तो कौन जानता बाइबिल,
वेद, कुरान
इस कलम ने ही दी धर्म को पहचान
चाहे स्त्री का चीर हरण हो या हो
क्रिश्चन का मिस्सा
कलम ने बयाँ किया हर कहानी का किस्सा
काव्य रचना से मनुष्य तक की कहानी
बयाँ करें यह कलम अपनी जुबानी
कलम ने बतायी हर त्योहार की पहचान
चाहे हो क्रिसमस या हो रमजान
जिसने बतायी प्राचीन युग व कलयुग की पहचान
वो कलम है महान

bf'kdk #gyk
ch-dke izFke o"k

तीसरी लहर स्वरचित कविता

कोरोना की तीसरी लहर है आई
सबकी फिर से बैंड बजाई।
सबने एक ही बात समझाई
घर से बाहर ना जाओ भाई।
अब कोई भी ज्यादा बाहर ना जाता
अपनों से न है मिल पाता।
कैसी ये संकट की घड़ी है आई
चारों ओर दुःखहारी बरसाई।
कोरोना तुमको शर्म न आई
तूने कितनी न जाने चिता जलाई।
जनता ने लापरवाही दिखाई
सरकार ने अपनी नहीं भूमिका निभाई।
कोई न समझा किसी की भलाई
इसीलिए ही तो सरकार ने रेलियाँ निकलवायी।
फिर से इलेक्शन का समय वह आया
जिसके कारण यह इतना पहले फैल पाया।
कोरोना के कारण ही तो सरकार ने
स्कूल की गाड़ी बन्द करवाई।
पर अपने प्रचार–प्रसार में सरकार ने
सड़कों पर गाड़ी खूब चलाई।
कोरोना को हराना है तो एक ही मूल मंत्र अपनाना है
घर से बाहर नहीं जाना है मास्क जरुर लगाना है।
दो गज की दूरी को निभाना है वेक्सीनेशन जरुर कराना है
अपने प्यारे भारत को कोरोना मुक्त कराना है।

ve'r fljkgh
ch-,- iFke leLVj

बेटी

शिक्षा, गुण, संस्कार का भण्डार होती है बेटी
कभी धूप गुनगुनी सुहानी
कभी चंदा–सी शीतल होती है बेटी
माँ का मान और गुमान होती है बेटी
पिता की शान और सम्मान होती है बेटी
बेटी तो देश की पहचान है
बेटी से ही हमारे देश का अभिमान है
बेटों से सबल होती है बेटी
जिंदा होने की पहचान होती है बेटी
उसकी आँख कभी नम ना होने देना
उसकी जिंदगी में कभी गम ना होने देना
सहारा दो गर विश्वास का तो पावन
गंगा जल होती है बेटी
जीवन में खिला कमल होती है बेटी
बस ऐसी ही होती है बेटी
बस ऐसी ही होती है बेटी

vue
iFke o"k

माँ पर सर्वश्रेष्ठ कविता

माँ ही है जो
सारे दुखों को हर लेती है
बीमार होते हुए भी सारे काम कर लेती है
लाख गलतियों को माफ कर देती है
खुद की जान दाँव पर रख कर जन्म देती है
अपनी खवाहिशों को छोड़कर
अपने बच्चों की खुशियों को पूरा करने की
दुआ करती है

vu jk.kk
ch-,M- f}rh; o"k

मनों की ख्वाहिशें

मनुष्य की ख्वाहिशें –
ख्वाहिशें–ख्वाहिशें होती हैं क्या
मन की इच्छा पूरी की जाये
वो है ख्वाहिशें।
मन की खुशी मिल जाती है ख्वाहिशों से
जरुरत पूरी न हो
तो वे लोग कहते हैं
कि ख्वाहिशें पूरी नहीं हुई।
छोटे से छोटे लोग भी मन में इच्छा रखते हैं।
कि उनकी ख्वाहिशें पूरी हो जाये।
वे थोड़े पर खुश रहते।
अपनी जरुरत और ख्वाहिशों को पूरा करना जानते हैं।
वही जब भी कोई बड़ा मनुष्य कुछ पैसे कमाता है।
उन पर घमण्ड करता और
उसके मन की इच्छा कभी पूरी नहीं होती
उसकी नयी–नयी ख्वाहिशें जन्म लेती हैं।
जैसे कुछ पैसे कमाता है फिर नये–नये शौक करता है।
कुछ तो अपनी कमाई का दिखावा करते हैं।
ये नहीं अपनी कमाई कुछ हिस्सा सही जगह इस्तेमाल
करके मन की खुशियाँ अर्जित करें।

Lokfr
ch-,- rrh; lseLVj

लिंग भेद

हमारे देश में लिंग भेद अब भी हो रहा है। लड़के को उनकी मर्जी तक पढ़ने देते हैं लेकिन लड़कियों को अब भी आजादी नहीं मिलती है। हमारे आस पास के क्षेत्र में अब भी बहुत भेद भाव करते हैं लड़के और लड़कियों में भेद भाव करते हैं।

dkty rkej
ch-,- f}rh; lseLVj

"अपने विचार" 'समय की कीमत'

सभी माँगते हैं धन दौलत खजाना,
पर समय के साथ किसी ने चलना ना जाना,
बोलते हैं कोई खराब कोई सही,
यही है हर इन्सान का बहाना,
पर जो मेरे साथ चला केवल वही मेरी कीमत जाना।

Mkyh
ch-,- f}rh; lseLVj

महिला बंधनमुक्त हों

प्राचीन काल में महिलाओं को देवी का स्वरुप माना जाता था परन्तु आज कल महिलाओं पर शोषण, अत्याचार किया जाता है ! उन्हें दबा के रखा जाता है ! उन्हें आगे बढ़ने का मौका नहीं मिलता ! उड़ना कौन नहीं चाहता परन्तु उड़ने का मौका तो दीजिए ! बेटे इतना साथ नहीं निभाते जितना बेटियाँ निभाती हैं।

fo'kk[kk 'kekl
ch- dke f}rh; lseLVj

देश	राजधानी
ट्यूनिशिया	ट्यूनिश
ग्रीस	एथेंस
बेलारुस	पिंस्क
डेनमार्क	कोपनहेगेन
कजाकिस्तान	अस्ताना
किर्गिस्तान	बिस्काक
उज्बेकिस्तान	ताशकंद
तुर्कमेनिस्तान	अश्खाबाद
मेक्सिको	मेक्सिको सिटी
निकारागुआ	मानागुआ
होण्डूरास	तेगूसिगाल्पा
ग्वाटेमाला	ग्वाटेमाला सिटी
अलसल्वाडोर	सान सल्वाडोर
कोस्टारिका	सान जोश
पनामा	पनामा सिटी
जमैका	किंग्स्टन
क्यूबा	हवाना
हैती	पोटॉपिंस
डोमिनिकन सिटी	सैंटा डोमिनिगो
सूरिनाम	पैरामारिबो
ट्रिनिडाड एण्ड टोबाको	पोर्ट ऑफ स्पेन

Mkyh
ch-,- iFke o"k

राष्ट्र	राजधानी
टर्की	अंकारा
केन्या	नैरोबी
सोमालिया	मोगा दिसू
इथोपिया	आदिस अबाबा
सूडान	खार्तूम
अंगोला	लुआण्डा
नामीबिया	बोत्स्वाना
सऊदी अरब	रियाद
ईरान	तेहरान
ईराक	बगदाद

ugk 'kehe [kku
ch-,- iFke o"k

वीर सपूतों का वृतांत इतिहासों में कर देते हैं,
अखत्त अखत्त लफ्जों से कैसे प्रतिपादन उनका बतलाऊँ
हिमालय जिनके चरण चूमें
उनके लिए अल्फाज कहाँ से मैं लाऊँ।
व्रत खंड के सपूतों का इतिहास बहुत पुराना है
अर्जुन के गांडीव से निकला क्षर अक्षत को साधा है
गिर पड़े धरा पर फिर भी प्रतिष्ठा कैसे बतलाऊँ
गौरवमयी इतिहास के लिए अल्फाज कहाँ से मैं लाऊँ
इस गौरवमयी इतिहास के लिए अल्फाज कहाँ से मैं लाऊँ।।।।

jkf'k vjkjk
ch-,M- iFke o"k

हास्य कविता

अक्ल बाँटने लगे विधाता,
लंबी लगी कतारी।
सभी आदमी खड़े हुए थे,
कहीं नहीं थी नारी।।

सभी नारियाँ कहाँ रह गई,
था ये अचरज भारी।
पता चला ब्यूटी पार्लर में,
पहुँच गईं थी सारी।।

मेकअप की थी गहन प्रक्रिया,
एक एक पर भारी।
बैठी थीं कुछ इंतजार में,
कब आएगी बारी।।

उधर विधाता ने पुरुषों में,
अक्ल बाँट दी सारी।
पार्लर से फुर्सत पाकर के,
जब पहुँची सब नारी।।

पुरुषों में शारीरिक बल है,
हम ठहरी अबलाएँ।
अक्ल हमारे लिए जरुरी,
निज रक्षा कर पाएँ।।

बहुत सोच दाढ़ी सहलाकर,
तब बोले ब्रह्मा जी।
इक वरदान तुम्हें देता हूँ,
हो जाओ अब राजी।।

थोड़ी सी भी हँसी तुम्हारी,
रहे पुरुष पर भारी।
कितना भी वह अक्लमंद हो,
अक्ल जायेगी मारी।।

बोर्ड लगा था स्टॉक खत्म है,
नहीं अक्ल अब बाकी।
रोने लगीं सभी महिलाएँ,
नींद खुली ब्रह्मा की।।

पूछा कैसा शोर हो रहा,
ब्रह्मलोक के द्वारे ?
पता चला कि स्टॉक अक्ल का
पुरुष ले गए सारे।।

ब्रह्मा जी ने कहा देवियों,
बहुत देर कर दी है।
जितनी भी थी अक्ल सभी वो,
पुरुषों में भर दी है।

लगी चीखने महिलायें
ये कैसा न्याय तुम्हारा ?
कुछ भी करो, चाहिए हमको
आधा भाग हमारा।।

इक बोली, हमको ना रोना,
ना हँसना आता है।
झगड़े में है सिद्धहस्त हम,
झगड़ा ही भाता है।।

ब्रह्मा बोले चलो मान ली,
यह भी बात तुम्हारी।
घर में जब भी झगड़ा होगा,
, होगी विजय तुम्हारी।।

जग में अपनी पत्नी से जब
कोई पति लड़ेगा।
पछताएगा, सिर ठोकेगा
आखिर वही झुकेगा।।

एक बोली, क्या नहीं जानते!
स्त्री कैसी होती है ?
हँसने से ज्यादा महिलायें,
बिना बात रोती हैं।।

ब्रह्मा बोले यही कार्य तब,
रोना भी कर देगा।
औरत का रोना भी नर की,
बुद्धि को हर लेगा।।

ब्रह्मा बोले सुनो ध्यान से,
अंतिम वचन हमारा।
तीन शस्त्र अब तुम्हें दे दिए,
पूरा न्याय हमारा।।

इन अचूक शस्त्रों में भी,
जो मानव नहीं फँसेगा।
बड़ा विलक्षण जगतजयी
ऐसा नर दुर्लभ होगा।।

कहे कवि सब बड़े ध्यान से,
सुन लो बात हमारी।
बिना अक्ल के भी होती है,
नर पर भारी भारी।।

'kgu|ek R;kxh
,e-,- f}rh; o"kZ

आई.टी.बी.पी. में पहली बार महिला अधिकारियों की लड़ाकू भूमिका

पहली बार, दो महिला अधिकारियों, प्रकृति और दीक्षा को भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आई.टी.बी.पी.) में लड़ाकू अधिकारियों के रुप में नियुक्त किया गया। वे भारत–चीन एल.ए.सी. की रक्षा के लिए जिम्मेदार हैं।

मसूरी में आई.टी.बी.पी. अकादमी में प्रशिक्षण पूरा करने के बाद इन दोनों महिला अधिकारियों को (आई.टी.बी.पी.) बटालियन में सहायक कमाण्डेन्ट के रुप में तैनात किया गया है।

सहायक कमाण्डेण्ट अर्धसैनिक बलों में प्रवेश स्तर का अधिकारी रैंक होता है।

जम्मू–कश्मीर उच्च न्यायालय का नाम परिवर्तित

कानून और न्याय मन्त्रालय ने 'जम्मू एवं कश्मीर केन्द्रशासित प्रदेश और लद्दाख केन्द्रशासित प्रदेश सामान्य उच्च न्यायालय' का नाम नाम बदलकर 'जम्मू एवं कश्वीर और लद्दाख उच्च न्यायालय' कर दिया।

f'kokuh tSu

,e-,- iFke o"kZ ¼fgUnh½

उड़ान योजना के तहत 780 नए हवाई मार्गों को मंजूरी

केन्द्र सरकार के अनुसार क्षेत्रीय हवाई सम्पर्क योजना उड़ान के तहत 780 नए हवाई यातायात मार्गों को मंजूरी दी गई है। नागरिक उड्डयन मन्त्री ज्योतिरादित्य सिन्धिया ने लोकसभा को बताया कि योजना की शुरुआत के बाद से देश में 359 मार्ग काम कर रहे हैं।

उड़ान योजना के तहत सरकार द्वारा 59 नए हवाई अड्डे स्थापित किए गए हैं।

[kq'kh

,e-,- iFke o"kZ ¼fgUnh½

रुस करेगा भारत को मिग–29 लड़ाकू जेट की आपूर्ति

भारतीय वायु सेना को रक्षा मन्त्रालय रुस से 12 सुखोई एम.के. 1 के अलावा 21 मिग–29 लड़ाकू जेट खरीदने की मंजूरी मिली। रुस की सैन्य–तकनीकी सहयोग सेवा के एक प्रवक्ता ने जानकारी दी है कि रुस भारत को 21 मिग–29 लड़ाकू विमानों की आपूर्ति करेगा। वर्तमान में वायु सेना के पास मिग–29 के तीन स्क्वाड्रन है जो नियमितत रुप से उन्नत होते हैं और विभिन्न वायु रक्षा भूमिकाओं के लिए विश्वसनीय होते हैं।

lhek

,e-,- iFke o"kZ ¼fgUnh½

दहेज प्रथा

आज भारत इतनी तरक्की कर रहा है ; फिर भी हमारे देश में दहेज लेना देना चल रहा है। अगर कोई लड़की के घर वाले अपनी स्थिति के कारण दहेज नहीं देते तो लड़की को ससुराल वाले परेशान करते हैं। दहेज के लिए लड़की को मारते हैं। फाँसी, जलाना, मारपीट करना जैसे केस चल रहे हैं। आज के समय में कार का रिवाज चल रहा है। दहेज के कारण लड़की को मारपीट करके घर वापस भेज देते हैं।

xy 'ku

बेरोजगारी

आज बेरोजगारी हो रही है सभी लोग अपने परिवार को एक समय का खाना नहीं खिला सकते हैं। कोरोना वायरस की वजह से कोई अपने घर से बाहर नहीं जा रहे हैं अपने परिवार के लिए एक वक्त के भोजन के लिए रुपये–पैसे (यानी कोई कार्य नहीं कर रहे हैं) आज कल सभी लोग भोजन की वजह से मर रहे हैं इसकी वजह बेरोजगारी है।

leL;k %& बेरोजगारी बहुत बड़ी है ! सभी लोग परेशान हैं कि हम अपने परिवार को एक वक्त का भोजन कहाँ से लायें ! आज हमारे भारत में बेरोजगारी की समस्या हो रही है।

Qjghu
ch-,- f}rh; lsesLVj

अपूर्ण शिक्षा

अपूर्ण शिक्षा का मुख्य कारण घरेलू बाधाएँ (आर्थिक स्थिति) है। मध्य वर्ग के लोग शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते यह जरुरी नहीं हर विद्यार्थी पढ़ने में कमजोर होता है मगर आर्थिक स्थिति उसे कमजोर बना देती है। मध्यम वर्ग के लोग एवं गरीब लोग अपने बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्राथमिक स्कूलों में भेजते हैं जहाँ उन्हें अधिक कमजोर समझा जाता है एवं आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिलता ! अपूर्ण शिक्षा का एक कारण रुढ़िवादी सोच भी होती है।

mtkyk
ch-,- f}rh; lsesLVj

मेरी मैम

मैम कभी कुछ बताती नहीं ...
जिम्मेदारी का बोझ लेकर
इतनी दूर से रोज आती है
थक जाती है पर कुछ कहती नहीं ...
मैम कभी कुछ बताती नहीं ...
पापा की यादों को लेकर
आँसुओं को छुपाती है, पर कुछ कहती नहीं
मैम कभी कुछ बताती नहीं ...
सौ दर्द अपने अन्दर छुपाकर
हमेशा मुस्कुराती है
अपना दर्द कभी जताती नहीं
मैम कभी कुछ बताती नहीं ...
अम्मी का सहारा बनकर
बहनों को गले लगाती है
परेशानियों से घबराती नहीं
मैम कभी कुछ बताती नहीं ...

'ku
,e-,- prFkk o"k

बेटी को कमजोर न समझा जाए

पैदा होते ही मेरी हत्या न की जाए,
अब मैं भी नौकरी करती हूँ, मुझे बोझ ना समझा जाए,
मुझे कलंक और अभिशाप ना समझा जाए,
मुझे बेटों से ज्यादा तो कुछ, कम भी ना समझा जाए,
दहेज ना मिलने पर मुझे जलाया ना जाए,
मैं भी एक इंसान हूँ मुझे अपनी जागीर ना समझा जाए,
दिल के बहलाने का सामान ना समझा जाए,
मुझको अब इतना भी आसान ना समझा जाए,
मैं भी दुनिया की तरह जीने का हक माँगती हूँ,
इसको गद्दारी का ऐलान ना समझा जाए,
अब तो बेटे भी चले जाते हैं, होकर रुख़्सत,
सिर्फ बेटी को ही मेहमान ना समझा जाए,
कली होती हैं बेटियाँ, इन्हें काँटा ना समझा जाए,
कोमल होती हैं बेटियाँ, इन्हें कमजोर ना समझा जाए,
पंछी की तरह होती हैं बेटियाँ, इन्हें पिंजरे में बन्द ना किया जाए,
बेटों की तरह डॉक्टर, इन्जीनियर और क्रिकेटर बन
सकती हैं, बेटियाँ, इन्हें एक मौका तो दिया जाए।

'k,ck dj'kh
ch-,- rrh; leLVj

दहेज प्रथा

दहेज प्रथा एक कुप्रथा है इसके कारण लड़कियों को आत्म हत्या भी करनी पड़ जाती है। जिससे उन्हें अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। दहेज के लिए सास व नन्द लड़की पर अत्याचार करते हैं। लड़की वाले निर्धन होने के कारण दहेज नहीं दे पाते हैं। गरीब होने के कारण लड़की को दहेज न देने के कारण वह आत्म हत्या कर लेते हैं।

iue luh

बहन भाई

यूँ तो हजारों लोग
मिल जायेंगे,
लेकिन हाथ पकड़ कर
चलना सिखाने वाला भाई
बिना नसीब, नहीं मिलता।
मेरा भाई मेरे दिल के
इतने करीब हो,
मेरे हिस्से की सारी
खुशियाँ, उसे नसीब हो।
भाई का प्यार किसी
दुआ से कम नहीं होता
वो चाहे दूर भी हो
कोई गम नहीं होता।
अक्सर रिश्ते दूरियों से
फीके पड़ जाते हैं,
पर भाई का प्यार
कभी कम नहीं होता।
भाई तेरे मेरे रिश्ते में
मोहब्बत इतनी गहरी हो
जब जाने का वक्त तेरा आये तो
मौत मेरी हो।

lkfu;k jkechj
ch-,- iFke leLVj

NEP 2020-A NEW ERA OF EDUCATION IN INDIA

NEP 2020 is the first education policy of the 21st century and replaces the thirty-four years old National Policy on Education (NPE), 1986. The implementation of previous policies on education has focused largely on issues of access and equity. The unfinished agenda of the National Policy on Education 1986, modified in 1992 (NPE 1986/92), is appropriately dealt with in this Policy. A major development since the last Policy of 1986/92 has been the Right of Children to Free and Compulsory Education Act 2009 which laid down legal underpinnings for achieving universal elementary education.

Built on the foundational pillars of Access, Equity, Quality, Affordability and Accountability, the NEP 2020 is aligned to the 2030 agenda for Sustainable Development and aims to transform India into a vibrant knowledge society and global knowledge superpower by making both school and college education more holistic, flexible, multidisciplinary, suited to 21st century needs and aimed at bringing out the unique capabilities of each student. In May 2016, „Committee for Evolution of the New Education Policy" under the Chairmanship of Late Shri T.S.R. Subramanian, Former Cabinet Secretary, submitted its report. Based on this, the Ministry prepared Some Inputs for the Draft National Education Policy, 2016". In June 2017 a,,Committee for the Draft National Education Policy" was constituted under the Chairmanship of eminent scientist Padma Vibhushan, Dr. K. Kasturirangan, which submitted the Draft National Education Policy, 2019 to the honourable M.H. R. D. Minister on 31st May, 2019. The Draft National Education Policy 2019 was uploaded on MHRD's website and at, "My Gov Innovate" portal eliciting views/ suggestions/comments of stakeholders, including public.

Vision of the Policy- The NEP 2020 envisions an education system rooted in Indian ethos that contributes directly to transforming India, that is Bharat, sustainably into an equitable and vibrant knowledge society, by providing high-quality education to all, and thereby making India a global knowledge superpower. The Policy envisages that the curriculum and pedagogy of our institutions must develop among the students a deep sense of respect towards the Fundamental Duties and Constitutional values, bonding with one's country, and a conscious awareness of one's roles and responsibilities in a changing world. The vision of the Policy is to instill among the learners a deep-rooted pride in being Indian, not only in thought, but also in spirit, intellect, and deeds, as well as to develop knowledge, skills, values, and dispositions that support responsible commitment to human rights, sustainable development and living, and global wellbeing, thereby reflecting a truly global citizen.

Salient features of NEP 2020-

- The new policy aims for universalization of education from pre-school to secondary level with 100 per cent Gross Enrolment Ratio (GER) in school education by 2030 and aims to raise GER in higher education to 50 per cent by 2025.
- The 10+2 structure of school curricula is to be replaced by a 5+3+3+4 curricular structure corresponding to ages 3-8, 8-11, 11-14, and 14-18 years respectively. It will include 12 years of schooling and three 3 of Anganwadi and pre-schooling. Approximately two crore school students will be able to come back to educational institutes through this new approach. For

children up to the age of 8, a National Curricular and Pedagogical Framework for Early Childhood Care and Education will be designed and developed by NCERT.

- Appropriate authorities will conduct the school examinations for grades 3, 5 and 8. The board exams for grades 10 and 12 will continue but the NEP 2020 aims to re-design the structure with holistic development. There will be a shift from summative assessment to regular and formative assessment, which is more competency-based, promotes learning and development, and tests higher-order skills, such as analysis, critical thinking, and conceptual clarity. Board exams for Grades 10 and 12 will be continued, but be reformed to eliminate the need for taking coaching classes. All students will be allowed to take Board Exams on up to two occasions during any given school year, one main examination and one for improvement, if desired.
- For making the students prepared for future pandemic situations, online academic will be promoted on a larger scale. A National Mission on Foundational Literacy and Numeracy will be set-up on priority to focus on early language and mathematical skills from Grades 1 to 3 by 2025.
- The medium of instruction until at least Grade 5, but preferably till Grade 8 and beyond, will be the home language/ mother tongue /local language/regional language. Every student in the country will participate in a fun project/activity on ,,The Languages of India", sometime in Grades 6-8, such as, under the „Ek Bharat Shrestha Bharat" initiative. Sanskrit will be offered at all levels of school and higher education as an important, enriching option for students, including as an option in the three-language formula.
- This new plan focuses on setting up a Gender Inclusion Fund. Special Education Zones for disadvantaged regions and groups is also in the focused list. One of the merits of NEP 2020 is the formation of National Book promotion Policy in India.
- Special daytime boarding school "Bal Bhavans" to be established in every state/ district in India. This boarding school will be used for participation in activities related to play, career, art.
- By 2022, in consultation with teachers and expert organizations, NCERT, SCERTS, the National Council for Teacher Education will develop a common National Professional Standards for Teachers (NPST).
- An Academic Bank of Credit will be established. The credits earned by the students can be stored and when the final degree gets completed, those can be counted.
- Multidisciplinary Education and Research Universities at par with the IITs and IIMs will be set up in the country. These are scheduled to be set up for introducing multidisciplinary academic.
- The same list of accreditation and regulation rules will be used for guiding both the public and private academic bodies. Phased out college affiliation and autonomy will be granted to colleges.
- By the year 2030, it will be mandatory to have at least a four year B. Ed degree for joining the occupation of teaching.
- Indian Sign Language (ISL) will be standardized across the country, and National and State curriculum materials developed, for use by students with hearing impairment.
- A new National Assessment Centre,

PARAKH (Performance Assessment, Review, and Analysis of Knowledge for Holistic Development), will be set up as a standard-setting body for setting norms, standards, and guidelines for student assessment and evaluation for all recognized school boards of India.

- Special emphasis will be given on Socially and Economically Disadvantaged Groups (SEDGs) which include: gender identities (particularly female and transgender individuals), socio-cultural identities (such as Scheduled Castes, Scheduled Tribes, OBCs, and minorities), geographical identities (such as students from villages, small towns, and aspirational districts), disabilities (including learning disabilities), and socio-economic conditions (such as migrant communities, low income households, children in vulnerable situations, victims of or children of victims of trafficking, orphans including child beggars in urban areas, and the urban poor).
- Every State/District will be encouraged to establish "Bal Bhavans" as a special daytime boarding school, to participate in art-related, career-related, and play related activities. The unutilized capacity of school infrastructure will be used to promote social, intellectual, and volunteer activities for the community and to promote social cohesion during non-teaching/schooling hours and may be used as a "Samajik Chetna Kendra"
- A common National Professional Standards for Teachers (NPST) will be developed by 2022, by the National Council for Teacher Education, in consultation with NCERT, SCERTS, teachers from across levels and regions, expert bodies in vocational education, and higher education institutions etc which would cover expected roles of the teacher at different levels of expertise/stage, and the competencies required for that stage.
- Moving towards a higher educational system consisting of large, multidisciplinary universities and colleges, with at least one in or near every district, and with more HEIs across India that offer medium of instruction or programms in local/Indian languages.
- Establishment of a National Research Foundation to fund outstanding peer-reviewed research and to actively seed research in universities and colleges; "light but tight" regulation by a single regulator for higher education;
- Increased access, equity, and inclusion through a range of measures, including greater opportunities for outstanding public education; scholarships by private/ philanthropic universities for disadvantaged and underprivileged students; online education, and Open Distance Learning (ODL); and all infrastructure and learning materials accessible and available to learners with disabilities.
- The main thrust of this policy in higher education is to end the fragmentation of higher education by transforming higher education institutions into large multidisciplinary universities, colleges, and HEI clusters, each of which will aim to have 3,000 or more students. It is envisioned that over a period of time all existing HEIs and new HEIs will evolve into researchintensive universities (RUS), teaching universities (TUs), and autonomous degree-granting colleges (ACs). The Centre and the States will work together to increase the public investment in Education sector to reach 6 per cent of GDP at the earliest.
- By 2040, all higher education institutions (HEIs) shall aim to become multidisciplinary institutions, each of which will aim to have

3,000 or more students. There shall, by 2030, be at least one large multidisciplinary HEI in or near every district.

- The present complex nomenclature of HEIs in the country such as 'deemed to be university', 'affiliating university', 'affiliating technical university', 'unitary university! shall be replaced simply by 'university' on fulfilling the criteria as per norms.
- Undergraduate degree will be of either 3 or 4-year duration, with multiple exit options within this period, with appropriate certifications, e.g., a certificate after completing 1 year in a discipline or field including vocational and professional areas, or a diploma after 2 years of study, or a Bachelor's degree after a 3-year programme. The 4-year multidisciplinary Bachelor's programme, however, shall be the preferred option.
- An Academic Bank of Credit (ABC) shall be established which would digitally store the academic credits earned from various recognized HEIs so that the degrees from an HEI can be awarded taking into account credits earned. The 4-year programme may also lead to a degree 'with Research' if the student completes a rigorous research project in their major area(s) of study as specified by the HEI. Model public universities for holistic and multidisciplinary education, at par with IITs, IIMs, etc., called MERUS (Multidisciplinary Education and Research Universities) will be set up and will aim to attain the highest global standards in quality education.
- The Choice Based Credit System (CBCS) will be revised for instilling innovation and flexibility. HEIs shall move to a criterion-based grading system that assesses student achievement based on the learning goals for each programme
- Larger numbers of international students studying in India, and greater mobility to students in India visit, study at, transfer credits to, or carry out research at institutions abroad, and vice versa. India will be promoted as a global study destination providing premium education at affordable costs An International Students Office at each HEI hosting foreign students will be set up to coordinate all matters relating to welcoming and supporting students arriving from abroad.
- Plenty of opportunities for participation in sports, culture/arts clubs, eco-clubs, activity clubs, community service projects, etc. In every education institution, there shall be counselling systems for handling stress and emotional adjustments. Increasing hostel facilities as needed. All HEIs will ensure quality medical facilities for all students in their institutions.

Thus the NEP seeks to transform learners into truly global citizens", new content needs to be developed keeping in mind the larger learning goals around environmental awareness, resource conservation and other global concerns. The policy appropriately lists down some of the critical challenges that lie ahead in implementation, including affordability and access to the internet and devices, teacher readiness for using blended learning tools and the massive task of continuous and effective online examinations. NEP 2020 is expected to be a milestone in the history of the education system in India. It will provide the much needed tectonic shift in the pedagogical structure emphasising experiential and practical learning that will instill 21st century skill in children.

Dr. Sarika Bindal
Assistant Professor,
Department of Commerce

Women Empowerment

As we all know, India is a male dominated nation where males are powerful in all areas and females are required to be solely responsible for family care and live at home.

Indian culture gives women the utmost respect.

Many of our gods and female and they have been worshipped as a duty by many faithful people.

The goddess of wealth is Laxmi, the goddess of power and strength is Durga and the goddess of wisdom is Saraswati.

Women are the epitome of wealth and power. Women play an important role in society and the whole family is dependent on women for it's daily activities. They play the role of mother, wife, home maker, cook, teacher, friend, nurse all at the same time while catering to everybody's need. The women who are in job have to also fulfill the job responsibilities while managing home and family. The life of women is very hard but she gets little or no appreciation at all.

There are a lot of women who are extremely talented and multi takser but have no recognition in society.

One of the major hindrances in the growth and advancement of women is gender inequality. This means that we treat males and females unequally even for the same task. As divorce is still a taboo in Indian society many women are suffering from abusive marriages.

As they are not empowered, they fear to stand up for their right. As females were given poor education or no education they are not able to get good jobs. Thus the males always the bread earner of the family.

India is called as Bharat Mata right ? Not Bharat Pita then how an earth did India become the fourth most dangerous place for women to reside ?

Data speaks for itself. Today over 131 million school aged girls are still out of school. Young women aged 15 – 29 are more than three times as likely as young men to not be in employment, education or training.

Women are leaders every where you look. From the CEO who runs a fortune 500 company to the housewife who raised the children and heads her household. It is in our power to change the stereotyped social norms that prevent today's women from improving themselves in education, sports, arts & science and turning into tommorow's powerful and influential women. "A strong society can only be formed when the power of women is unleashed" so we as citizens of India have to change our mindset and support women empowerment by helping the women in our lives, gain power in the household and in the society. As a girl and women in the society you have to empower yourself by becoming independent and present your power in all aspects of life Let us make our country's women empowered in all walks of life.

Women are also facing lack of nutritious food, negligence to medicine proper check up, lack of educational opportunities, forced marriages, abuse of girl child, rape, forced and unwanted pregnancies, bride – burning, wife –

battering and lot more.

Throughout India cases of young girl going missing are continuously reported. These girls are supposedly lured on the pretext of earning money and sent to other states & subsequently forced into prostitution.

Indian society is male dominated society where women don't have rights to make major decision related to family. Moreover researches revealed that men believes women in the family must be beaten from time to time. Why ?

According to National Women's Commission there has been a rise in violence against women in 2021. The reported cases has been increased by 46% and we all are aware of the fact that many of the cases goes unreported.

30% of women experience are physical abuse. The country records a rape case every 20 minute. Every 4 minute a girl is subjecte to domestic violence. There is one dawry death in 78th one act of torture every 12 minute and almost one in every three women experienced domestic violence.

Data speaks for itself.

Why do we celebrate Women's Day ?

It was during 1908 that there was an ongoing critical debate amongst women regarding their oppression and inequality.

The campaign for change started to become more vocal when 15000 women marched through New York City demanding shorter hours better pays as well as voting rights.

Later 8 March was accepted globally as the day to celebrate International Women's Day. Theme for this 'International Women's Day' is, 'Stop Violence aganins Women'.

Women in the Indian society have always been considered as the things of enjoyment from ancient.

They have been victims of the humiliation, exploitation & torture by the men.

The continuous practice of the dowry system in the society proves that the violence against women can never end. At the time of marriage if the bride do not bring adequate dowry she would really be at high risk of maltreatment after marriage.

What should be done to mitigate the crimes committed against women ?

Women herself have to become self independent 181 Women Helpline is a 24 hour confidential service for women.

112 Mobile App is a part of Emergency Response Support System. In an emergency situation a women in distress may seek for the assistance of local emergency service delivery departments & volunteers.

Women have to speak for themselves.

As a girl and a women in the society you have to empower yourself by becoming independent and present your power in all aspects of life.

Let us make our country a better place for women. I look forward to such a nation.

Keep shining.

Rosie and Clytemnestra : Struggle against Patriarchy

According to the Cambridge online dictionary, Patriarchy is defined as, "a society in which the oldest male is the leader of the family or a society controlled by men in which they use their power to their advantage."

As the definition suggest male is center to rule and women have no voice of their own.

Narayan Portrays the town of Malgudi as a typical Indian society where men are considered superior to men and women sub jugated.

The society of Greece is also patriarchal from the periods of the 'Bronze Age' to the classical. And it is true that in the world of Aschylus play Agamemnon, women are considered bath physically and emotionally weak in comparison to men in the play.

But I found Clytemnestra from 'Agamemnon' and Rosie from 'The Guide' both are ambitious and somewhere struggling from established norms of patriarchy.

On one hand Greek men wanted women to be passive and servile. And on other hand Indian society forcefully presented definition of a respected women.

Rosie married to Marco but it was not her choice but her mother wants it. Marco married to Rosie because he needed a well educated wife not a soulmate.

Agamemnon killed Clytemnestra's husband and she has to marry him.

Both the women are masculine and powerful in their characters. They attempted to use politics for their purpose. Clytemnestra killed Agamemnon to take revenge of her daughter. She has no regret on her deed, instead she freely admits the murder and embraces the power and authority. It is through inversion of traditional roles, adopting masculine speech, behaviour and activities. With Rosie, dancing is not a respectable profession in Indian society. But she is ambitious, she does not care for traditional norms of virtues and chastity. She starts illicit relationship only to fulfill her dreams.

So on the whole, both the women Clytemnestra and Rosie want to break ties from their feet. They are ambitious. They did what they want.

"All birds find shelter during a rain. But eagle avoids rain by flying above the clouds.
Problems are common, but attitude make the difference."
Dr. A.P.J. Abdul Kalam Aazad

Shehla
English Department

Life After Pandemic and its Impact on Education

COVID is a once in a lifetime time event. It locked everyone in their houses and has brought many lifestyle changes. Some of them are fitness, digital mode of payment, social distancing, medical facilities, etc.

Everyone's day to day life was affected walk from home, home deliveries, online education, were some of the outcomes of the event. Impact on education was unmeasurable.

In the initial phase school were in total lockdown and this deprived the young minds of their valuable time. They lag behind in their studies. Later, online medium of education was promoted & used to impact education.

This was new for teachers, students and the families. This greaty achieved the idea in reaching out to students through online classes. But yet again, only helpful to those who had access to smartphones and laptops.

There is a major population still residing in villages and remote areas. Some of them come to school for mid – day hud programe. They were deprived of education via online mode.

It the end, I would like to conclude by saying that, online education was very helpful in reaching to students and now have opened various new avenues in this area.

Commerce Student

Commerce Ke Student Agar Film Banaye to Filmo ke naam Kya Honge –

1. Kabhi debit Kabhi credit.
2. Hum accounts ke diwane hai.
3. Hum profit pe marte hai.
4. Hum tax de chuke Sanam.
5. Hamara Calculator aapke pass hai.
6. C.A. Kia to darna Kya.
7. Commerce se accha kon hai.
8. I Hate Mathematics.
9. Rab ne miladi balance sheet.

Srushti
B.Com Ist Year

QUALITY OF A GOOD TEACHER

1) Develops self-confidence in students.
(2) Encourages students, never criticizes.
(3) Inspires the students.
(4) Impartial to all the students.
(5) Promotes all - round development of Students.
(6) Imparts moral values and values of life.
(7) prepares himself/ herself for each class-hour.
(8) Incorporates good communication skills and discipline.
(9) Takes the responsibilities as a teacher and guide.
(10) Develops good Interpersonal relationship.
(11) Develops patriotism.

Zeba Tyagi
B.Ed 2nd year

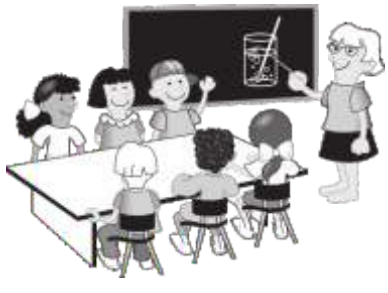

Woman

If you choose a working
woman. you have to
accept that she cannot
manage the time house full time.
If you choose a housewife
who can take care of
and manage the
household completely, you
need to accept that she
does not make money.
If you choose a submissive
woman, you must
accept that she depends on you.
If you choose to be with a
brave woman, you
must accept that she is
stubborn and has her
own thoughts.
If you choose a beautiful
woman, you have to
accept the expenses as well.
If you choose to be with a
great woman, you
must also accept that she is
Hard and Firm.
No woman is perfect.
A woman has her own
"Good things that defines
who she is that makes her Unique.

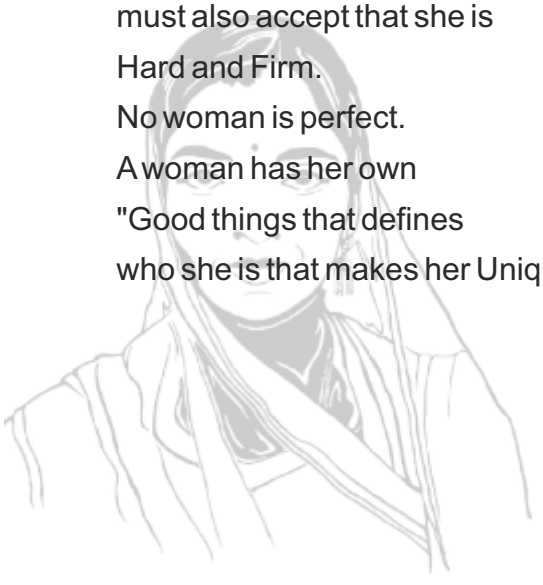

Learn to think Logically

Think

The ability to think critically and accurately requires a lot of personal leadership. It is not something that can be imposed on you by others and requires you to be very self disciplined.

Feel

You need to direct and monitor yourself and when your preconceived ideas and opinions are forover to be misinformed by the process of self evaluation, you need to be prepared to correct yourself instead of hanging on to your old biased views. At times it will be hard but what it will do is take you on a road to self improvement and instil a rigorous standard of excellence in your life.

Do

When evaluating an article, keep the following questions in mind :-

1. What is the main purpose of the article ?
2. What is the key question that the author is addressing ?
3. What is the most important information ?
4. What are the main conclusion ?
5. What are the key concepts or ideas the author is trying to convey in the article ?
6. Do they make any assumptions and are the justified?
7. What are the main implications of following the author's reasoning ?
8. What are the main implications of not following the author's reasoning ?
9. What are the main points presented ?

Learning to reason logically and succinctly will set you apart in your approach to everything you do not do and take you can on the road to self improvement that will prevent you from making many costly mistakes. Whole careers and companies have been destroyed because people did not reason logically and arrived at answers or solutions which were completely at adds with what was actually required clarity in thinking give clarity in respons that is logical, objective and unbiased. It will, more often than not, point to the right decision. In addition, don't crowd your Judgement with emotions.

Vanshika
B.A. Ist Year

Struggle in life will make you stronger

"Once upon a time, a man found a butterfly that was starting to hatch from its cocoon. He sat down and watched the butterfly for hours as it struggled to force itself through a tiny hole. Then, it suddenly stopped making progress and looked like it was stuck.

Therefore, the man decided to help the butterfly out. He took a pair of scissors and cut off the remaining bit of the cocoon. The butterfly then emerged easily, although it had a swollen body and small, shriveled wings.

The man thought nothing of it, and he sat there waiting for the wings to enlarge to support the butterfly. However, that never happened. The butterfly spent the rest of its life unable to fly, crawling around with small wings and a swollen body. Despite the man's kind heart, he didn't understand that the restricting cocoon and the struggle needed by the butterfly to get itself through the small hole were God's way of forcing fluid from the body of the butterfly into its wings to prepare itself for flying once it was free."

Nitika Gupta

B.Ed - 2nd Year

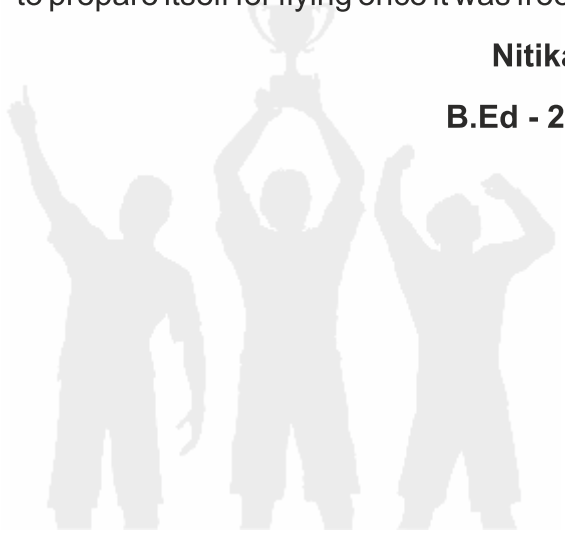

SAVE GIRL CHILD

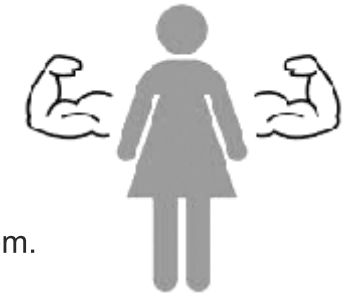

For saving girl child the government has taken many initiatives and launched many campaigns to save them. BETI BACHAO, BETI PADHAO (Save the girl child) is the most recent initiative started by the government to actively encourage people to save the girl.

Apart from that, many NGOs, campaigns, corporate groups, human rights commission run various campaigns to save girl child.

The crime against women is a big better to the development and growth of the country. However the government takes this problem seriously and for stopping female infanticide they have banned the sex determination ultrasound, amniocentesis and scan tests in the hospitals and labs. The government takes all three steps/aware society that girls are a gift of God and not a burden. For saving girl the first step starts with our home. We should encourage our family members, friends and relatives to save them. Also we should cheer our family members to have a girl child rather than a boy. A girl child deserves a life where she is treated as equal to boy. And she should be loved and respected like others. Besides she works hard for the betterment of society and country. Hence they deserve to survive as their survival means the existence of the human race.

Riya Jain

B.Ed - I st year.

EXHIBITION

N.S.S. ACTIVITIES

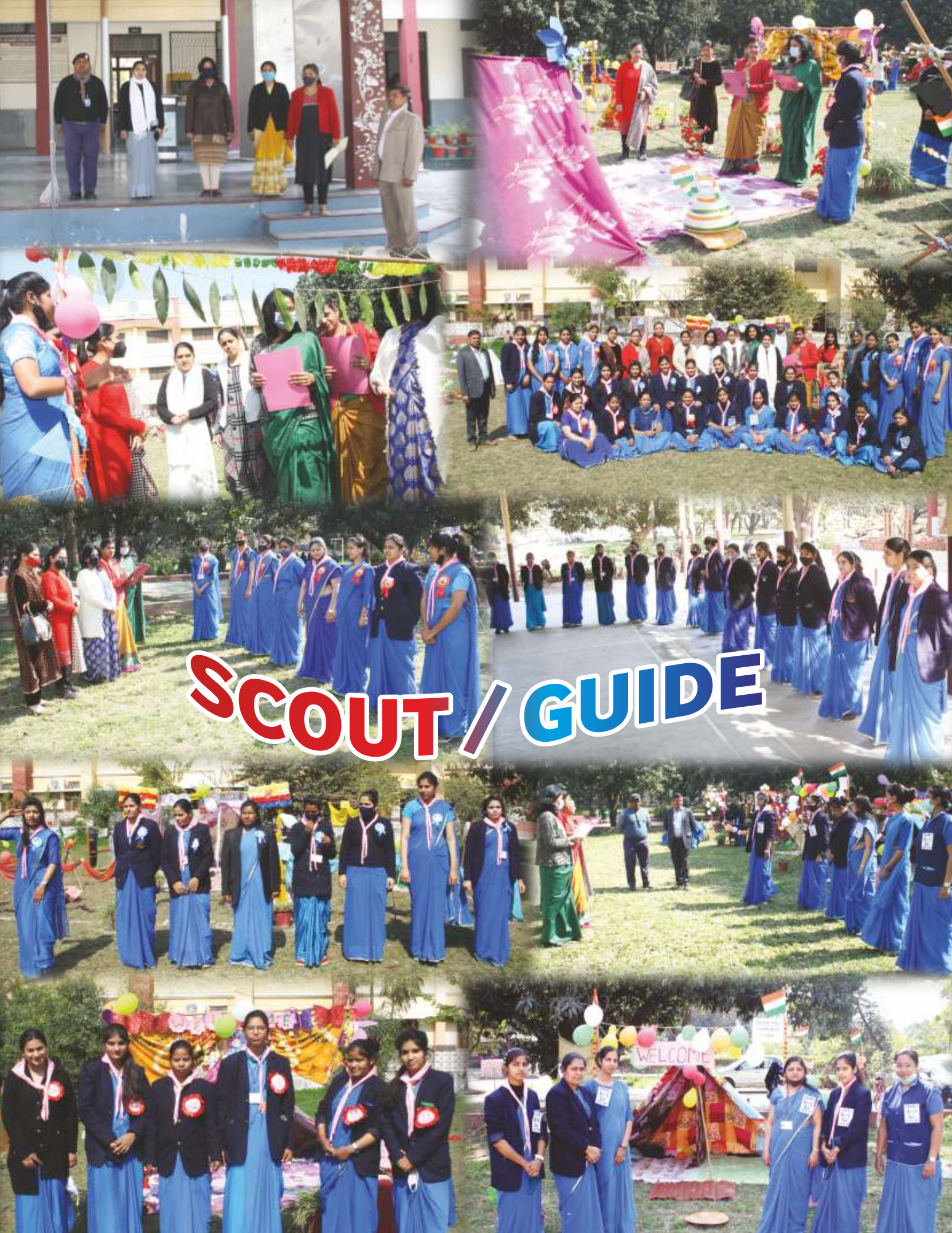
SCOUT / GUIDE
WELCOME

Prize-Distribution

Inspection for B.Com and M.A

Merry Christmas

MEDIA

बापू को किया प्रणाम और शास्त्री को नमन

संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में गांधी जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्राएं। संवाद

प्रतियोगिता के दौरान मौजूद छात्राएं व शिक्षक। • सौ. कॉलेज

प्रतियोगिता में छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा

सरधना : सेंट जोसेफ गर्ल्स डिग्री कालेज में बुधवार को अमृत महोत्सव के अंतर्गत फिट इंडिया फ्रीडम रन के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना व खेल विभाग के बैनर तले बन डी स्लाट बेनिंग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डा. विदुषी ने फिट इंडिया फ्रीडम के बारे में छात्राओं को बताया। ... डा. विदुषी त्यागी, मनु सिरोही, डा. सारिका, नीतू मौजूद रहीं। –संवाद

हिन्दुस्तान 05

शिक्षक दिवस पर रंगारंग कार्यक्रम

बच्चों के विकास में शिक्षकों अभिभावकों की भूमिका अहम

न्यूज कैप्सूल

डॉ. क्रिस्टीना को मिला विदुषी सम्मान

विदुषी सम्मान से सम्मानित प्राचार्य डॉ. क्रिस्टीना। संवाद

सरधना

प्रदर्शनी में छात्राओं ने सजाई सुंदर वस्तुएं

संत जोजफ्स में मनाया आजादी का अमृत महोत्सव

सरधना। संत जोजफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में शनिवार को आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया। ... प्रधानाचार्य सिस्टर क्रिस्टीना ने सभी का आभार जताया। ...

संत जोसफ्स कॉलेज में मेधावी छात्राओं को किया सम्मानित

वार्षिकोत्सव में दी सांस्कृतिक प्रस्तुति

स्टूडेंट काउंसिल के सदस्यों ने ग्रहण की शपथ

सेंट जोसेफ गर्ल्स डिग्री कालेज में छात्रा को सम्मानित करतीं प्राचार्य। • सौ. कालेज

छात्राओं को किया सम्मानित

जागरण संवाददाता, सरधना : सेंट जोसेफ गर्ल्स डिग्री कालेज में बीकाम अंतिम वर्ष की छात्राओं को सम्मानित किया गया। डा. महेश ने बताया कि चौधरी चरण सिंह विवि ने बीकाम अंतिम वर्ष का परीक्षा-परिणाम घोषित कर दिया है। सोमवार को कालेज की प्राचार्य डा. सिस्टर ...

तीन शिक्षिकाओं को दी गई भावपूर्ण विदाई

दैनिक जागरण

हैंडबाल टीम को किया सम्मानित

हैंडबाल में संत जोजफ रहा द्वितीय

city # हम लोग

गरिमा हेडगर्ल और नंदनी वाइस हेडगर्ल बनीं

युवा जागरण

विजेता टीम को किया सम्मानित

लोगों से की वोट डालने की अपील

हिन्दुस्तान 06

शिक्षकों ने रखे गांधी जी की विचारधारा पर विचार

विदाई समारोह में मिस संत जोसफ्स बनीं सारिका

सरधना के संत जोसफ्स कॉलेज में आयोजित विदाई समारोह में शामिल छात्राएं। संवाद

सरधना। संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में शनिवार को बीए, बीएड, एमए और बीकॉम फाइनल की छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि सिस्टर डॉ. मैल्बा, सिस्टर प्रोफेसर क्रिस्टीना ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सुंदर पोशाक में 65 छात्राओं ने कैटवॉक किया। इस मौके पर सारिका मिस संत जोसफ्स, नम्रता रनर अप, सना द्वितीय और गरिमा चौधरी ऑल राउंडर घोषित हुईं। संचालन अमरीन और उमरा ने किया। डॉ. मित्तल ने विदाई पत्र पढ़ा। डॉ. शुचि प्रकाश और मिस कविता ने मंच निर्देशित किया। कार्यक्रम में डॉ. अंजलि मित्तल, डॉ. बीना, सिस्टर पूनम, नम्रता चौहान, गरिमा चौधरी, सारिका भाटिया, डॉ. राजेश्वरी, शहला अंसारी, डॉ. सुषमा और डॉ. विदुषी, महेश पातीवाल, मनु सिरोही, मोनिका शर्मा आदि रहीं। संवाद

गोष्ठी: हिंदी हमारी मां, अंग्रेजी है जरूरत

विजेताओं को मिला पुरस्कार

संक्षेप

सरधना में स्काउट गाइड कैंप के समापन पर मौजूद छात्राएं-शिक्षिकाएं।

छात्राओं ने तंबुओं का गांव सजाया

सरधना। संत जोजफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में चल रहे तीन दिवसीय स्काउट-गाइड कैंप का शनिवार को समापन हो गया। छात्राओं ने कॉलेज परिसर में तंबुओं का गांव सजाया। प्रधानाचार्य सिस्टर डॉ. क्रिस्टीना ने फीता काटकर समापन कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उसके बाद उन्होंने पत्कुटी निर्मित गांव का निरीक्षण किया। प्रशिक्षक सोनू कुमार ने छात्राओं को ध्वज पहचान, अनुशासन, स्काउट गाइड की संपूर्ण जानकारी और प्रशिक्षण दिया। विशिष्ट समन्वयक राजेन्द्र सिंह प्रोफेसर रहे। निर्णायक में डॉ. विदुषी, डॉ. सारिका, नीतू रहीं। डॉ. निमिषा, मोनिका शर्मा, विभागाध्यक्ष नीरु सिंह, विशिष्ट अतिथि डॉ. अंजलि मित्तल, डॉ. शुचि प्रकाश, कविता, अंजलीना, शिवानी, पूजा शर्मा, मनु सिरोही आदि रहीं।

MEDIA

सरधना में सिस्टर क्रिस्टीना का स्वागत करता कालेज स्टाफ। • हिन्दुस्तान

डॉ. सिस्टर क्रिस्टीना को विदुषी सम्मान

सरधना। संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज की प्रधानाचार्या प्रो. सिस्टर क्रिस्टीना को सुभारती यूनिवर्सिटी द्वारा विशिष्ट अतिथि बनाकर 'विदुषी सम्मान' से सम्मानित किया गया। कालेज में स्टॉफ व छात्राओं ने उनका स्वागत कर उन्हें बधाई दी। इस मौके पर डॉ. विदुषी, डॉ. सुषमा, डॉ. महेश पालीवाल, डॉ. राहत, अंजलीना, ज्योति, रेखा मौजूद रहीं।

टैबलेट और स्मार्टफोन बांटे

सरधना के सेंट जोजफ्स डिग्री कॉलेज में टैबलेट व स्मार्टफोन पाने वाली छात्राएं। संवाद

सरधना के एसएस पीजी कॉलेज में टैबलेट के साथ छात्राएं। संवाद

विदाई समारोह में मिस संत जोसफ्स बनीं सारिका

सरधना के संत जोसफ्स कॉलेज में आयोजित विदाई समारोह में शामिल छात्राएं। संवाद

सरधना। संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में शनिवार को बीए, बीएड, एमए और बीकॉम फाइनल की छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि सिस्टर डॉ. मैत्थ्यू, सिस्टर ... क्रिस्टीना ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सुंदर मंजालक में 65 छात्राओं ने कैटवॉक किया। इस मौके पर सारिका मिस संत जोसफ्स, ... द्वितीय और ... चौधरी ... घोषित हुई। संचालन ... और ... ने किया। डॉ. मित्तल ने विदाई पत्र पढ़ा। डॉ. शुचि प्रकाश और ... ने मंच निर्देशित किया। कार्यक्रम में डॉ. अंजलि मित्तल, डॉ. ..., सिस्टर पूनम, ... चौहान, ... चौधरी, ... भाटिया, डॉ. राजेश्वरी, ... अंसारी, डॉ. सुषमा और डॉ. विदुषी, महेश पालीवाल, मधु त्रिवेदी, मोनिका शर्मा आदि रहीं। संवाद

रैली से जनसंख्या नियंत्रण का संदेश

शिविर

स्काउट एवं गाइड ने शर्बत बांटा

स्काउट गाइड शिविर का समापन

संत जोसफ्स डिग्री कॉलेज के शिविर में शामिल स्वयं सेविकाएं। संवाद

सरधना। संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में शनिवार को तीन दिवसीय स्काउट गाइड शिविर का समापन हुआ। कार्यक्रम में प्राचार्य सिस्टर क्रिस्टीना ने स्काउट टीमों द्वारा बनाए गए पटकुटी निर्मित कैंप का निरीक्षण किया। शिविर में प्रशिक्षक सोनू कुमार ने ध्वज फहराना, अनुशासन आदि की जानकारी दी। शिविर समन्वयक प्रो. राजेन्द्र सिंह रहे। निर्णायक मंडल में डॉ. विदुषी, डॉ. सारिका, नीतू शामिल रहीं। डॉ. शुचि प्रकाश ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. अंजलि मित्तल, डॉ. निमिषा, मोनिका शर्मा और विभागाध्यक्ष नीरु सिंह का सहयोग रहा। संवाद

बुधवार को संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में सेमिनार का आयोजन हुआ।

शिक्षिकाओं को दिए अध्यापन के टिप्स

सरधना। संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में बुधवार को आईक्यूएसी विभाग द्वारा सेमिनार हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. पवन शर्मा, ... आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ ... विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस दौरान शिक्षिकाओं को अध्यापन के टिप्स दिए। प्रधानाचार्य सिस्टर क्रिस्टीना ने स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका आभार जताया। डॉ. अंजलि मित्तल, डॉ. ...

संविधान दिवस पर स्कूलों में हुआ कार्यक्रम, संविधान की दी जानकारी, प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा

छात्रों को दिलाई संविधान के पालन की शपथ

आयोजन

बैंक परीक्षा की तैयारी के बारे में दी जानकारी

सरधना। संत जोसेफ गर्ल्स डिग्री कॉलेज में मंगलवार को व्याख्यान कार्यक्रम हुआ। कोऑर्डिनेटर डा. विदुषी त्यागी के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता निहारिका (मैनेजर केनरा बैंक सरधना) व शशांक (असिस्टेंट मैनेजर केनरा बैंक सरधना) रहे। जिन्होंने छात्राओं को स्नातक एवं स्नातकोत्तर के बाद बैंक ... डा. ...

हिन्दुस्तान सरधना

संत जोजफ्स में मना डीना फीस्ट

स्काउट गाइड शिविर का समापन

संत जोसफ्स डिग्री कॉलेज के शिविर में शामिल स्वयं सेविकाएं। संवाद

सरधना। संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में शनिवार को तीन दिवसीय स्काउट गाइड शिविर का समापन हुआ। कार्यक्रम में प्राचार्य सिस्टर क्रिस्टीना ने स्काउट टीमों द्वारा बनाए गए पटकुटी निर्मित कैंप का निरीक्षण किया। शिविर में प्रशिक्षक सोनू कुमार ने ध्वज

दैनिक जागरण सरधना जागरण

पर्यावरण संरक्षण के लिए किया जागरूक

...क्षा की तैयारी के बारे में दी जानकारी

बुधवार • 06.10.2021

अमर उजाला 06 my city

...पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई

नेता का बेटा था, इसलिए नहीं की कार्रवाई

संत जोजफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में नाटक का मंचन, रैली भी निकाली

बुधवार को संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में सेमिनार का आयोजन हुआ।

शिक्षिकाओं को दिए अध्यापन के टिप्स

सरधना। संत जोसफ्स गर्ल्स पीजी कॉलेज में बुधवार को आईक्यूएसी विभाग द्वारा सेमिनार हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. पवन शर्मा, ... आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ ... विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस दौरान शिक्षिकाओं को अध्यापन के टिप्स दिए। प्रधानाचार्य सिस्टर क्रिस्टीना ने स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका आभार जताया। डॉ. अंजलि मित्तल, डॉ. सुषमा, डॉ. निमिषा आदि रहे।

LIFE IS NOT THE WAY...

Life is not the way it supposed to be.

It's the way it is. The way you survive with it is what makes the difference.

I have come to adopt a positive life stance because I believe it gives me the best chance to succeed.

While putting me in the best position to help others succeed. I came to develop this mindset by way of the following thinking.

Life is filled with good and bad for everyone, some of the good and bad nobody can control it that's life.

Some of the good and bad will find me,

If I have a positive life style, the good and bad will become better. If I have a negative style the good and bad will become worse.

You cannot control much of what happens to you in life. However, you can control your attitude and behaviour for other's. And you can choose to dominate your circumstances and decline the negative experiences to undermine who you are and what you believe. And you can be resolved to find something positive to learn in the face of tragedy .

If you want to maintain a positive life STYLE, you put yourself in the best position to manage bad experiences and turn them into positive growth. Therefore, I choose a positive life STYLE !!!!

Sacunda Soreng

B.Ed 1st Year

Why Me?

If you have to ask WHY ME?
When you're feeling really blue,
When the world has turned against you
And you don't know what to do,
When it pours colossal raindrops
And the road's a winding mess,
And you're feeling more confused
Then you ever could express,
When the saddened sun won't shine,
When the stars will not align,
When you'd rather be
Inside your bed,
The covers pulled
Above your head,
When life is something
That you dread
And you have to ask WHY ME?.....
Then when the world seems right and turn,
When rain has left a gentle dew,
When you feel happy begin you,
Please ask yourself WHY ME? then too.

Namrita Chauhan

B.Ed - 2nd year

WHY?

Why have we come to this world? Why has God created this world? It's very difficult to answer this question, but the answer to these questions is this story. This is the story of a rich man and his son.

Once upon a time, there was a very rich man. He had everything. He was a very big businessman, so he had a lot of money, houses, cars, offices and servants etc. He forced his son to join the office. His son went to the office with an unwanted mind to obey his father's orders. When he reached the office, he couldn't find his father in the office, He started saying in his mind that, "Where has the father gone", he sat on the chair saying this. While sitting on the chair, his eyes went to the newspaper kept there. The headline on that newspaper was 'A rich man adopted a child.' He saw that the rich man was none other than his father, and that he was the child who was adopted. He was shocked and surprised to see this. He eagerly waited for his father. When his father came back to the office, he showed the newspaper to his father and asked - "Is it true or not?" Then his father said - "Yes it is true." He asked his father -

"When you were so rich, you didn't lack anything, then why did you adopt me?" Listen carefully, what a beautiful answer his father gave. And this answer is also the answer of the question - 'Why God create this world?' His father said -

"I had everything. And whatever I had was the best, but I didn't have anyone to whom I could give it all. My wealth, my love and my most precious things, that's why I adopted you."

Shain
M.A.- IVth Sem
English

As he passed me by

As he passed me by My heart sank.
His eyes spoke What words can't.
Language was no barrier
We gulfed in each other's story.
As I looked into his eyes
I got lost in their depth
There was pain, laugh, and tears so wet.
I can count on fingers
It was hardly five seconds
Which made my soul shake
What was boon to him for me was bane
And then every other eye looked the same.
We went on again
The same routine walked down the same lane
I rode my bike so light
And He pulled the rickshaw with all his might
I don't know why I still sit again
Flashing those eyes disturb my brain
I don't know him yet I do
That's what I think humanity does to you.

Taniya Moudgil

FIND YOUR PASSION

"Discover you. Find your passion, life purpose, and take action".

"you can do anything as long as you have the passion, the drive, the support." - Sabrina

Find fulfilling and meaningful activities :

Take a few minutes to think about all of the regular activities that you already participate in and write them down.

This could include things like your hobbies, your work duties, or anything else that makes you happy. Pay attention to activities that make you lose track of time since that usually means you're enjoying them.

*Keep in mind aspects of your career that you find rewarding as well.

*Think about the jobs you loved and hated the most so you recognize what career to go after and which paths to avoid.

*If you're looking for your career passion, think about your daily duties that bring you the most joy.

Consider your talents :

"Passion is energy. Feel the power that comes from focusing on what excites you."

If you'r naturally good at something or worked to develop a skill set, it may be a clue that you're actually passionate about it. Brainstorm the things that you're talented in, such as photography, public speaking, or plying an instrument. Even if you don't think you have a talent, pay attention to when others compliment you on something even when you don't think it's good. You may not have noticed that you're even more talented than you think.

Narrow down your interest :

Now that you've listed that things you're interested in, chose the ones that feel the most important to you right now.while you can always come back to other interests later, the ones that you're most excited about are usually going to be the things that you're the most passionate for.

Look for common themes in your interests :

While not all of your interests will align perfectly, they may be connected by a deeper passion you may nat have noticed at first. Consider the book you enjoy reading, hobbies that excite you, and thus you spend time have any similarities. Are they all about a specific subject or do they could help point you toward what you're truly passion about.

Be enthusiastic about everything you do :

It can be really easy to feel pessimistic when you need to complete an activity you're dreading, but that will only put you in a negative mindset. Even when you're doing something you don't enjoy, approach it as a learning opportunity with an open mind. You'll never know if you,ll discover something that you're passionate about if you don't have enthusiasm.

"nothing as important as passion. no matter what you want to do whit your life, be passionate."

Invest time into your interests :

While you may say you're passionate about something, you won't feel that burning desire unless you set time aside to develop those interests.

*finding your passion is a great is a step, but if it will take time for it to develop even further. *Try to find a class or coach related to your passion so you have to hold you accountable for it.

Don't limit yourself if you enjoy something :

It can be really easy to get into a comfortable place, but that could prevent you from developing your passion even further if there are new experiences you want to try, break out of your zone and continue to learn. try saying "yes" to things more have't tried before so you can push yourself.

"If you can't figure out your purpose, figure out your passion. For your passion will lead you right in to your purpose."

Ifrah Fatima
B.A III Year

The impact of Social Media on Student Life

Today's world is a global village. Everyone is connected to another in this vast network generated by the internet. In the past, the communicating and free sharing of thoughts among peoples were restricted by long distance, nationality and/or religion. But now, even these barriers cannot stop the flow of information and knowledge. The new world of social networking allows free sharing of thoughts. Online social networks are created by website such as Facebook, which has emerged as a giant in this social world. So how do these networks affect our education? How do they influence the lives of students?

Human are social animal. We always like to remain in some group or another, and we prefer to follow what this group does.

All of our traditions and cultures are the products of this group oriented facet of human nature. A well known American psychologist, Abraham Maslow, stated in his "Theory of Motivation" that the social need of human beings is the third most important requirement after our physical and safety needs - the third tier in this hierarchy of needs. Even our self-esteem comes after this social dependence. This is the main reasons billions of people use social networking to stay connected, make friend and satisfy their social needs. Today's college student time on Facebook, twitter, Instagram etc it shows how much the students community is involved in this virtual world of social networking.

Actually, many reasons exist that explain why students love to spend time socialising like social network provide them the freedom to do whatever they want -to upload what they want and talk to whom they. They like to make new friends and comment on the lives of different people.

The most important things in a student's life are studying, learning good habits and gaining knowledge to become a person with moral characters but research show that students who spend too much time on social media can suffer from poor sleep, eyes fatigue, negative body image depression, anxiety, cyber bulling and more considering all of the above pros and cons, it is necessary for student should develop the cognitive and intuitive ability to analyse how much time they want to spend on social media, what really matters in their life and how much of this virtual life translate to real life.

Dreams

I wish I could be a cook,

Turning the pages of my recipe book,

Thinking and making food,

And eating half of it according to my mood.

I wish I could be a builder Building houses and flats for others,

And as far as I can concerned,

I shall build a magnificent palace.

I wish I could be a textile designer,

I'd design fabulous clothes for others,

Which could also be worm by me and my mother,

But alas, these are but dreams.

Alas dreams.....

Sacunda Soreng

B.Ed 1st Year

Books And Reading

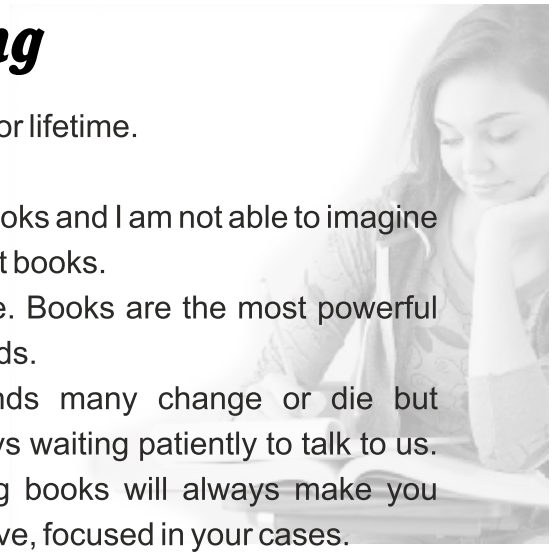

Happy is the man who acquires the habbit of reading when he is young. He has secured a life long source of pleasure, instruction and inspiration.

Books are the mystery of human creativity when a person is with a book he never feels lonely.

Books are the manual of life. Books share our pain and guide us to lead the future with confidence. Books play an important role in our life.

Without books life is impossible.

Ruskin calls books "kings treasuries."

Treasuries filled not with gold and silver and precious stories but with more valuable that these knowledge noble thoughts and high ideals.

Books explore the creativity and clarity in students and everyone's minds Reading gives the highest kind of pleasure. Some books we simply read for pleasure and amusement e.g. Good novels. as if you lost your friend.

"Learning gives creativity – creativity leads to thinking – thinking provides knowledge – knowledge makes you great."

A.P. J. Abdul Kalam

There are many books in history, biography, philosophy, religion, travel and science which we ought to read and which will not only give us pleasure but education and we can develop a taste for serious reading.

Poetry gives us noble thoughts and beautiful imaginations clothes on lovely and musical language.

Books are the teaching tools for teaching tools for teacher.

Library is a sea for lifetime.

Learners.

I love reading books and I am not able to imagine the world without books.

Books never die. Books are the most powerful and faithful friends.

Our friends many change or die but books are always waiting patiently to talk to us. Habit of reading books will always make you energetic, positive, focused in your cases.

When you read a book and turn the last page then you feel.

Teachers

Paint their minds
and guide their thoughts
Share their achievements
and advise their faults
Inspire a Love
of knowledge and truth
As you ligh the path
Which leads our youth.
For our future brightens
with each lesson you teach
Each smile you lengthen
Each goal you help reach.
For the dawn of each poet
each philosopher and king
Begins with a Teacher
And the wisdom they bring

Shuaiba Qureshi
B.A. IIIrd Year

2021–2022
महाविद्यालय कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ
''प्रगति रिपोर्ट''

15–8–22 प्रोफेसर सिस्टर क्रिस्टीना लूईस द्वारा ''स्वतंत्रता दिवस'' पर ध्वजारोहण।

2–9–22 ''दायित्व–निर्वहन'' बैठक अध्यक्षता सि. डॉ. क्रिस्टीना एवं स्टाफ, नये स्टाफ डॉ. राजेश्वरी, शिवानी, अंजलीना और शीना का स्वागत।

4–9–22 ''सिस्टर डीना बैलंगर फीस्ट'' मनाया गया। वे बच्चों में ईश्वर देखती थी।

6–9–22 ''टीचर्स डे'' कॉलिज परिसर में मना सि० डॉ. मैंल्बा, सि० डॉ. बीना, प्राचार्या प्रोफेसर सि. क्रिस्टीना द्वारा दीप प्रज्वलित किया। डॉ. अंजलि मित्तल और डॉ. विदुषी त्यागी को सी.सी. एस., मेरठ द्वारा पुरस्कृत सम्मानित किया गया।

9–9–22 ''सुलेख प्रतियोगिता'' 110 छात्राओं की प्रतिभागिता रही–डॉ. महेश पालीवाल द्वारा सम्पन्न कराई गई। डॉ. राजेश्वरी का सहयोग, खुशबू, बुशरा और समरीन विजयी।

10–9–22 ''श्रुत लेख प्रतियोगिता'' अध्यक्षता– सिस्टर प्राचार्या प्रो. क्रिस्टीना, डॉ. विदुषी का सहयोग। टीना प्रताप सिंह, हिमांशी और सोफिया अव्वल।

13–9–22 ''हिन्दी दिवस'' की पूर्व संध्या पर चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के हिन्दी विभाग में–कु. रेखा सोम और मोनी बंसल को 11000/= रुपये और 7500/= रुपये के नगद पुरस्कार और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया गोल्ड मेडल, रजत पदक प्राप्ति पर। श्री सुरेन्द्र सिंह, आई.ए.एस. कमिश्नर, मेरठ की उपस्थिति में।

14–9–22 ''भूख बनाम धर्म :'' नुक्कड़ नाटक आई.एम.एस. ब्रदर्स, सरधना द्वारा मंचित मुख्य अतिथि : फादर पपुन वैलेरियन आई.एम.एस., ''मेरी अभिलाषा'' नाटक बी.एड. द्वारा चेयरपर्सन प्रोफेसर सिस्टर क्रिस्टीना लूईस द्वारा रेखा गोल्ड मेडलिस्ट हिन्दी को सम्मानित किया गया।

23–9–21 ''स्टूडेण्ड काऊंसिल'' चुनाव प्रभारी डॉ. अंजलि मित्तल की देख रेख में सम्पन्न। निगरानी, अध्यक्षता सिस्टर प्राचार्या प्रोफेसर क्रिस्टीना ने की। गरिमा अध्यक्षता, मंच संचालन–डॉ. महेश पालीवाल।

24–9–21 ''एन.एस.एस. स्थापना शिविर''–डॉ. अंजलि मित्तल, डॉ. कविता कार्यक्रमाधिकारी दोनों यूनिट के सन्निध्य में, प्रेरणा स्रोत सिस्टर प्राचार्या का संदेश–'विपरीत परिस्थितियों में आगे बढ़ते रहना।' नाटिका प्रदर्शन, गीत गायन सेविकाओं द्वारा

25–9–21 ''विदाई समरोह''–डॉ. महिमा शर्मा, डॉ. मीनाक्षी अग्रवाल और डॉ. पूनम को भावपूर्ण–स्मृति पत्र, प्रतीक चिह्न, विदाई–पत्र प्रदान किये गये।

29–9–21 ''फिट इण्डिया फ्रीडम रन'' अमृत महोत्सव मनु सिरोही खेल कोच का निर्देशन में।

1–10–21 ''गांधी जयन्ती'' पूर्व संध्या प्रोग्राम डॉ. विदुषी त्यागी, डॉ. कविता के निर्देश में।

5–10–21 ''स्टूडेण्ट काऊंसिल'' फादर नीलेश आई.एम.एस., डॉ. मूलचंद गुप्ता की उपस्थिति में छात्राओं ने दायित्व ग्रहण किया। गरिमा, नीहारिका, नम्रता और सारिका ने दीप जलाया।

7–10–21 ''खेल में स्वर्ण पदक'' 100 मीटर दौड़ आयोजन ''जिला एथेलेटिक्स संघ'' में 'कशिश तालियान' बी.ए. द्वितीय वर्ष (16.04 सेकेण्ड) ने जीता 'मनु स्पोर्टस क्लब' की ओर से खेली।

7–10–21 ''गोला फेंक में रजत'' नन्दिनी को ; तुलसी शर्मा को 3000 मीटर दौड़ में कांस्य पदक मिला।

9–10–21 ''संगोष्ठी'' महिला सशक्तिकरण, समाज शास्त्र विभाग–''गांधी जी के विचार और दर्शन''।

11–10–21 ''हैण्ड बॉल में उपविजेता'' तरुण कुमार स्मृति टूर्नामेण्ट, मुजफ्फरनगर में कोच मनु।

12–10–21 ''बजटरी नियंत्रण'' संगोष्ठी–वाणिज्य, अर्थ शास्त्र और गृह विज्ञान द्वारा आयोजन।

21–10–21 ''सिम्पोजियम'' इतिहास संकाय एम.ए. द्वारा सफल डॉ. राजेश्वरी निर्देशित।

27–10–21 ''दीपावली प्रदर्शिनी''–उद्घाटनकर्ता सिस्टर प्राचार्या डॉ. क्रिस्टीना चार स्कूल कॉलिज विद्यार्थियों का भ्रमण ''हस्त कौशल हाट'' सजाया गया।

30–10–21 ''राष्ट्रीय एकता दिवस'' एन.एस.एस. द्वारा सम्पन्न।

30–10–21 ''सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार वक्ता'' इल्मा खान ने ''कलात्मक प्रतिभा सम्मान'', सुएबा ने प्रथम स्थान मण्डी समिति, सरधना में ''दीपावली मेले'' में जीता।

11–11–21 ''पर्यावरण रैली'' एन.एस.एस. शिविर स्लोगन, पोस्टर और बैनर प्रतियोगिता। पर्यावरण संरक्षण प्रतियोगिता में पायल प्रथम, हीना द्वितीय वेदांशी तृतीय रहीं

21–11–21 ''मतदाता जागरुकता रैली'' तहसीलदार नटवर सिंह ने महत्व पर प्रकाश डाला। नाटक खेला छात्राओं ने ''नेता का बेटा था, इसलिए नहीं की कार्यवाही''। फा. मैकनरो।

26–11–21 ''संविधान दिवस'' क्विज डॉ. अंजलित मित्तल द्वारा मंच संचालन।

27–11–21 ''आजादी अमृत महोत्सव''–डॉ. मूलचन्द गुप्ता, फादर नीलेश, फा. पपुन वैलेरियन अम्बुज प्रकाश। अध्यक्षता–सिस्टर प्रोफेसर क्रिस्टीना लूईस प्राचार्या द्वारा।

29–11–21 ''पकवान प्रतियोगिता'' शाही पनीर, कटलेट, पिज्जा पराँठा, चिल्ला मूँगदाल, सलाद, दाल बड़ा, मिस ज्योति, रंजना सिंह निर्देशिका। निर्णायक डॉ. अंजलि, डॉ. राजेश्वरी, डॉ. निमिषा, डॉ. कविता।

1–12–21 ''विश्व एड्स दिवस''–रु.से.यो. इकाई एक–दो डॉ. विदुषी, डॉ. कविता निर्देशित।

4–12–21 ''साईबर क्राईम'' प्रबल कुमार, सब इन्स्पैक्टर, मुख्यवक्ता 155260 टोल फ्री नम्बर ''कॉमर्स संकाय'' आयोजक।

14–12–21 ''टाई एण्ड डाई'' सात दिवसीय कला एवं कौशल–ब्लू पौटरी, क्ले वर्क, जूट पेंटिंग, स्ट्रिपिंग।

17–12–21 ''वाद–विवाद'' प्रतियोगिता गुलफ्शा प्रथम, आमरीन द्वितीय, गुनगुन तृतीय निर्णायक : डॉ. सारिका, मिस नीतू, मोनिका शर्मा

22–12–21 ''गोल्ड मेडल'' हिन्दी एम.ए. में निशा सोम को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ राजनीति विज्ञान एम.ए. शालू कश्यप भी चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा।

16–12–21 ''राज्य स्तर पर हैण्ड बॉल टीम'' का चयन जिला स्पोर्ट्स सचिव द्वारा।

17–2–21 ''स्काउट एण्ड गाईड'' शिविर सम्पन्न प्रशिक्षक सोनू कुमार निर्देशित पटकुटी (त्रि दिवसीय) तम्बू निर्माण, निरीक्षणकर्ता प्रोफेसर सिस्टर क्रिस्टीना प्राचार्या।

24–2–22 ''करियर काउंसिल''–डॉ. विदुषी संचालक, वक्ता–राजेन्द्र सिंह बी.एड., डॉ. महेश पालीवाल विषय : कम्प्यूटर शिक्षा, इंग्लिश स्पीकिंग, साक्षात्कार कला, अध्यक्षता : प्रचार्या।

24–2–22 ''नॉर्थ जॉन इण्टर यूनिवर्सिटी हैण्ड बॉल (वुमन) : खालसा कॉलिज, पटियाला में सपना भूनी और बुखरा का चयन हुआ। ट्रैक सूट, किट, शूज, प्राईज मनी 2500/= रुपये प्रमाण पत्र मेरठ विश्वविद्यालय से छात्राओं को दिया गया।

28–2–21 ''एन.एस.एस. शिविर'' श्रम दान, जागरुकता रैली, भाटवाड़ा, उत्सावर्धक–सिस्टर प्रोफेसर क्रिस्टीना लूईस द्वारा।

2–3–22 ''छात्र संघ समिति'' के समक्ष छात्राओं ने अपनी समस्याएँ रखीं–जल्द समाधान का आश्वासन पदाधिकारियों द्वारा दिया गया।

8–3–22 ''अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस'' चेयरपर्सन : प्रथम नागरिक, सरधना, सबीला अंसारी साहिबा, सरधना। सि. डॉ. लीजा, सि. डॉ. मैल्बा।

9–3–22 ''अभिभावक शिक्षक संघ'' पर नाटक, गायन, नृत्य, भाषण और कविता आयोजित अभिभावकों की ओर से छात्राओं विषयक समस्या समाधान तत्काल किये जाने का सि. प्राचार्या निर्णय।

12–3–22 ''विदुषी सम्मान'' प्राचार्या प्रोफेसर सि. क्रिस्टीना लूईस को सुभारती यूनिवर्सिटी ने सम्मानित किया। ''विशिष्ट अतिथि'' कर बुलाया।

14–3–22 ''पैरेन्ट्स मीटिंग'' एन.ई.पी. की विस्तृत जानकारी दी डॉ. अंजलि मित्तल ने, सि. प्राचार्या डॉ. क्रिस्टीना ने स्वागत आभार व्यक्त किया आगन्तुकों का।

22–3–22 ''करियर एण्ड फ्यूचर स्कोप'' विषय पर श्रीमती निहारिका प्रबन्धक केनरा बैंक, सरधना ने व्याख्यान दिया। डॉ. अंजलि मित्तल, डॉ. विदुषी, डॉ. सारिका, डॉ. सुषमा और प्राचार्या सिस्टर प्रोफेसर क्रिस्टीना की अध्यक्षता में सम्पन्न।

25–3–22 ''एन.एस.एस. शिविर'' में परिचय, ध्येय गीत, साप्ताहिक कैम्प का आगाज। शुभारम्भ–सिस्टर प्रचार्या डॉ. क्रिस्टीना द्वारा प्रवक्ता डॉ. अंजलि मित्तल।

26–3–22 ''योगासन'' श्री रेवती शरण जी योगाचार्य द्वारा, जल संरक्षण डॉ. निमिषा, नाटक 'नशा मुक्ति' अक्षर ज्ञान कराया भाटवाड़ा बच्चों को।

28–3–22 ''सी.एच.सी. एवं कृपाओं की माता अस्पताल'' मरीजों का हाल जाना स्वयं सेविकाओं ने। डॉ. विदुषी, डॉ. कविता, इन्चार्ज एन.एस.एस. द्वारा नेतृत्व।

29–3–22 ''ब्लड ग्रुप टेस्ट'' कैम्प–डॉ. फहीम, टीम द्वारा उपनिरीक्षक, रेखा रानी ने महिला सुरक्षा पर व्याख्यान दिया।

31–3–22 ''एन.एस.एस. समापन शिविर''–श्री सूरज पटेल, आई.ए.एस. (ए.डी.एम.) ज्वॉईन्ट मजिस्ट्रेट, सरधना मुख्यवक्ता रहे। पेड़ बचाओ लघु नाटिका, महिला सशक्तिकरण। फादर जॉन मैकनरो विशिष्ट अतिथि।

4–4–22 ''पोस्टर प्रतियोगिता'' इतिहास–अंग्रेजी विभाग द्वारा शहला अंसारी डॉ. राजेश्वरी।

8–4–22 ''वार्षिक पुरस्कार वितरण'' समारोह मंच संचालन डॉ. निमिषा, मंच नीरु स्टूडेन्ट काउंसिल, वाद–विवाद प्रतियोगिता, स्पोर्ट्स प्रतियोगिता, हिन्दी सप्ताह, योग, कम्प्यूटर, पत्रकारिता, पाक कला, स्काउट गाईड आदि की विजयी छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

9–4–22 ''विदाई–समारोह'' बी.ए., बी. कॉम और एम.ए. फाइनल वर्ष सारिका मिस संत जोसफ, नम्रता रनर अप, सना रनर अप द्वितीय, गरिमा ऑल राउण्डर। चीफ गेस्ट–सि. मैल्बा।

11–4–22 ''सेनिटरी पैड वेंडिंग मशीन'' द्वारा आनन्द हॉस्पिटल, मेरठ, मंच संचालन, मोनिका, डॉ. अमृशी, अजीत मोतला, मधुलिका बंसल, मुख्यवक्ता, डॉ. महेश सोम, अध्यक्षता–प्रोफेसर सिस्टर प्राचार्या क्रिस्टीना लूईस।

13–4–22 ''आन्तरिक गुणवत्ता विभाग''–प्रोफेसर पवन शर्मा मुख्यवक्ता राजनीति विज्ञान विभाग सी.सी. एस. यूनिवर्सिटी, मेरठ। सिस्टर प्राचार्य अध्यक्षता की।

19–5–22 ''स्मार्ट फोन, टैबलेट वितरण'' समारोह आर.आई.एल.ई. धर्मेन्द्र भारद्वाज मुख्य अतिथि रहे।

21–5–22 ''एक दिवसीय योग शिविर'' एन.एस.एस. डॉ. विदुषी, डॉ. कविता।

15–6–22 ''होटल मैनेजमेन्ट कोर्स'' सनराईज रेस्टोरेन्ट, गंग नहर, नानू। वक्ता विकास शर्मा मैनेजमेन्ट।

डॉ० महेश पालीवाल
हिन्दी संकाय

Farewell Final Year Students

Teachers Farewell

The Great India Place
PICNIC
Enlive Art
Ice Cube